अवेस्ता व्याकरण

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

डॉ० शारदा चतुर्वेदी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अवेस्ता-व्याकरण

लेखिका
डॉ० शारदा चतुर्वेदी
एम० ए०, (अंग्रेजी, संस्कृत, भाषा-विज्ञान)
प्राध्यापक
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

संस्करण 2005

शारदा पुस्तक भवन
11 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद-2

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक ''अवेस्ता-व्याकरण'' में अवेस्ता भाषा के व्याकरण का विस्तृत विवेचन किया गया है। अवेस्ता भाषा को हिन्दी में प्रस्तुत करने का यह प्रथम प्रयास है। इस पुस्तक में अवेस्ता के शब्दों का अन्य भारोपीय भाषा परिवार के शब्दों के साथ तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में अवेस्ता के दोनों स्तर गाथिक अवेस्ता एवं यंगर (परवर्ती) अवेस्ता का अलग-अलग विवरण दिया गया है। दोनों में क्या भिन्नताएँ हैं, यह भी दर्शाया गया है। गाथिक अवेस्ता एवं यंगर (परवर्ती) अवेस्ता की विशेषताओं को देखते हुए यह मालूम पड़ता है कि गाथा अवेस्ता की बोलियाँ परवर्ती अवेस्ता से प्राचीन हैं। लेकिन उन दोनों में उतनी अधिक भिन्नता नहीं है जितना कि वैदिक संस्कृत और साहित्यिक संस्कृत (Classical Sanskrit) में अथवा होमर प्रयुक्त ग्रीक एवं ग्रीक की एटिक बोली में मिलती है। अवेस्ता की यह दोनों बोलियाँ एक या दो शताब्दी के अन्तराल में उत्पन्न परिवर्तनों के साथ एक ही भाषा को प्रस्तुत करती हैं। अतः गाथा बोली सामान्य (परवर्ती) अवेस्ता से केवल एक या दो शताब्दी पूर्व की है, जो कि प्राचीन ईरानी राज्य की प्रामाणिक भाषा थी। ईरानी भाषाओं की बोलियों एवं उनके विकास-काल के विषय में हम लोगों का ज्ञान इतना सीमित है कि उनका समय निर्धारण सन्तोषजनक रूप में करना कठिन-सा प्रतीत होता है। इन दोनों बोलियों में हमें ध्वन्यात्मक एवं व्याकरणिक दोनों तरह के अन्तर मिलते हैं। जैसा कि इस पुस्तक में दिखाया गया है। वैसे अवेस्ता भाषा वैदिक संस्कृत के बहुत निकट है, यथा—अवे० केरेन ओमि 'मैं बनाता हूँ' वैदिक सं० कृणोमि, साहित्यिक सं० करोमि; अवे० जमइति 'वह जाता है' वैदिक सं० गमति, साहित्यिक सं० गच्छति; अवे० गेरेवनामि 'मैं लेता हूँ' वैदिक सं० गृभ्णामि, साहित्यिक सं० गृह्णामि। उपर्युक्त उदाहरणों में अवेस्ता एवं वैदिक संस्कृत के सान्निध्य का पता चलता है जबकि साहित्यिक संस्कृत उससे अलग है।

१८वीं शती के भाषा वेत्ताओं ने ग्रीक, लैटिन संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन करके यह निकाला कि इन तीनों भाषाओं में पारस्परिक समानता है किन्तु वे यह दर्शाने में असमर्थ रहे कि लैटिन से संस्कृत, अवेस्ता आदि भाषाएँ निकली हैं या संस्कृत, अवेस्ता से लैटिन भाषा निकली है। अतः इन सभी भाषाओं का अध्ययन करने के बाद उन्होंने एक ऐसी भाषा की परिकल्पना की जिससे कि समस्त भाषाओं का विकास माना जा सकता है। उस भाषा को इन भाषा वेत्ताओं ने भारोपीय नाम दिया। पुस्तक में भारोपीय शब्द को काल्पनिक चिह्न (*) से चिह्नित नहीं किया गया है क्योंकि इसकी काल्पनिकता सभी लोगों को स्फुट है। (इसी प्रकार

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हिन्द-ईरानी भाषा को भी काल्पनिक चिह्न (*) से चिह्नित नहीं किया गया है।) वैसे संस्कृत अवेस्ता, ग्रीक भाषाओं में बहनों जैसा साम्य पाया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में कहीं-कहीं देवनागरी लिपि के साथ-साथ कोष्ठ में उस शब्द को रोमन लिपि में भी रखा गया है। ऐसा मात्र शब्द के स्पष्टीकरण के लिए किया गया है। कहीं-कहीं ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर के भेद को बताने के लिए भी किया गया है। जैसे भारोपीय ह्रस्व ए (e) एवं दीर्घ ए (e)। यहाँ दीर्घ ए एवं ह्रस्व ए देवनागरी लिपि में एक से हैं। परन्तु दीर्घ ए एवं (e) एवं ह्रस्व ए (e) का भेद दिखाने के लिए दीर्घ ए (e) के नीचे एक लाइन दी गई है और उस शब्द के आगे कोष्ठ में रोमन लिपि में भी दीर्घ e, e इत्यादि को दिखाया गया है। इस प्रकार जहाँ-जहाँ दीर्घ-ह्रस्व का भेद देवनागरो लिपि के द्वारा स्पष्ट नहीं हो पाया है वहाँ दीर्घ को, कोष्ठ में रोमन लिपि के द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार भारोपीय कण्ठ्य वर्ग में तालव्य वर्ग (Palatal Series) को इस प्रकार लिखा गया है— के, खे, गे, घे, (यथा भारो० केव्र > अवे० च, सं० च, भारो० यगैतै > हि० ई० यजतै > अवे० यजइते, तु० सं० जयते इत्यादि)।

इस पुस्तक की रचना के प्रसङ्ग में अपने गुरू डॉ० सत्यस्वरूप मिश्रा विभागाध्यक्ष, भाषा-विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे इस विषय की जानकारी दी। प्रो० महाप्रभु लाल गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, (संप्रति मेरे गुरू) के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ, जिनके प्रेरणा एवं परामर्श से यह ग्रन्थ लिखा गया। साथ-साथ पूज्यनीया माँ का भी पूरा सहयोग रहा जिससे ग्रन्थ लेखन काल में किसी तरह की कोई बाधा न हुई। और अन्त में मैं अपने छोटे भाइयों प्रकाश चतुर्वेदी एवं सतीश चतुर्वेदी को धन्यवाद देना न भूलूँगी क्योंकि इन्हीं के सहयोग से यह ग्रन्थ शीघ्र प्रकाश में आया।

मैं प्रकाशनाधिकारी श्री जायसवाल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद को भी धन्यवाद प्रदर्शित करती हूँ जिन्होंने प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में रुचि ली।

वाराणसी
१४ जनवरी १९८३
मकर संक्रान्ति

शारदा चतुर्वेदी

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पुस्तक में प्रयुक्त शब्दों के संक्षिप्त रूप

अवे०	अवेस्ता
आ० अंग्रे०	आधुनिक अंग्रेजी
आ० फा०	आधुनिक फारसी
आयो०	आयोनिक
ऋग०	ऋगवेद
एक व०	एक वचन
गा० अवे०	गाथिक (गाथा) अवेस्ता
गॉथ०	गॉथिक
ग्री०	ग्रीक
च०	चतुर्थी
तु०	तुलना करो
तृ०	तृतीया
द्वि०	द्वितीया
नपुं०	नपुंसक लिंग
पं०	पंचमी
पुंलि	पुंलिग
प्र०	प्रथमा
प्रा० अंग्रे०	प्राचीन अंग्रेंजी
प्रा० ई०	प्राचीन ईरानी
प्रा० फा०	प्राचीन फारसी
भारो०	भारोपीय
यंग० अवे०	यंगर (परवर्ती) अवेस्ता
लिथु०	लिथुआनियन
लै०	लैटिन
व० व०	बहु वचन
वै०	वैदिक
ष०	षष्ठी
स०	सप्तमी
सं०	संस्कृत
संबो०	संबोधन
सर्व०	सर्वनाम

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

स्त्री०	स्त्रीलिंग
हिट्टा०	हिट्टाइट
हि० ई०	हिन्द ईरानी
>	(अमुक भाषा से अमुक भाषा में अमुक शब्द) हो जाता है ।
<	(अमुक भाषा में अमुक से भाषा अमुक शब्द) आया है ।
√	धातु चिह्न
*	काल्पनिक शब्द का चिह्न

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

विषय-सूची

संकेत-सूची — पृष्ठ i-ii

प्रथम अध्याय

- प्रस्तावना — २
- हिन्द ईरानी शाखा — २
- प्राचीन भारतीय आर्य शाखा — ३
- प्राचीन ईरानी शाखा — ५
- प्राचीन फारसी — ६
- अवेस्ता — ८
- गाथिक और यंगर (परवर्ती) अवेस्ता — ९

द्वितीय अध्याय

- ध्वनि-विज्ञान (स्वर)
- अवेस्ता भाषा में भारोपीय स्वर — १०
- भारोपीय स्वर — १०
- हिन्द ईरानी स्वर — १०
- अवेस्ता भाषा के स्वर — ११
- भारोपीय अ, ए, ओ — १२
- भारोपीय आ, ए, ओ (दीर्घ) — १३
- भारोपीय अँ — १५
- भारोपीय इ — १५
- भारोपीय ई — १५
- भारोपीय उ — १६
- भारोपीय ऊ — १६
- भारोपीय ऋ, लृ — १७
- भारोपीय ॠ, ॡ — १८
- भारोपीय म̥, न̥ — १८
- भारोपीय मा̥, ना̥ — १९
- भारोपीय अउ, एइ, ओइ — १९
- भारोपीय आ, एउ, ओइ — २०
- भारोपीय आइ, एइ, ओइ — २०
- भारोपीय आउ, एउ, ओउ — २१

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	पृष्ठ
तृतीय अध्याय	
अवेस्ता में स्वर-परिवर्तन	२२
अपनिहिति	२२
आदि स्वरागम	२२
विप्रकर्ष	२३
अन्त्यस्वरागम	२३
अपश्रुति	२३
चतुर्थ अध्याय	
ध्वनि-विज्ञान (व्यञ्जन)	२५
भारोपीय व्यञ्जन	२५
हिन्द ईरानी व्यञ्जन	२५
अवेस्ता भाषा के व्यञ्जन	२६
अवेस्ता-व्यञ्जन की विशेषताएँ	२६
पंचम अध्याय	
भारोपीय कण्ठ्यवर्ग अवेस्ता भाषा में	२८
भारोपीय के > अवेस्ता स्	२८
भारोपीय क् > अवेस्ता थ्	२९
भारोपीय क्व् > अवेस्ता श्व्	२९
भारोपीय क्स् > अवेस्ता श्	२९
हिन्द ईरानी प्स् > अवेस्ता फश्	२९
भारोपीय ख् > अवेस्ता स्	२९
भारोपीय स्क् (ख्) > अवेस्ता स्	२९
भारोपीय क्स्क् > अवेस्ता स्	२९
भारोपीय ग् > अवेस्ता ज्	२९
भारोपीय ग्न् > अवेस्ता श्न्	३०
भारोपीय घ् > अवेस्ता ज्	३०
भारोपीय क्/क्व् > अवेस्ता क्	३१
भारोपीय क्/क्व् > अवेस्ता च्	३१
भारोपीय क्/क्व् > अवेस्ता ख़्	३१
भारोपीय क्य्/क्व्य् > अवेस्ता श्य्	३२

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पृष्ठ
भारोपीय ख् > ख्व् > अवेस्ता ख़् ३२
भारोपीय ख्/ख्व्>अवेस्ता श् ३२
भारोपीय ख् > अवेस्ता क् ३२
भारोपीय ग्/ग्व् > अवेस्ता ग्/ग़् ३२
भारोपीय ग्/ग्व् > अवेस्ता ग्/ग़् ३२
भारोपीय ग्/ग्व् > अवेस्ता ग्/ग़् ३३
भारोपीय घ्/घ्व>अवेस्ता ग्/ग़् ३३
भारोपीय घ्/घ्व् > अवेस्ता ज्/ज़् ३४
षष्ठ अध्याय
अवेस्ता भाषा में भारोपीय दन्त्य एवं ओष्ठ्य वर्ग ३५
भारोपीय त् > अवेस्ता त्, थ़् ३५
भारोपीय त्स् > अवेस्ता स् ३५
भारोपीय त्स्त्>अवेस्ता स्त् ३५
हिन्द ईरानीत् और त्व्>अवेस्ता द़्, द्ध ३६
हिन्द-ईरानी र्त् > अवेस्ता श् ३६
भारोपीय त्/द्>अवेस्ता त् ३६
भारोपीय थ् > अवेस्ता थ़् ३६
भारोपीय स्थ्>अवेस्ता स्त् ३६
भारोपीय न्थ्>अवेस्ता न्त् ३७
भारोपीय द्>अवेस्ता द्/द़् ३७
भारोपीय द्>अवेस्ता द्/द़् ३७
भारोपीय द्ध् > अवेस्ता द्/द़्
भारोपीय ध्>अवेस्ता द्/द़् ३७
हिन्द ईरानी ध्न्>अवेस्ता न् ३८
हिन्द ईरानी ध्>अवेस्ता थ़् ३८
भारोपीय प्>अवेस्ता प् ३८
भारोपीय प्>अवेस्ता फ् ३८
भारोपीय फ् >अवेस्ता फ् ३८
भारोपीय फ्>अवेस्ता फ़् ३९
भारोपीय ब्>अवेस्ता ब् ३९
भारोपीय भ्>अवेस्ता ब् ३९
भारोपीय भ् >अवेस्ता फ् ३९
सप्तम अध्याय
अवेस्ता भाषा में भारोपीय अनुनासिक वर्ण ४०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	पृष्ठ
भारोपीय ङ् (ङ्व्)>अवेस्ता ङ्	४०
भारोपीय ङ् (ङ्व्)>अवेस्ता न्	४०
भारोपीय न्>अवेस्ता न्	४०
भारोपीय म्>अवेस्ता म्	४१
अष्टम अध्याय	
अवेस्ता भाषा में भारोपीय अर्द्धस्वर एवं स्वर	४२
भारोपीय य्>अवेस्ता य्	४२
हिन्द ईरानी य>अवेस्ता ए (अन्त में)	४२
हिन्द ईरानी इय्/ईय्>अवेस्ता य्	४२
हिन्द-ईरानी इयम्/ईयम्>अवेस्ता इम्/ईम्	४३
भारोपीय व्>अवेस्ता व्	४३
हिन्द-ईरानी उव्>अवेस्ता व्	४३
भारोपीय त्व्>अवेस्ता थ्.व्	४३
भारोपीय प्व्>अवेस्ता फ्	४३
भारोपीय क्व्>अवेस्ता स्प्	४४
भारोपीय स्वो>अवेस्ता ख्व	४४
प्राचीन ईरानी व्>अवेस्ता ओ	४४
भारोपीय र् और ल्>अवेस्ता र्	४४
अवेस्ता र्>ह्र्	४४
हिन्द-ईरानी व्र्>अवेस्ता उर्व्	४५
नवम् अध्याय	
अवेस्ता के ऊष्म वर्ण	४६
भारोपीय ऊष्म वर्ण स्>अवेस्ता स्	४६
हिन्द-ईरानी स्र्>अवेस्ता ङ्र्	४६
भारोपीय स्>अवेस्ता ह्	४६
भारोपीय स्>अवेस्ता ण्	४७
हिन्द-ईरानी शब्दान्त का अस् और आस्>अवेस्ता दीर्घ ओ और आओ	४७
भारोपीय थ्, द्>अवेस्ता स्, ज्	४८
दशम अध्याय	
रूप-विज्ञान	४९
विभक्ति-प्रत्यय	४९
प्रथमा विभक्ति एकवचन-पुंलिग-स्त्रीलिंग	४९
द्वितीया विभक्ति एकवचन-पुंलिग स्त्रीलिंग	५०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	पृष्ठ
प्रथमा-द्वितीया नपुंसकलिंग एकवचन	५१
तृतीया एकवचन	५१
चतुर्थी एकवचन	५१
पंचमी एकवचन	५१
षष्ठी एकवचन	५२
सप्तमीं एकवचन	५२
संबोधन एकवचन-पुलिंग-स्त्रीलिंग	५३
प्रथमा-द्वितीय-संबोधन द्विवचन-पुल्लिग-स्त्रीलिंग	५३
प्रथमा-द्वितीया-संबोधन द्विवचन नपुंसकलिंग	५३
तृतीया-चतुर्थी-पंचमी द्विवचन	५४
षष्ठी-सप्तमी द्विवचन	५४
प्रथमा एवं संबोधन बहुवचन-पुलिग-स्त्रीलिंग	५४
द्वितीया बहुवचन पुलिग-स्त्रीलिंग	५५
प्रथमा-द्वितीया-संबोधन नपुंसकलिंग बहुवचन	५६
तृतीया बहुवचन	५६
चतुर्थी-पंचमी बहुवचन	५६
षष्ठी बहुवचन	५७
सप्तमी बहुवचन	५७
एकादश अध्याय	
अवेस्ता स्वरान्त संज्ञा रूप	५८
अकारान्त संज्ञा रूप	५८
आकारान्त संज्ञा रूप	५९
इकारान्त संज्ञा रूप	६०
ऊकारान्त संज्ञा रूप	६१
रकारान्त संज्ञा रूप	६२
द्वादश अध्याय	
सर्वनाम शब्दों के रूप	६४
प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम	६४
द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनाम	६५
अवेस्ता के सर्वनामात्मक प्रत्यय	६६
अवेस्ता अयम् सर्वनाम	६७
निश्चयवाचक सर्वनाम	६८
प्रश्नवाचक सर्वनाम	७०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पृष्ठ

त्रयोदश अध्याय

संख्यावाची शब्द ७२

चतुर्दश अध्याय

क्रिया ७५
मूलकर्तृवाच्य के प्रत्यय ७६
मूलकर्मवाच्य के प्रत्यय ७७
द्वितीय कर्तृवाच्य के प्रत्यय ७८
द्वितीय कर्मवाच्य के प्रत्यय ७६
लिट्लकार के प्रत्यय ७६
कर्तृवाच्य ७६
कर्मवाच्य ८०
लोट्लकार के प्रत्यय ८०
कर्तृवाच्य ८०
कर्मवाच्य ८१

पञ्चदश अध्याय

लुङ्, लिट् भविष्यत् काल ८२
लुङ् ८२
लिट् ८३
भविष्यत् ८३

षोडश अध्याय

कृदन्त ८४
लट्-लुङ् कर्तृवाच्य कृदन्त ८४
लिट् कर्तृवाच्य ८४
लट्-लुङ्-लिट् कर्मवाच्य कृदन्त ८४
लङ् कृदन्त ८४
लृट् कृदन्त ८५

सप्तदश अध्याय

उपसर्ग ८६

अष्टादश अध्याय

क्रिया विशेषण ८८
निपात ८८

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १

प्रस्तावना

अवेस्ता भारोपीय भाषा परिवार की एक महत्वपूर्ण भाषा है। ऐतिहासिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुये अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी दोनों भाषायें प्राचीन ईरानी से उत्पन्न हुई हैं। प्राचीन ईरानी तथा प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (Old Indo Aryan) प्राचीन हिन्द ईरानी से व्युत्पन्न हैं। प्राचीन ईरानी भारोपीय भाषा परिवार के शतम् शाखा के अन्तर्गत आती है। अतः विभाजन का यह दृष्टिकोण निम्न तालिका से स्पष्ट किया जा रहा है—

भारोपीय भाषा परिवार

- सतम्
  - हिन्द ईरानी
    - भारत आर्यन्
      - (१) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (वैदिक एवं साहित्यिक संस्कृत)
      - (२) मध्य भारतीय आर्य भाषा (पाली, प्राकृत अपभ्रंश एवं अवहट्ट)
      - (३) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा हिन्दी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, मराठी इत्यादि)
    - ईरानियन
      - (१) अवेस्ता
      - (२) प्राचीन फारसी
  - बाल्टोस्लाविक
  - अल्बानियन
  - आर्मीनियन
- केन्टुम्

भारोपीय भाषा परिवार सम्पूर्ण विश्व के अधिकांश भागों में फैला हुआ है। आर्य भाषाओं की परस्पर तुलना करके उनको दो समूहों में बांटा जा सकता है—सतम् और केन्टुम्। सतम् भाषायें भारोपीय कण्ठ्य वर्णों को ऊष्म की तरह उच्चारित

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

करती हैं और केन्टुम् भाषायें उसे कण्ठ्य की तरह। सतम् वर्ग हिन्द-ईरानी, बाल्टो-स्लाविक, आर्मीनियन और अल्बानियन भाषाओं का प्रतिनिधि है। केन्टुम् वर्ग ग्रीक, हिट्टाइट, इटालिक, केल्टिक, जर्मनिक और तोखारियन भाषाओं का प्रतिनिधित्व करता है।

हिन्द-ईरानी शाखा

आर्य परिवार की यह शाखा कई कारणों से महत्वपूर्ण है। इसी में आर्य जाति का प्राचीनतम साहित्य मिलता है। अन्य शाखाओं में साहित्य-निर्माण बहुत बाद को शुरू हुआ। हिन्द-ईरानी शाखा भाषा के उस रूप को दर्शाती है जब भारत-आर्य और हिन्द-ईरानी दो स्वतन्त्र बोलियाँ नहीं थीं।

असुर शब्द का प्रयोग (अवे० अहुर, प्रा० फा० अ (ह) उर, सं० असुर) वेद में 'देवता' की जगह 'दैत्य' अर्थ में था जैसा कि अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी में है। दइव शब्द (अवे० दएव, प्रा० फा० दइव, सं० देव) का संस्कृत एवं अन्य भारोपीय भाषा में 'देव' अर्थ में तथा अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी में 'दैत्य' अर्थ में प्रयुक्त होना यह दर्शाता है कि एक समय हिन्द-ईरानी भाषा बोलने वाले लोगों ने आपस में एक दूसरे से झगड़ा कर लिया होगा जिसके फलस्वरूप दो उप-वर्ग हो गये : एक ईरानी और दूसरा भारतीय आर्य (Indo-Aryan)।

हिन्द-ईरानी शाखा में परस्पर कुछ ऐसे समान लक्षण हैं जिनके कारण हम इस शाखा की भाषाओं को अन्य आर्य भाषाओं से अलग कर सकते हैं—

(१) दोनों समुदायों में तीन मूल स्वरों की जगह एक अकार ही मिलता है।

(२) दोनों में उदासीन स्वर (अॅ (ə)) की जगह इकार है।

(३) अन्तः स्वर र् (ऋ), ल् (लृ) का हिन्द-ईरानी में अभेद मिलता है, कभी-कभी आदिम र् (ऋ) के स्थान पर ल् (लृ) यथा लैटिन रुन्करै सं० लुञ्चामि और कभी-कभी ल् (लृ) की जगह र् (ऋ) जैसे लै० लुपुस् ग्रीक लुकं, सं० वृकः अवे० वह्‌को। आदिम के ये दोनों अन्तःस्थ हि० ई० में एक रूप (र, ऋ) हो गये और बाद में जो ल् (लृ) मिलता है वह इसका परकालीन परिवर्तन है।

(४) इ, उ, र् और क् के बाद आने वाला स इस शाखा में श् हो गया और बाद में भारतीय आर्य में ष में बदल गया (सं० वक्ष्यामि, अवे० वख़्श्या, सं० ऊक्षा, गा० ओवस, सं० पितृषु, ग्री० पत्रसि, सं० स्नुषा, प्रा० अंग्रेजी स्नोरु।

(५) भारोपीय सघोष महाप्राण हिन्द-ईरानी में भी उसी रूप में स्थित है जैसे भारो० भ्रातेर् > हि० ई० भ्राता (तु० सं० भ्राता, अवे० ब्राता, प्रा० फा० ब्राता)।

(६) भारोपीय कण्ठ्य एवं कण्ठ्योष्ठ वर्ग का तालव्य स्वरों के पहले हिन्द-ईरानी में तालव्यीकरण हो जाता है।

(७) भारोपीय मात्रिक अपश्रुति हिन्द-ईरानी में अवस्थित है। पर गौण अक्षरावस्थान (Qualitative ablaut) हिन्द-ईरानी में अवस्थित नहीं है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection.

(८) भारोपीय म्, न् > हि० ई० अ।

(९) भारोपीय र्, ल् > हि० ई० र् (अवे०, प्रा० फा० र्, लेकिन सं० में र्, ल् होता है)।

(१०) आदिम के प्रथम श्रेणी के कण्ठ्य स्पर्श हिन्द-ईरानी में क्, ख्, ग्, घ् से श्, श्ह्, ज्, ज्ह् में परिणत हुये। बाद में ईरानी में ये स्, ज्, ज्ह् के रूप में मिलते हैं और भारतीय आर्य में श्, ज्, ह् के रूप में।

(११) भारोपीय सघोष महाप्राण + अघोष अल्पप्राण > हि० ई० सघोष अल्पप्राण + सघोष महाप्राण।

(१२) भारोपीय द्विवचन हिन्द-ईरानी में भी अवस्थित है।

(१३) भारोपीय आठों कारक हिन्द-ईरानी में भी पाये जाते हैं।

(१४) भारोपीय मध्यवाच्य हिन्द-ईरानी में भी अवस्थित है।

(१५) हिन्द-ईरानी भाषा में कुछ नए शब्दान्त प्रत्यय पाये जाते हैं।

(क) तृतीया एकवचन—ना प्रत्यय (स्वर प्रकृति के साथ),
—ई प्रत्यय (—इ प्रकृति के साथ)।

(ख) प्रथमा बहुवचन में दो प्रत्यय मिलते हैं—अस् और आसस्।
यथा देवाः, देवासः (—अ एवं—आ प्रकृति के साथ)।

(ग) तृ०—च०-पं० द्विवचन का भ्या (म्) प्रत्यय (∠शायद भारोपीय-भ्योम् से बना है अथवा नवीनीकरण है)।

(१६) हिन्द-ईरानी भाषा मे भी आगम (Augment) अवस्थित हैं।

(१७) भारोपीय काल एवं लकार हिन्द-ईरानी में भी पाये जाते हैं।

(१८) भारोपीय मध्य प्रत्यय (middle endings) ग्रीक की भाँति हिन्द-ईरानी में भी अवस्थित हैं।

(१९) हिन्द-ईरानी भाषा में एक विशेष कर्मणि—य प्रत्यय पाया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य शाखा

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा में मुख्य रूप से संस्कृत भाषा का नाम आता है। संस्कृत भारोपीय भाषा परिवार की सबसे महत्वपूर्ण भाषा है। अपनी सम्पूर्ण प्राचीन विशेषताओं के कारण, भारोपीय भाषा परिवार के किसी भी भाषा के ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिए संस्कृत की आवश्यकता पड़ती है। अवेस्ता की समुचित जानकारी के लिए भी यह भाषा अति आवश्यक है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के विकास के लिए मुख्यतः दो स्तर हैं—वैदिक संस्कृत और साहित्यिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत में ऋग्वेद संहिता की भाषा (२००० ईसा पूर्व) एवं अन्य संहितायें (अथर्व, साम एवं यजुः), ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् आते हैं। साहित्यिक संस्कृत महाकाव्यों से प्रारम्भ होती है जो कि भाषा वैज्ञानिक विशेषताओं से भरी हुई है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की कुछ विशेषतायें जो कि भारोपीय, हिन्द-ईरानी एवं प्राचीन ईरानी से भिन्न हैं, निम्नलिखित हैं—

(१) भारोपीय सघोष महाप्राण जो कि भारोपीय भाषाओं में से केवल हिन्द-ईरानी में ही अवस्थित है, वह हिन्द-ईरानी भाषाओं में से केवल संस्कृत में ही अवस्थित है। प्राचीन-ईरानी में भी वह अल्पप्राण हो गया है।

(२) संस्कृत में द्विवचन में स्वर वृद्धि अवस्थित है जबकि अवेस्ता में कभी रहती है और कभी नहीं रहती है।

(३) भारोपीय स्क (ह्) (> हि० ई० श्शहि) > सं० च्छ (प्रा० ई० स्)।

(४) भारोपीय ग् घ् > हि० ई० ज्, झ् > सं० ज्, ह्। अतः इस तरह से हि० ई० ज, झ् और ज़्, झ़् (ẑ, ẑh) की विभिन्नता संस्कृत में समाप्त हो गयी है। (प्रा० ई० में इसे ज् और ज़् (j, z) के रूप में पाते हैं)।

(५) संस्कृत में ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, मूर्धन्य ध्वनियाँ पायी जाती हैं जो हिन्द-ईरानी दन्त्य वर्ग से आई हैं। ये ध्वनियाँ न तो हिन्द-ईरानी में हैं और न भारोपीय भाषाओं में हैं।

(६) भारोपीय या हिन्द-ईरानी सघोष ऊष्म संस्कृत में नहीं पाये जाते हैं। (जब कि प्राचीन ईरानी में सघोष ऊष्म अवस्थित हैं)।

(७) संस्कृत में अन्तिम संयुक्ताक्षर नहीं होते यथा अवेस्ता वाख्श् : संस्कृत वाक् ∠ हि० ई० वाक्श्। (जबकि प्राचीन ईरानी में अन्तिम संयुक्ताक्षर मिलते हैं)।

(८) हिन्द-ईरानी सन्ध्यक्षर अइ, अउ, आइ, आउ संस्कृत में क्रमशः ए, ओ, ऐ, औ हो जाते हैं (जबकि प्राचीन ईरानी में ये इसी रूप में पाये जाते हैं (तु० प्रा० फा० अइ, अउ, आइ, आउ)।

(९) संस्कृत में यदि दो महाप्राण एक साथ आते हैं तो उनमें से एक अल्पप्राण हो जाता है। (पर प्रा० ई० में ऐसा नहीं होता है तु० अवे० खुम्ब = सं० कुम्भ ∠ हि० ई० खुम्भ)।

(१०) संस्कृत में स्वरों के बाद एवं कुछ परिस्थितियों में ऊष्म-वर्णों से पहले अनुस्वार होता है (यथा विंशति, मनांसि, विद्वांसः इत्यादि) जो ऐतिहासिक नहीं है।

(११) भारोपीय द्विवचन संस्कृत में सुरक्षित है और इसका प्रयोग किन्हीं भी दो वस्तुओं को बताने के लिये होता है।

(१२) भारोपीय एवं हिन्द-ईरानी आठों कारक संस्कृत में अवस्थित हैं (अवे० में भी हैं)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१३) संस्कृत में कुछ नये शब्दान्त प्रत्यय मिलते हैं।

(क) तृतीया एकवचन में--इन - —इना प्रत्यय (—अ प्रकृति के साथ यथा अश्ववेन - --ना);

चतुर्थी एकवचन में--आय (—अ प्रकृति के साथ यथा अश्वाय)

सप्तमी एकवचन--आम् (स्त्रीलिंग स्वर प्रकृति के साथ यथा देव्याम्)

(ख) द्वितीया बहुवचन में--न् प्रत्यय (पुल्लिग-र् प्रकृति के साथ यथा पितृन्, और—स् प्रत्यय स्त्री०—र् प्रकृति के साथ यथा मातृः);--नि प्रत्यय नपुं० स्वर प्रकृति के साथ आता है यथा युगानि)।

(ग) प्रथमा-द्वितीया द्विवचन--अउ • आ प्रत्यय (∠ हि० ई०—आ (उ)) यह व्यञ्जनान्त प्रकृति के साथ भी प्रयुक्त होता है।

(१४) भारोपीय स्वराघात (Accent) संस्कृत में सुरक्षित है।

(१५) भारोपीय एवं हिन्द-ईरानी सघोष ऊष्म संस्कृत में नहीं पाये जाते हैं।

प्राचीन ईरानी

प्राचीन ईरानी भाषा में अवेस्ता एवं प्राचीन फारसी आती है। अवेस्ता पूर्व ईरान की भाषा है, यह पारसियों का पवित्र धर्म-ग्रन्थ है जो अवेस्तन लिपि में लिखा गया है और प्राचीन फारसी पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम ईरान की भाषा है। यह कीलाक्षरों में, अखाइमेनियन शासकों के बारे में, उत्कीर्ण की गयी है। ये दोनों भाषायें, प्राचीन भारतीय आर्य भाषा की अपेक्षा अपनी बहुत सारी विशेषतायें रखती हैं। इसी से विशेष रूप से हिन्द-ईरानी एवं अवेस्ता के मध्य एक प्राचीन ईरानी भाषा स्तर को माना जाता है।

प्राचीन ईरानी भाषा की कुछ मुख्य विशेषतायें निम्नलिखित हैं :—

(१) हिन्द-ईरानी सन्ध्यक्षर अइ, अउ, आइ, आउ प्रा० ई० में भी इसी रूप में पाये जाते हैं; जबकि संस्कृत में ये ए, ओ, ऐ, औ हो गये हैं।

(२) हिन्द-ईरानी सघोष महाप्राण>प्रा० ई० अल्पप्राण, यथा भ्राता > ब्राता।

(३) हिन्द-ईरानी अघोष महाप्राण > प्रा० ई० ऊष्म (Spirants), यथा थ > थ़, फ>फ़ इत्यादि।

(४) हि० ई० अघोष अल्पप्राण भी कुछ व्यञ्जन गुच्छ में ऊष्म (Spirant) हो जाते हैं, यथा हि० ई० प्र>प्रा० ई० फ़्, अवे० फ़्।

(५) हि० ई० क्, त, प् बहुधा प्रा० ई० व्यञ्जन गुच्छ में ख़्, थ़्, फ़् हो जाते हैं। यथा हि० ई० शुक्र > अवे० सुख्र, प्रा० फा० थ़ुख़्र तु० सं० शुक्र; हि० ई० प्र >अवे० फ्रा, प्रा० फा० फ्रा तु० सं० प्र इत्यादि।

(६) हि० ई० च्य्>प्रा० ई० श्य् जबकि संस्कृत में च्य् ही है।

(७) हि० ई० र् (∠भारो० र्, ल्) >प्रा० ई० र् जबकि संस्कृत में इसका र्, ल् हो जाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(८) हि० ई० ष्>प्रा० ई० श्,

हि० ई० श्, ज्, झ्>प्रा० ई० स्, ज़्, ज़्।

(९) हि० ई० तस्त्(थ्)>प्रा० ई० स्त (अवे० एवं प्रा० फा० स्त्)।

(१०) हि० ई० द(ध्)ज्>प्रा० ई० ज़्ज़् (अवे० ज़्)।

(११) हि० ई० सघोष ऊष्म प्रा० ई० में भी हैं पर संस्कृत में नहीं हैं। यथा—हि० ई० ज़् झ़् (<भारो० ग्, घ्)>प्रा० ई० ज़् (z), सं० में ज्, ह् (j, h)।

(१२) हि० ई० स्>प्रा० ई० ह्, यथा,—
हि० ई० सत्य>प्रा० ई० हथ्.य>अवे० हइथ्.य, प्रा० फा० हशिय, तु० सं० सत्य।

(१३) हि० ई० श्श् (s̆ṣ̆) (<भारो० क्स्) और क्श् (ks̆ṣ) (<भारो० क्स् - क्व्स् (qs/qʷs) प्रा० ई० में अलग-अलग रूपों में मिलता है, पर संस्कृत में दोनों के स्थान पर क्ष् हो जाता है।

(१४) प्रा० ई० में आ परसर्ग का प्रयोग सप्तमी बहुवचन के साथ किया जाता है। यथा :—

अवे० ई० गएथाह्वा प्रा० फ़ा० दह्युशुवा, सं० दस्युषु।

(१५) प्रा० ई० में सर्वनामात्मक—अ प्रकृति के साथ तृतीया एकवचन में-ना प्रत्यय का प्रयोग होता हैं। यथा—

गा० अवे० अना, यंग० अवे० अन, कन, प्रा० फा० त्यना, अवना इत्यादि, तु० सं०-इन/इना, केन/केना, तेन/तेना इत्यादि।

(१६) प्रा० ई० में अइव-संख्या विशिष्ट है। यथा :—
अवे० अएव-, प्रा० फा० अइव; तु० सं० एक, लै० ऊनुस्।

(१७) हि० ई० पूर्वसर्ग अन प्रा० ई० में भी मिलता है। यथा—
अवे० अन, प्रा० फा० अन लेकिन सं० में यह लुप्त हो गया है।

(१८) प्रा० ई० में द्विवचनान्त प्रत्यय कम पाये जाते हैं।

(१९) प्रा० ई० में वर्तमान कृदन्ती मध्यवाच्य म्न प्रत्यय (निर्बल श्रेणी में) विशिष्ट है; तु० अवे० बरम्न और प्रा० फा० ख़शयम्न; ग्रीक में सबल श्रेणी का रूप मेनो मिलता है और संस्कृत में वृद्धि-श्रेणी-मान मिलता है।

प्राचीन फारसी—

प्राचीन फारसी ईरान के अख़ाइमेनियन राजाओं की कीलाक्षर लेखीय भाषा है। यह संस्कृत से बहुत समानता रखती है। इस भाषा की विशेषताएँ निम्न हैं—

(१) हि० ई० अइ, अउ, आइ, आउ, प्रा० फा० में इसी रूप में मिलते हैं पर अवेस्ता में इनमें कुछ ध्वन्यात्मक परिवर्तन हो जाता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(२) प्रा० फा०-म्,-र्,-श् के अतिरिक्त सभी अन्तिम व्यञ्जनों का लोप हो जाता है।

(३) हि० ई० त्र् > प्रा० ई० थ्र > प्रा० फा० स्र हो जाता है। यथा—

हि० ई० पुत्र > प्रा० ई० पुथ्र > प्रा० फ़ा० पुस्र, तु० अवे पुथ्र, सं० पुत्र०।

(४) हि० ई० श्, ज्, भ् > प्रा० फा० थ्, द्, द् (', δ, δ)। यथा—
सं० शत > प्रा० फा० थत

(५) हि० ई० श्व् > प्रा० फा० स्, अवे० स्प्, यथा—
हि० ई० अश्वस् > प्रा० फा० अस, अवे० अस्पो सं० अश्वः, लै० एकुस (equus), ग्री० हिप्पोस्।

(६) हि० ई० त्य् > प्रा० ई० थ्य > प्रा० फा० शिय्। यथा—

प्रा० फा० हशिय, तु० अवे० हइथ्य, सं० सत्य।

(७) प्रा० फा० में द्विवचन का प्रयोग बहुत ही कम होता है।

(८) चतुर्थी विभक्ति प्राचीन फारसी में पूर्णतः लुप्त है।

(९) आ-परसर्ग का प्रयोग सप्तमी एकवचन में होता है। यथा—
दस्तय्-आ, दहयुव-आ इत्यादि।

(१०) प्रा० फा० में तृतीया विभक्ति बहुवचन–आ प्रकृति का ऐह् (:) प्रत्यय-भिः प्रत्यय के द्वारा पूर्णरूप से स्थान्तरित हो गया है।

(१२) प्रथमा बहुवचन का प्रयोग अक्सर द्वितीया बहुवचन के लिए होता है।

(१३) प्राचीन फारसी में निश्चयवाचक सर्वनाम 'इयम्' का प्रयोग पुल्लिंग के अर्थ में होता है जब कि संस्कृत और अवेस्ता में इयम् स्त्रीलिंग के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

(१४) हि० ई० सर्वनाम स/त प्रा० फा० में हि० ई० स्य/त्यं के द्वारा स्थान्तरित हो जाता है।

(१५) प्राचीन फारसी में लङ्लकार के साथ आगम (augment) आवश्यक है (जिस प्रकार से साहित्यिक संस्कृत में है) लेकिन अवेस्ता और वैदिक संस्कृत में यह ऐच्छिक है।

(१६) क्रियार्थक भेद (Modal distinctions) मुख्य रूप से लट् लकार के साथ ही पाया जाता है जैसा कि साहित्यिक संस्कृत के साथ है।

(१७) लिट् लकार (Perfect Tense) भी प्राचीन फारसी में लुप्तप्राय ही है, केवल एक रूप मिलता है चख़्रिया (=सं० चक्रियात्) जो परोक्ष भूत विधिलिंग (Perfect Optative) है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अवेस्ता—

कालक्रमानुसार अवेस्ता का द्विस्तरीय विकास परिलक्षित होता है-गाथिक अवेस्ता और यंगर (परवर्ती) अवेस्ता। निम्नलिखित विशेषताएँ अवेस्ता को अन्य भारोपीय भाषाओं से अलग करती हैं—

(१) हिन्द ईरानी एवं प्राचीन ई० अ स्वर से अवेस्ता में अ, अॅ, ए, ओ (a, ə, e, ο) बहुत से स्वर हो गये हैं।

(२) प्रा० ई० अइ > अवे अॅ, ओइ, ए (aē, ōi, e)।

प्रा० ई० अउ>अवे० अओ, ओ ऑउ (ao, o, ə̄u)।

(३) अपिनिहिति (anaptixis) अवेस्ता की सर्वप्रमुख विशेषता है।

(४) बहुत से रूपों में, हिन्द ईरानी व्यञ्जन गुच्छ अवेस्ता में सुरक्षित हैं, जिनका संस्कृत में सरलीकरण हो गया है। यथा—अवे० वाक्स्, तु० सं० वाक्।

(५) शब्दान्त का त्>अवे० त् (t̨) ; यथा—
हि० ई० तत् > अवे० तत् (tat̨), तु० सं० तत्।

(६) हि० ई० प्स् >अवे० फ्श् (fš) ; यथा—
हि० ई० द्रप्स > अवे० द्रफ्स।

(७) दो स्वरों के मध्य में हि० ई० स् > प्रा० ई० ह् > अवे० ङ्ह् हो जाता है। यथा—
हि० ई० मनसस् > अवे० मनङ्हो, तु० सं० मनसः।

(८) दो स्वरों के मध्य में प्रा० ई० ह् (<हि० ई० स्) >अवे० ङ्र्।

हि० ई० सझस्र>अवे० हज़ङ्र, सं० सहस्र।

प्रा० ई० ह्व् (<हि० ई० स्व्)>अवे० ह्व् (x̌)।

(१०) र्त्>अवे० श् (š)। यथा—
अर्त>अवे० अश, तु० प्रा० फा० अर्त, सं० ऋत।

(११) प्रा० ई० स्स् (<हि० ई० त्स्/थ्स्)>अवे० स् और
प्रा० ई० ज़्ज़् (<हि० ई० दज़्/ध्ज़् > अवे० स्।

(१२) अ प्रकृति का पंचमी विभक्ति एकवचन का—अत् प्रत्यय अवे० में अन्य सभी प्रकृति (Stems) के साथ भी प्रयुक्त होता है।

(१३) अवेस्ता में षष्ठी द्विवचन का -आओ (å) प्रत्यय एक विशेष प्रकार का है।

(१४) अवेस्ता में नपुंसकलिंग बहुवचन में शब्दान्त प्रत्यय बहुधा नहीं होता है जब कि हि० ई० में -इ प्रत्यय है।

(१५) आगम (augment) अवेस्ता में बहुत ही कम पाये जाते हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१६) अवेस्ता में शब्दों में एक विशेष प्रकार का वर्गीकरण मिलता है—जैसे अहुर और दअेव शब्दों में।

गाथिक अवेस्ता और यंगर अवेस्ता—

(१) कालक्रमानुसार गाथिक और यंगर (परवर्ती) अवेस्ता भाषा के दो भिन्न-भिन्न स्तर प्रदर्शित करते हैं।

(२) साधारणतया सभी शब्दान्त स्वर यंगर (परवर्ती) अवेस्ता में ह्रस्व हो जाते हैं जब कि गाथिक अवेस्ता में दीर्घ पाये जाये हैं।

(३) बहुत से रूपों में यंगर (परवर्ती) अवेस्ता के दीर्घ ओ (o) के लिये गाथिक अवेस्ता में अॅ/आॅ (ә/ә̄) मिलता है।

(४) प्रा० ई० अ/आ का गाथिक अवेस्ता में अॅ अॅ अ/आ (ә ә ә̄) मिलता है।

(५) गाथिक अवे० में दो स्वरों के मध्य में सघोष स्पर्श वर्ण ब्, द्, ग् बहुधा ऊष्म (Spirants) व़् द़् ग़् (w, δ, ν) हो जाते हैं।

(६) गा० अवे० ज् (j) का प्रयोग यंग० अवे० में दो स्वरों के मध्य ज़् (ž) के रूप में होता है। यथा—

यंग० अवे० दज़इति <गा० अवे० दजति, तु० सं० दहति < हि० ई० धझति < भारो० धेघ्वेति।

(७) गा० अवे० ज़म् > यंग० अवे० स्म्।

(८) गा० अवे० में शब्दादि का द्ब् > यंग० अवे० .द्ब्, त्व्, ब्।

(९) हि० ई० प्रथमा एकवचन पिता > गा० अवे० प्ता, पता, ता और यंग० अवे० पित।

(१०) हि० ई० द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय-आन्स् > गा० अवे० आॅन्ग् (ә̄ng) यंग० अवे० अं (a)। यथा—

हि० ई० यान्स् > गा० अवे० यॉन्ग् (yә̄ng); यंग० अवे० यं (ya) सं० यान्।

(११) प्रथम पुरुष एकवचन का थीमेटिक प्रत्यय-आ यंग० अवे० में -आमि हो जाता है जैसा कि संस्कृत में होता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्वितीय अध्याय

ध्वनि विज्ञान (स्वर)

अवेस्ता भाषा में भारोपीय स्वर

भारोपीय स्वर

(क) मूल स्वर—(Primary Vowels)

ह्रस्व—अ, ए, ओ (a, e, o)

दीर्घ—आ, ए, ओ (ā, ē, ō)

निर्बल श्रेणी का स्वर (उदासीन स्वर)—अँ (ə)

(ख) द्वितीय स्वर—(Secondary Vowels)

आक्षरिक (Syllabic)

ह्रस्व—इ, उ, ऋ, लृ, म्, न् (i, u, r̥, l̥, m̥, n̥)

दीर्घ— ई, ऊ, ॠ, ॡ, मा, ना (ī, ū, r̥̄, l̥̄, m̥̄, n̥̄)

अनाक्षरिक—य, व्, र्, ल्, म्, न् (y, w, r, l, m, n)

आक्षरिक अनाक्षरिक साथ-साथ—

इय्, उव्, ऋर्, लृल्, मम्, नन्

(iy, uv, r̥r, l̥l m̥m, n̥n)

(ग) सन्ध्यक्षर—

ह्रस्व—अइ, एइ, ओइ, अउ, एउ, ओउ (ai ei oi au, eu, ou)

दीर्घ—आइ, एइ, ओइ, आउ, एउ, ओउ (āi, ēi, ōi, āu, ēu, ōu)

हिन्द-ईरानी स्वर

(क) मूल स्वर—

ह्रस्व—अ

दीर्घ—आ

(ख) द्वितीय स्वर—

ह्रस्व—इ, उ, ऋ (i, u, r̥)

दीर्घ—ई, ऊ, ॠ (ī, ū, r̥̄)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अनाक्षरिक—इय्, उव्, ऋर् (iy, uv, r̥r)

(ग) सन्ध्यक्षर—

ह्रस्व—अइ, अउ

दीर्घ—आइ, आउ

भारोपीय अ, ए, ओ (a, e, o) > हि० ई० अ, इसी तरह भारोपीय दीर्घ आ, ए̄, ओ̄ (ā, ē, ō) > हि० ई० आ।

भारोपीय सन्ध्यक्षर अइ, एइ, ओइ > हि० ई० अइ,

भारोपीय अउ, एउ, ओउ > हि० ई० अउ,

भारोपीय आइ, ए̄इ ओ̄इ (āi, ēi, ōi) > हि० ई० आइ,

और भारोपीय आउ, एउ, ओउ (āu, ēu, ōu) > हि० ई० आउ होते हैं। भारोपीय मूल स्वरों का मौलिक स्थान-भेद (quality) ग्रीक भाषा में मौलिक रूप में मिलता है।

भारोपीय उदासीन स्वर अँ (ə) > हि० ई० इ जब कि अन्य भारोपीय भाषाओं में अ के रूप में मिलता है।

भारोपीय ऋ, लृ > हि० ई० ऋ

भारोपीय म̥, न̥, > हि० ई० अ

प्राचीन ईरानी में भी हिन्द ईरानी की तरह ही स्वर पद्धति है केवल हि० ई० ऋर् और ॠ का प्रा० ई० में अर् हो जाता है।

अवेस्ता भाषा के स्वर—

ह्रस्व—अ, अँ, ए, ओ, इ, उ (a, ə, e, o, i, u)

दीर्घ—आ, अं, आओ, ऑ̥, ए̄, ओ̄, ई, ऊ

(ā, â, ā, ə̄, ē, ō, ī, ū)

सन्ध्यक्षर—अए̄, ओ̄इ, अओ, ऑउ, आइ, आउ

(aē, ōi, ao, ə̄u, āi āu)

प्राचीन ईरानी अ और आ स्वरों से अवेस्ता में कई नये स्वरों (>अवे० आ, अँ, ए, ओ, इ, उ) और आ > अवे० आ, ए, ओ, आओ, अं) की व्युत्पत्ति होने से अवेस्ता में स्वर पद्धति कुछ उलझ सी गई है। स्वर-वृद्धि (length of Vowels) भी अवेस्ता में संदेहास्पद सी है।

सभी शब्दान्त ह्रस्व स्वर गाथिक अवेस्ता में दीर्घ हो गये हैं और सभी शब्दान्त दीर्घ स्वर यंगर (परवर्ती) अवेस्ता में ह्रस्व हो गये हैं।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कभी-कभी अवेस्ता में मौलिक दीर्घ स्वर आ के लिए ह्रस्व स्वर (अ) मिलता है और कभी मौलिक ह्रस्व स्वर (अ) के लिए दीर्घ आ मिलता है।

(१) भारोपीय अ, ए, ओ > हि० ई० अ > प्रा० ई० अ > अवे० अ, तु० प्रा० फा० अ, सं० अ, ग्रीक अ, ए, ओ।

भारोपीय अपो > हि० ई० अप > अवे० अप (अपा भी मिलता है), प्रा० फा० अप, सं० अप, ग्रीक अपो (apó)।

भारोपीय अगो (agô) > हि० ई० अज़ा (ažā) > अवे० अज़ा, सं० अजामि, ग्रीक अगो (agō), लै० अगो।

भारो० भेरो (bherō) > हि० ई० भरा(मि) > अवे० बरा, सं० भरामि, ग्रीक फेरो (pherō)।

भारो० एस्ति > हि०ई०, अस्ति > प्रा०ई० अस्ति, अवे० अस्ति, प्रा० फा० अस्तिय्, सं० अस्ति, ग्री० एस्ति (esti), लै० एस्त्।

भारो० एस्मि > हि० ई० अस्मि > अवे० अह्मि, प्रा० फा० अ (ह) मिय्, सं० अस्मि, ग्री० एइमि।

भारो० प्रो > हि० ई० प्र > प्रा० ई० फ्र, अवे० फ्र, सं० प्र ग्री प्रो०

भारो० वीरो > हि० ई० वीर > अवे० वीर, सं० वीर, लिथु० व्य्रस्।

हि० ई० अ स्वर (< भारो० अ, ए, ओ, म्̥, न्̥) का अवेस्ता में निम्न विकास हुआ है जिससे कि हि० ई० भाषा अवे० को अलग करती है।

(क) हि० ई० अ > अवे० अॅ (यदि म्, न्, व् के पूर्व आता है) यथा—

अवे० कॅम् < हि० ई० कॅम्, तु० सं० कम् < भारो० क्वोम्

अवे० तॅम् < हि० ई० तम्, तु० सं० तम् < भारो० तोम्, तु० ग्री० तोन् (tón)।

अवे० बरॅम् < हि० ई० (अ) भरम्, तु० सं० अभरन्, प्रा० फा० अबरम् < भारो० (ए) भेरोम्, तु० ग्रीक (ए) फेरोन्।

अवे० बरॅन्ति, < हि० ई० भरन्ति, तु० सं० भरन्ति < भारो० भेरोन्ति, तु० ग्रीक (डोरिक) फेरोन्ति।

अवे० सॅविश्तो < हि० ई० शविष्थस्, तु० सं शविष्ठः < भारो० केविस्थोस् (k̂ewisthos)।

अवे० अॅवीद्वाओ < हि० ई० अविद्वास्, तु० सं० अविद्वान् < भारो० न्̥विद्वोस् (n̥-widwōs)।

(i) गाथिक अवेस्ता में कभी-कभी ह्म् से पूर्व अ > आॅ (ə)। यथा—

अवे० आॅह्मा < हि० ई० अस्म्/मा, तु० सं० अस्मान्, ग्रीक (लेस्बियन) अम्मे।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(ii) अवेस्ता में कभी-कभी अॅ के स्थान पर आॅ मिलता है। यथा—

गा॰ अवे॰ और यंग॰ अवे॰ स्पाॅनिश्तो<हि॰ ई॰ श्वनिष्थस्।

गा॰ अवे॰ जाॅनयो, तु॰ यंग अवे॰ जनयो<हि॰ ई॰ जनयस्।

गा॰ अवे॰ जाॅम्यात्, यंग॰ अवे॰ जम्यात्<हि॰ ई॰ जम्यात्, सं॰ गम्यात्।

(ख) हि॰ ई॰ अ>अवे॰ इ (अ>अॅ>इ) (यदि म्, न्, या व् से पूर्व हो तो)। यथा—

अवे॰ यिम्<हि॰ई॰ यम्, तु॰ सं॰ यम्<भारो॰ योम, तु॰ ग्री॰ होॅन् (hón)।

अवे॰ वाचिम्<हि॰ ई॰ वाचम्, तु॰ सं॰ वाचम्।

अवे॰ द्रूजिम्<प्रा॰ ई॰ द्रुजम्<हि॰ ई॰ ध्रुझम्, सं॰ द्रुहम्<भारो॰ ध्रृध्मम्।

यंग॰ अवे॰ द्रुज़िन्ति (dru̐zinti)<प्रा॰ ई॰ द्रुजन्ति<हि॰ ई॰ ध्रुझन्ति तु॰ सं॰ द्रुह्यन्ति।

(ग) हि॰ ई॰ अ>अवे॰ ए (यदि य् के बाद आता है तो)। यथा—

अवे॰ येदि/येइदि<हि॰ ई॰ यदि, तु॰ सं॰ यदि<भारो॰ योदि।

अवे॰ येहे - येङ्हे<हि॰ ई॰ यस्य, तु॰ सं॰ यस्य<भारो॰ योस्यो।

अवे॰' इथ.येजह्<हि॰ ई॰ त्यजस्, तु॰ सं॰ त्यज्<भारो॰ त्येग्व् तु॰ ग्री॰ सेबोमइ।

(घ) हि॰ ई॰ अ>अवे॰ ओ। यथा—

अवे॰ वोहु (गा॰ अवे॰ वोहू)<प्रा॰ ई॰ वहु, तु॰ प्रा॰ फा॰ (दारय-) व-(ह्-) उश्<हि॰ ई॰ वसु तु॰ सं॰ वसु।

अवे॰ पोउरु<पूर्व अवे॰ पोरु<प्रा॰ ई॰ परु, तु॰ प्रा॰ फा॰ परुव्<हि॰ ई॰ पृरु, तु॰ सं॰ पुरु<भारो॰ प्लॢु, तु॰ ग्रीक पोलु।

प्राचीन ईरानी का अन्तिम-अ>गा॰ अवे॰ आ

(क्योंकि गा॰ अवे॰ में सभी शब्दान्त स्वर दीर्घ हो जाते हैं)।

गा॰ अवे॰ अहुरा = यंग॰ अवे॰ अहुर<हि॰ ई॰ असुर, तु॰ सं॰ असुर।

प्रा॰ ई॰ अ>अवे॰ आ।

यंग॰ अवे॰ क्ष्मावोय>हि॰ ई॰ स्मभ्य।

यंग॰ अवे॰ हावय-च तु॰ सं॰ सव्येन।

(२) भारो॰ दीर्घ आ, ए, ओ (ā, ē, ō)>हि॰ ई॰ आ>प्रा॰ ई॰ आ>अवे॰ आ। यथा—

भारो॰ मातेर् (mātēr)>हि॰ ई॰ माता>प्रा॰ ई॰ माता>गा॰ अवे॰ माता,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

यंग० अवे० मात, तु० प्रा० फा० माता, सं० माता, ग्रीक (डोरिक) मातेर् (māter) एटिक-आयोनिक) मेतेर् (mēter), लै० मातेर् (māter) इत्यादि।

भारो० मे (mē) > हि० ई०, मा > प्रा० ई० मा >अवे० मा, सं० मा, ग्रीक मे (me)।

भारो० भ्रातेर् (bhrāter) > हि० ई० भ्राता > अवे० ब्राता, सं० भ्राता, ग्रीक फ्रातेर् (phrāter)।

भारो० धिधेमि (dhidhēmi)>हि० ई० धधामि>अवे० ददामि, सं० दधामि ग्री० तिथेमि (tithēmi)।

भारो० दिदोमि (didōmi)>हि० ई० ददामि>अवे० ददामि, सं० दधामि, ग्रीक दिदोमि (didōmi)।

भारो० ओकु (ōk̂u)>हि० ई० आशु>प्रा० ई० आसु>अवे० आंसु, तु० सं० आशु, ग्री० ओकुस् (ōkus)।

(क) प्रा० ई० आ>अवे० ए, ओ (ō), आओ (å)। यथा—

प्रा० ई० अयानि>गा० अवे० अयेनि, सं० अयानि।

प्रा० ई० वीदातुश्>अवे० वीदोतुश् (vīdōtuš)।

प्रा० ई० वातायतु>गा० अवे० वातोयोतू (vātōyōtū), सं० वातयतु, वातायते।

प्रा० फा० नाहम्>अवे० नाओङ्हा, सं० नासा, लै० नारेस् (nārēs) अवे० वाओन्ति तु० सं० वान्ति।

(ख) हि० ई० अन्तिम् आस् प्रत्यय>अवे० आओ।

(ग) हि० ई० / प्रा० फा० आम् और आन्>अवे० अं (a)। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अवे० थ्.वा (म्), तु० प्रा० फा० .थुवाम्, सं० त्वाम् ।

(घ) कभी-कभी म् से पूर्व अं (a) अवेस्ता में आ रहता है । यथा—

अवे० दाम (dāma) और दंम (dama) ।

(ङ) हि० ई० आ एवं प्रा० ई० अ / आ के लिये गा० अवे० में ऑअँआ (ə̄əā) मिलता है । यथा--

प्रा० ई० आवा >गा० अवे० ऑअँआवा (ə̄əāvā), सं० आवाम् ।

प्रा० ई० अनु >गा० अवे० ऑअँआनू (ə̄əānū), यंग० अवे० अनु, प्रा० फा० अनुव्, सं० अनु ।

(३) भारो० अँ (ə) >हि० ई० इ >अवे० इ, तु० प्रा० फा० इ, सं० इ, ग्री० अ, लै० अ ।

भारो० पॅतेर् (pəter) >हि० ई० पिता > यंग० अवे० पित, तु० प्रा० फा० पिता,, सं० पिता, ग्रीक पतेर् (patēr) लै० पतेर् ।

भारो क्रेवॅस् (qrewəs)>हि० ई० क्रविष्>यंग० अवे० ख़्रवीश् (तु० यंग० अवे० ख़्रवीश्यन्त्), सं० क्रविः, ग्री० क्रेअस् (kréas) ।

(४) भारो० इ>प्रा० ई० इ >अवे० इ । यथा---

भारो० इधि >हि० ई० इधि >प्रा० ई० इधि>यंग० अवे० इदि, गा० अवे० इदी, तु० प्रा० फा० इदिय्, सं० इहि, ग्री० इथि (íthi) ।

भारो० क्विद्>हि० ई० चिद् >अवे० चित् (cit), प्रा० फा० चिय् सं० चित्, ग्री० ति, लै० क्विद् (quid) ।

(क) प्रा० ई० इ>गा० अवे० ई । यथा—

प्रा० ई० इदि (<हि० ई०/भारो० इधि) >गा० अवे० इदी, यंग० अवे इदि, प्रा० फा० इदिय्, सं० इदि, ग्री० इथि ।

प्रा० ई० वरति (<हि० ई० भरति<भारो० भेरेति) >गा० अवे० वरइती, यंग० अवे० वरइति, प्रा० फा० बरतिय, सं० भरति, ग्री० फेरेइ ।

प्रा० ई० पतिम् (<भारो० पोतिम्) <अवे० पइतीम्, सं० पतिम् ।

(ख) हि० ई० इ का अवे० में अँ (श्वा, ə) भी मिलता है पर ऐसा बहुत कम पाया जाता है । यथा—अवे० हप्त हॅन्दु तु० सं० सप्त सिन्धून् ।

(५) भारो० ई>हि० ई० ई>अवे० ई । यथा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० वीरो>हि० ई० वीर>अवे० वीर, सं० वीर, लिथु० व्यरस्, लै० वीर।

भारो० ग्वीरो (g^wiro)>हि० ई० जीर>अवे० जीर, सं० जिर 'शीघ्र'।

(क) प्रा० ई० ई>अवे० इ (जब शब्दान्त में आता है) परन्तु कभी-कभी वैसे भी। यथा—

भारो० पोती (द्विवचन)> हि० ई० पती>यंग० अवे० पइति, तु० सं० पती।

प्रा० ई० अबीतम्<हि० ई० अभीतम्>यंग० अवे० अइवितॅम्, तु० सं० अभीतम्।

(६) भारो० उ>हि० ई० उ>प्रा० ई० उ>अवे० उ। यथा—

भारो० उते>हि० ई० उत>अवे० उत, प्रा० फा० उत, सं० उत, ग्री० उते।

भारो० मेधु>हि० ई० मधु>अवे० मदु, सं० मधु, ग्री० मेथु।

भारो० भेरेतु>हि० ई० भरतु>अवे० बरतु, प्रा० फा० बरतुव्, सं० भरतु, तु० हिट्टा० एस्तु।

भारो० पुत्लो>हि० ई० पुत्र>अवे० पुथ्र., प्रा० फा० पुस्र, सं० पुत्र।

(क) प्रा० ई० उ>गा० अवे० एवं यंग० अवे० ऊ। यथा—

प्रा० ई० अस्तु<हि० ई० अस्तु<भारो० एस्तु>गा० अवे० और यंग० अवे० अस्तू. तु० प्रा० फा० अस्तुव्, सं० अस्तु, हिट्टा० एस्तु।

(ख) प्रा० ई० उ>अवे० ऊ (म् से पूर्व आने पर)। यथा—

प्रा० ई० ख्रतुम्>हि० ई० क्रतुम्>गा० एवं यंग० अवे० ख्रतुम्, सं० क्रतुम्।

(ग) प्रा० ई० उ>अवे० ऊ (ऐसा कभी-कभी मिलता है। यथा—

प्रा० ई० बुन्नम् (<हि० ई० बुध्नम्)>यंग० अवे० बूनोइ (būnōi), गा० अवे० बुनॅम्, सं० बुध्नम्।

(७) भारो० ऊ>हि० ई० ऊ>प्रा० ई० ऊ>अवे० उ। यथा—

भारो० नू>हि० ई० नू>अवे० नु, सं० नू, प्रा० अंग्रे० नू, तु० ग्रीक नून्।

भारो० कूरो (k̑ūro)<हि० ई० शूर>गा० अवे० सूर (.थूर), प्रा० फा० .थूर, सं० शूर, तु० ग्री० अंकूरोस्।

(क) प्रा० ई० ऊ>गा० अवे० शब्दान्त में उ। यथा—

हि० ई० पशू (भारो० पेकू (pek̑ū)>यंग० अवे० पसु, सं० पशू।

(ख) कभी-कभी प्राचीन ईरानी ऊ का गा० अवे० में ह्रस्व उ मिलता है।

हि० ई० मूत्रम्>यंग० अवे० मु.थ्रॅम् (गा० अवे० मूथ्रॅम्) तु० सं० मूत्रम्

यंग० अवे अनुख्तयए-च, तु० सं० अनूक्त।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(८) भारो० ऋ, लृ > हि० ई० लृ > प्रा० ई० लृ < अवे० अॅर्, लेकिन व्यञ्जन से पूर्व अॅर्अॅ, तु० प्रा० फा० ऋ (जो अर् या र् के रूप में लिखा जाता है), सं० ऋ। यथा—

भारो० नृभ्योस् > हि० ई० नृभ्यस् > अवे० नॅरॅव्यो (nərəvyō), सं० नृभ्यः तु० ग्री० अन्द्रसि।

भारो० मृतो > हि० ई० मृत > अवे मॅरॅत, सं० मृत।

भारो० प्लृथुस् > हि० ई० पृथुश् > प्रा०ई० पृ.थुश् > अवे० पॅरॅथुस् सं० पृथुः तु० ग्री० प्लतुस् (platus)।

भारो० धृस्नेउमि > हि० ई० धृष्नउमि > प्रा० ई० दृश्नउमि < अवे० दॅरॅश्न-ओमि, तु० प्रा० फा० अदृश्नउश्, सं० धृष्णोमि, ग्री० थर्सुस् (tharsus)।

(क) प्रा० ई० ऋ > अवे० अॅह्र् (यदि क्, प् व्यञ्जनों से पूर्व आता है तो)। यथा—

हि० ई०/प्रा० ई० वृकस् > अवे० वॅह्र्को (vəhrkō), तु० सं० वृकः, गॉथि० वुल्फ्स्, ग्रीक लुकोस्।

हि० ई० कृप्तस् > अवे० कॅह्र्प्तो (kəhriptō), तु० सं० कृप्तः, क्लृप्तः।

(ख) प्रा० ई० ऋत > अवे० अॅश् (əš)। यथा—

प्रा० ई० अमृत (amṛta) > अवे० अमॅश, सं० अमृत।

(ग) कभी-कभी (परन्तु बहुत ही कम) हि० ई० एवं प्रा० ई० ऋ का अवेस्ता में रॅ मिलता है। यथा—

हि० ई० तृप्यात् > गा० अवे० त्रॅप्यात्, सं० तृप्यात्।

हि० ई० घृभ्नाति > गा० अवे० ग्रॅव्नाइति, गृभ्णाति।

(घ) हि० ई० र्र् > अवे (एवं प्रा० फा०) अर्। यथा—

हि० ई० ग्रृरि > प्रा० ई० गरि > अवे० गइरि, सं० गिरि

हि० ई० पृरु > प्रा० ई० परु > अवे० पोउरु, *पोरु, प्रा० फा० परु, तु० सं० पुरु।

अवे० परो (parō), तु० प्रा० फा० पर < प्रा० ई० परह् < हि० ई० परस्; तु० सं० पर : ग्री० परोस् < भारो० पृरोस्।

(ङ) कभी-कभी हि० ई० ऋर् अवेस्ता में र् के रूप में मिलता है। यथा—

हि० ई० आतृरम् > अवे० आत्रॅम्।

फा०—२

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(९) भारो ऋ और लृ > हि० ई० ऋ > प्रा० ई० अर् > अवे० अर्, प्रा० फा० अर्, सं० ईर् / ऊर् । यथा—

भारो० ऋमो > हि० ई० ऋम > प्रा० ई० अर्म > यंग० अवे० अरॅम (अर्म रूप भी मिलता है), मं० ईर्म, लै० अर्मुस्, गॉथि० अर्म्स् ।

भारो० ऋतो > हि० ई० ऋत > प्रा० ई० अर्त > गा० अवे० अश, प्रा० फा० अर्ता-चा ।

भारो० दृ्घो > हि० ई० दृ्घो > प्रा० ई० दर्ग > गा० अवे० दरॅग, प्रा० फा० दर्ग, सं० दीर्घ, ग्री० दोलिखोस् (dolikhós), हिट्टा० दलुगस् ।

भारो० स्तृ्तो > हि० ई० स्तृ्त > अवे० स्तरॅत, तु० सं० विस्तीर्ण, ग्रीक स्त्रो,तोस् (strōtos) ।

(क) वहुत से रूपों में अवेस्ता का अर् हि० ई० ऋ के स्थान पर ह्रस्व ऋ से ही निष्पन्न हुआ है । यथा—

गा० अवे० परश्त < हि० ई० पृष्त < भारो० पृक्तो (pr̥k̂to) सं० पृष्ट ।

गा० अवे० दर्श्त, तु० सं० दृष्ट < हि० ई० दृष्त < भारो० दृक्तो (dr̥k̂to) ।

यंग० अवे० पर्श्त < हि० ई० पृष्थ, तु० सं० पृष्ठ ।

(१०) भारो० म, न (m̥, n̥) > हि० ई० अ > प्रा० ई० अ > अवे० अ, प्रा० फा० अ, सं० अ, ग्री० अ, लै० एम्, एन्, गॉथ० उम्, उन् । यथा—

भारो० देक्म् (dék̂m̥) > हि० ई० दश > प्रा० ई० दस > अवे० दस, सं० दश, ग्री० देक, लै० देसेम्, गॉथ० तैहुन (taíhun) ।

भारो० सेप्त्म् (septm̥) > हि० ई० सप्त > अवे० हप्त, सं० सप्त, ग्री० हेप्त, लै० सेप्तेम् ।

भारो० म्नतो (mn̥to) > हि० ई० मत > प्रा० ई० मत > अवे० मत, सं० मत ग्री० मतो, लै० मेन्तुस् गॉथ० मुन्दस् ।

भारो० नेव्न (nevn̥) > हि० ई० नव > अवे० नव, तु० सं० नव ग्री० एन्नेआ (ennea), लै० नोवेम् ।

भारो० नमृतो (n̥mr̥to) > हि० ई० अमृत > प्रा० ई० अमृत > अवे० अमॅश, सं० अमृत ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(क) भारो॰ मम्, नन् (mm, nn) > हि॰ ई॰ एवं प्रा॰ ई॰ अम्, अन्, प्रा॰ फा॰ अम्, अन् ।

यथा—

भारो॰ तनु > हि॰ ई॰-/-प्रा॰ई॰ तनु > अवे॰ तनु, प्रा॰फा॰ तनु, सं॰ तनु, ग्री॰ तनु (tánu), लै॰ तेनुइस् ।

(११) भारो॰ म, न (m, n) > हि॰ ई॰ आ > अवे॰ आ, सं॰ आ ।

यथा—

भारो॰ ग्नातोस् (ĝn̥tos) > हि॰ई॰ ज़ातस् > प्रा॰ई॰ ज़ातह् > अवे॰ जातो (zātō), तु॰ सं॰ जातः, लै॰ (ग्)नातुस् ।

भारो॰ य्मानो > हि॰ ई॰ यान > प्रा॰ ई॰ यान > अवे॰ यान 'हड्डी', तु॰ सं॰ यच्छति 'देता है', अवे॰ यसइति ।

(१२) भारो॰ अइ, एइ, ओइ > हि॰ ई॰ अइ > प्रा॰ई॰ अइ > अवे॰ ओइ (oi) (अधिकतर), अए (ae) (दो स्वरों के मध्य में आने पर) और शब्दान्त में ए (e), प्रा॰ फा॰ अइ, सं॰ ए, ग्रीक अइ ।

यथा—

भारो अइध् > हि॰ई॰ अइध् > प्रा॰ई॰ अइद् > अवे॰ अएद् (aed) तु॰ अवे॰ अएस्म (aesma) सं॰ एधस्, ग्री॰ अइथोस् (aithos) ।

भारो॰ यगेतइ (yagetai) > हि॰ई॰ यज़तइ, सं॰ यजते, तु॰ ग्री॰ फेरेतइ ।

भारो॰ एइमि > हि॰ ई॰ अइमि > अवे॰ अएइमि (aeimi), सं॰ एमि, ग्री॰ एइमि ।

भारो॰ एइति > हि॰ ई॰ / प्रा॰ ई॰ अइति > अवे॰ अएइति (aeiti), प्रा॰ फा॰ अइतिय्, सं॰ एति, ग्री॰ एइसि (eisi) ।

भारो॰ मोइ > हि॰ ई॰ मइ > प्रा॰ ई॰ मइ > अवे॰ मोइ (moi), मे (me) प्रा॰ फा॰ मइय्, सं॰ मे, ग्री॰ मोइ ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० तोइ>हि० ई० तइ>अवे० तोइ (toi) तए-च (taēca), प्रा० फा० तइय्, सं० ते, ग्री० तोइ ।

(१३) भारो० अउ, एउ, ओउ>हि०ई० अउ>प्रा०ई० अउ>अवे० अओ, आॅउ और शब्दान्त में आने पर ओ (ō) हो जाता है, प्रा० फा० अउ, सं० ओ ।

यथा—

भारो० अउगेस>हि० ई० अउजस्>प्रा० ई० अउज़ह्>गा० उवे० अओगो (aogō), यंग० अवे० अओजो (aojō), सं० ओजः, तु०लै० अउगेओ, ग्री० अउक्सो (auksō) ।

भारो० लेउकेस्>हि० ई० रउचस्>अवे० रओचो (raocō), सं० (वै०) रोचः, प्रा० फा० रउच, ग्री० लेउकोस् ।

भारो० मेन्येउ>हि० ई० मन्यउ>प्रा० ई० मन्यउ>अवे०मइन्यो (mainyō), सं० मन्यो ।

W

भारो० ग्वोउस् (gous)>हि० ई० गउश्>अवे० गओश्, गाॅउश् (gəuś), सं० गोः, तु० ग्री० बूस् (boos) ।

भारो० लोउकोस्>हि० ई० रउकस्>प्रा ई० रउकह्>अवे० रओचो (raocō), प्रा० फा० रउच, सं० रोचः, लै० लूसेओ (lūceo), तु० ग्री० लेउकोस् (leukós) ।

(१४) भारो० आइ, एइ, ओइ (āi, ēi, ōi) > हि०ई० आइ>प्रा० ई० आइ>अवे० आइ, प्रा० फा० आइ, सं० ऐ । यथा—

भारो० सइनाइ>हि० ई० सइनाइ>प्रा० ई० हइनाइ>अवे० हएनयाइ (haēnayāi), सं० सेनायै, तु० ग्री० खोराइ (khṓrāi), गाॅथि० गिबइ (gibái) ।

भारो० एक्वाइ (ekŵāi)>हि० ई० अश्वाइ>अवे० अस्पाइ, सं० अश्वायै, ग्री० खोराइ (khōrāi) ।

भारो० एइत् (eīt)>हि० ई० आइत्>प्रा० इ० अइत्>आइत्, प्रा० फा०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

आइस्, सं० अइत्, तु० ग्री० एइते (êite)।

भारो० मेर्त्योइ>हि० ई० मर्त्योइ (martyōi)>अवे० मश्याइ, तु० सं० मर्त्याय, ग्री० लुकोइ (lúkoi)।

(१५) भारो० आउ, एउ, ओउ (āu, ēu, ōu) > हि० ई० आउ > प्रा०ई० आउ > अवे० आउ, प्रा० फा० आउ, सं० अउ। यथा—

भारो० नाउस्>हि० इ० नाउष्>प्रा० ई० नाउश् >अवे० *नाउश् (तु० अवे० नावया = सं० नाव्या, प्रा० फा० नाविया), सं० नौः, ग्री० (डोरिक) नाउस्।

भारो० वेसेउ (wesēu)>हि० ई० वसाउ > प्रा० ई० वहाउ>अवे० वङ्हाउ, सं० वसउ।

भारो० ग्वोउस्>हि० ई० गाउश्>प्रा० ई०गाउश्>अवे० गाउश्, [तु० सं० गौः, ग्री० बोउस (boûs)।

(क) हि० ई० आउ का कभी-कभी अवेस्ता में आओ (å) रूप भी मिलता है। यथा—

हि० ई० क्रताउ>अवे० ख्रताओ *ख्रताउ, तु० सं० क्रतौ।

हि० ई० अरत्नाउ>अवे० अर्.थ्नाओ (दो कोहनियाँ) तु० सं० अरत्नि (कुहनी) हि० ई० पश्वाउ>अवे० पस्वाओ।

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ३

अवेस्ता में स्वर-परिवर्तन

(१) इ और उ स्वरों की अपनिहिति अवेस्ता की प्रमुख विशेषता है। इ स्वरापनिहिति अवेस्ता में अ/आ, उ/ऊ, ए/ए̱ (e/ē), ओ, अओ, या अए̱; (aē) स्वरों के वाद होती है तथा सरल व्यञ्जन के बाद भी होती है यदि इ/ई; ए̱ (ē), ङ् या ङ्ह् शब्द के तुरन्त वाद आने वाले शब्दांश में हों। यथा—

अवे॰ अइति < हि॰ ई॰ अति तु॰ सं॰ अति

अवे॰ अइपि < हि॰ ई॰ अपि, तु॰ सं॰ अपि

अवे॰ बरइन्ति < हि॰ ई॰ भरन्ति, तु॰ सं॰ भरन्ति।

अवे॰ स्तूइदि < हि॰ ई॰ स्तुधि, तु॰ सं॰ स्तुहि

अवे॰ कॅरॅनओइति < हि॰ ई॰ कृनउति, तु॰ सं॰ (वै॰) कृणोति।

अवे॰ अए̱इति (aēiti) > हि॰ ई॰ ऐति, तु॰ सं॰ एति।

अवे॰ मइन्यु < हि॰ ई॰ मन्यु, तु॰ सं॰ मन्यु।

अवे॰ अइङ्हाओ < हि॰ ई॰ अस्यास्, तु॰ सं॰ अस्याः।

उ स्वरापनिहिति अवेस्ता में अ/आ या ओ के वाद होती है तथा र् से पूर्व भी होती है। यदि शब्द के तुरन्त वाद आने वाले शब्दांश में उ या व् होता है। यथा—

अवे॰ अउरुश < हि॰ ई॰ अरुष, तु॰ सं॰ अरुष।

अवे॰ दाउरु < हि॰ ई॰ दारु; तु॰ सं॰ दारु।

अवे॰ पोउरु < हि॰ ई॰ पुरु तु॰ सं॰ पुरु।

(२) आदिस्वरागम भी अवेस्ता में पाया जाता है। अतः अवेस्ता में इ का आदिस्वरागम रि/री से पूर्व होता है और उ का रु/रू/र्व् से पूर्व होता है। यथा—

अवे॰ इरिनख्ति < हि॰ ई॰ रिनक्ति, तु॰ सं॰ रिणक्ति

अवे॰ उरूपयेइन्ति < हि॰ ई॰ रूपयन्ति, तु॰ सं॰ रूपयन्ति

अवे॰ उर्वत < हि॰ ई॰ व्रत, तु॰ सं॰ व्रत।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(३) अवेस्ता भाषा में र् के साथ विप्रकर्ष (anaptyxis) संयुक्ताक्षरों में पाया जाता है। यथा—

गा० अवे० दर्अॅग, यंग० अवे० दर्अॅग<प्रा०ई० दर्ग, तु० प्रा०फा० दर्ग, तु० सं० दीर्घ, तु० ग्रीक दोलिखोस्।

यंग० अवे० दादर्अॅस<प्रा० ई० दादर्स < हि० ई० दादर्श, तु० सं० ददर्श, तु० ग्रीक देदोर्क (dédorka)।

यंग० अवे० स्उरुनओइति<प्रा०ई० स्रुनउति<हि० ई० श्रुनउति, तु० सं० शृणोति।

यह अन्य संयुक्ताक्षरों के साथ भी पाया जाता है। यथा—

गा० अवे० दद्अॅमही < हि० ई० दद्मसि, तु० सं० (वै०) दद्मसी।

गा० अवे० द्अबित्य<हि० ई० द्वीतीय, तु० सं० द्वितीय।

(४) अवेस्ता में शब्दान्त में आने वाले र् के बाद अन्त्यस्वरागम (apothesis) भी मिलता है। यथा—

अवे० अन्तर्अॅ<हि० ई० अन्तर् तु० सं० अन्तः

अवे० नर्अॅ< हि० ई० नर, तु० सं० नः

अवे० वदर॑<हि ई० वधर्, तु० सं० वधः

अवे० आओङ्हर्अॅ < हि० ई० आसृर, तु० सं० आसुः।

(५) अपश्रुति (ablaut)

भारोपीय मूल स्वरों में स्वरपरिवर्तन पद्धति थी जिसे अपश्रुति कहते हैं। यह स्वरपरिवर्तन मात्रिक (quantitative) एवं गौण (qualitative) दोनों रूपों में मिलता है भारोपीय अ : आ या ए : ए (e : ē) या ओ ओ (o : ō) का स्वर-परिवर्तन मात्रिक अपश्रुति है और ए : ओ आदि का स्वरपरिवर्तन गौण अक्षरावस्थान (Qualitative Ablaut) है।

मात्रिक अपश्रुति की तीन श्रेणियाँ हैं—गुण, वृद्धि एवं निर्बल श्रेणी (weak grade)। निर्बल श्रेणी में दो उपश्रेणियाँ हैं—(क) शून्य श्रेणी जिसमें स्वर लुप्त हो जाता है; (ख) अल्प श्रेणी जिसमें स्वर मात्रा अल्प (reduce) हो जाती है।

भारोपीय मूल स्वरों अ/आ, ए/ए (e/ē), ओ/ओ (o/ō) का हिन्द ईरानी भाषाओं में अ/आ हो जाने के कारण अवेस्ता में गौण अक्षरावस्थान (Qualitative Ablaut) नहीं मिलता है।

मात्रिक अपश्रुति भी अवेस्ता में कठिन ही प्रतीत होती है क्योंकि हिन्द-ईरानी स्वरों को मात्रा अवेस्ता में एक समान नहीं मिलती है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अवेस्ता में अधिकतर सबल श्रेणी के शब्द संस्कृत एवं अन्य भाषाओं में निर्बल श्रेणी के होते हैं। यथा—

अवे॰ दातो (dātō)<हि॰ ई॰ धातस्<भारो घेतोस् (dhētos); तु॰ सं॰ हितः<हि॰ ई॰ धितस्<भारो॰ धॅतोस इत्यादि ।

(६) भारोपीय द्वितीय स्वर (Secondary Vowels) इ, उ, ऋ, लृ, म॰, न॰ का पूर्ववर्ती भारोपीय भाषा में स्थान प्रधान भिन्नता मिलती है। परन्तु अवेस्ता में द्वितीय स्वरों (Secondary Vowels) की यह स्थान प्रधान भिन्नता (positional variation) नहीं है क्योंकि अवेस्ता में बहुत से ध्वन्यात्मक परिवर्तन मिलते हैं।

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ४

ध्वनि-विज्ञान (व्यञ्जन)

(१) भारोपीय व्यञ्जन

(क) कण्ठ्य वर्ग

(i) तालव्य क्, ख्, ग्, घ्, ञ् ($\hat{k}$, $\hat{k}h$, $\hat{g}$, $\hat{g}h$, $\hat{n}$)

(ii) कण्ठ्य क्, ख् ग्, घ्, ङ् (q, qh, g, gh, n)

(iii) कण्ठ्योष्ठ क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्, ङ् (q^w, q^wh, g^w, g^wh, n)

(ख) दत्य वर्ग त्, थ्, द्, ध्, (न्)

(ग) पवर्ग प्, फ्, ब्, भ्, (म्)

(घ) अर्द्ध स्वर, द्रव एवं अनुनासिक

य्, व् (w), र्, ल्, म्, न् (न्, ङ्)

(ङ) ऊष्म वर्ग स्, ज्, थ्, द्, (δ)।

अनुनासिक में म्, न् अनाक्षरिक द्वितीय स्वर (nonsyllabic secondary vowels) हैं और म्, न् (m̥, n̥) तथा भारोपीय न्, ङ् न् व्यञ्जन से व्युत्पन्न हैं अर्थात् न् भारोपीय तालव्य, कण्ठ्य और कण्ठ्योष्ठ वर्ग में क्रमशः ङ्, ञ् हो जाता है।

(२) हिन्द-ईरानी व्यञ्जन

(क) कण्ठ्य क्, ख्, ग्, घ्, (ङ्)

(ख) तालव्य च्, छ्, ज्, झ्, (ञ्)

(ग) दन्त्य त्, थ्, द्, ध्, (न्)

(घ) ओष्ठ्य प्, फ्, ब्, भ्, (म्)

(ङ) अर्द्धस्वर य्, व् (v)

(च) द्रव र्

(छ) अनुनासिक म्, न्, ङ्, ञ्

(ज) ऊष्म वर्ण स्, स् (ˇs), ष् (ˊs), श् (ˇsh), ज्; ज्, झ् (ˇzh)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(३) अवेस्ता भाषा के व्यञ्जन

(क) कण्ठ्य	क्, ख्., ग्, ग्.	(k, x, g, r)
(ख) तालव्य	च्, ज्	(c, j)
(ग) दन्त्य	त्, थ्., द्, द्.	(t, θ, d, δ)
(घ) ओष्ठ्य	प् फ्. ब्, व्	(p, f, b, w)
(ङ) अनुनासिक	न्, ङ्., ङ्, म्, (न्म्)	(n, *n*, *n*, m, (nᵐ))
(च) अर्द्धस्वर	य्, व्	(y, v)
(छ) द्रव	र्	(r)
(ज) ऊष्मवर्ण	स्, ज्., श्, ज्	(s, z, š, ž)
(झ) संघर्षीवर्ण	ह्, ह्.	(h, ḣ)
(ञ) कण्ठ्योष्ठ ऊष्मवर्ण	ख़्व्	(x̀)

(i) न्म् का प्रयोग अवेस्ता में उसी तरह किया जाता है जैसे कि संस्कृत में अनुस्वार का।

ङ्, ह. (n, ḣ) का ङ् और ह् के रूप में तालव्यीकरण हो जाता है।

अवेस्ता व्यञ्जन की कुछ मुख्य विशेषतायें—

(१) भारोपीय एवं हिन्द-ईरानी अघोष महाप्राण > प्रा० ई० एवं अवेस्ता अघोष ऊष्म (spirants) परन्तु ऐसा केवल स्, श् और अनुनासिक के बाद ही होता है।

(२) भारोपीय एवं हिन्द-ईरानी आघोष महाप्राण स्, श् और अनुनासिक के बाद प्राचीन ईरानी एवं अवेस्ता में अल्पप्राण हो जाता है।

(३) भारोपीय और हिन्द-ईरानी सघोष महाप्राण प्राचीन ईरानी में सघोष अल्पप्राण के साथ मिलकर एक हो जाते हैं। इस प्रकार हि० ई० भ्, ध्, घ्, झ् और झ्. > प्रा० ई० ब्, द्, ग्, ज् और ज् तथा हि० ई० ब्, द्, ग्, ज् और ज्. > प्रा० ई० ब्, द्, ग्, ज्,।

(४) भारोपीय में त् और स् के बाद सघोष महाप्राण आने पर दो प्रकार का परिवर्तन होता है, कुछ बोलियों में सघोष महाप्राण + त् > सघोष अल्पप्राण + ध्। इसी प्रकार कुछ बोलियों में सघोष महाप्राण + स् > सघोष महाप्राण + ज्. और कुछ अन्य बोलियों में अघोष महाप्राण + स हो जाता है।

(५) व्यञ्जन पूर्व अघोष अल्पप्राण कण्ठ्य ध्वनियाँ अवेस्ता में व्यञ्जन से पूर्व ऊष्म (spirantized) हो जाती हैं। क्य् > च्य्, त्स् > स्स्, परन्तु प्त् का फ्त् नहीं होता है यह प्त् ही रहता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारोपीय कण्ठ्य वर्ग तालव्य, कण्ठ्य एवं कण्ठ्योष्ठ्य तीन रूपों में मिलता है। शतम्, केन्तुम् हिन्द-ईरानी एवं अवेस्ता भाषाओं में इसका जिस प्रकार विकास (परिवर्तन) हुआ है, वह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट है—

कण्ठ्य वर्ग	भारोपीय शतम्	शतम्	केन्तुम्	हिन्द-ईरानी	अवेस्ता
तालव्य	क्, ख्, ग्, घ्	श्, श्, ज्., झ्	क्, ख्, ग्, घ्	श्, श्, ज़्., झ्	स्, स्, ज्., ज़्
कण्ठ्य	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्	क्/ख्, क्/ख्, ग्/ग्., ग्/ग्.
कण्ठ्योष्ठ्य	क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्	क्, ख्, ग्, घ्	क्व्/प्, ख्व्/फ्, ग्व्/ब्, घ्व्/भ्	च्, छ्, ज्, झ्	च्/श्., च्/श्, ज्/ज़्, ज़्/ज्.

———

अध्याय ५

भारोपीय कण्ठ्य वर्ग अवेस्ता भाषा में

कण्ठ्य वर्ग की विशेषताओं के आधार पर भारोपीय भाषा परिवार को दो भागों में बाँटा गया है—सतम् और केन्तुम्। पूर्व भारोपीय भाषा (Proto Indo-European Speech) में कण्ठ्य वर्ग के तीन प्रकार मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं—

कठ्य वर्ग	भारोपीय	सतम्	केन्तुम्
तालव्य	क्, ख्, ग्, घ्	स्, श्, ज़्, झ़्	क्, ख्, ग्, घ्,
कण्ठ्य	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्
कण्ठ्योष्ठ	क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्	क्, ख्, ग्, घ्	क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्

हिन्द-ईरानी भाषाओं में कण्ठ्य वर्ग वैसा ही है जैसा कि सतम् में है। पर सतम् के कण्ठ्य वर्ग का, हि० ई० तालव्य स्वर इ/ई, ए/ए (e/ē) और य् के बाद आने पर तालव्यीकरण हो जाता है। इस प्रकार सतम् क् का हिन्द-ईरानी में क् होता है, पर क् से पूर्व इ/ई, ए/ए (e/ē) वा य् आने पर क् का च् (तालव्यीकरण) हो जाता है। इस प्रकार सतम् के क्, ख्, ग्, घ् से हिन्द-ईरानी में च्, छ्, ज्, झ् ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं।

भारोपीय कण्ठ्य वर्ग से अवेस्ता ध्वनियों का विकास निम्न रूप से हुआ है—

कण्ठय वर्ग	भारोपीय	सतम्	हिन्द-ईरानी	अवेस्ता
तालव्यवर्ग	क्, ख् ग्, घ्	स् श्, ज़्, झ़्	स्, श्, ज़् झ़्	स्, स्, ज़्, ज़्
कण्ठय वर्ग	क़्, ख़्, ग़्, घ़्	क्, ख्, ग्, घ्	क्, ख्, ग्, घ्	क्/ख़्, क्/ख़् ग्/ग़्, ग्/ग़्
कण्ठ्योष्ठवर्ग	क्व्, ख्व्, ग्व्, घ्व्	क्, ख्, ग्, घ्	च्, छ्, ज्, झ्	च्/स्, च्/स्, ज्/ज़्, ज्/ज़्

(१) भारोपीय क् > हि० ई० स् (ś)>अवे० स्। यथा—

भारो० देक्म > हि० ई० दश > अवे० दस, तु० सं० दश, ग्री० देक, लै० देसेम, गॉथ० तैहुन्।

भारो० क्मतोम् > हि० ई० शतम् > अवे० सतॅम्, तु० सं० शतम्, प्रा० फा०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

थ̣तगु, लिथु० स्ज़िंतस्, ग्री० हेकतोन्, लै० सेन्तुम्, गॉथ०, हुन्ड्, तोखारियन कान्त् ।

(क) कभी-कभी परवर्ती अवेस्ता में भारोपीय क् का स् न होकर थ् हो जाता है । यथा—

भारो० कम्<हि० ई० शम्->यंग० अवे० थ̣म्-,सं० शम्-, ग्री० काम्नो

(ख) भारो० क्त् >हि० ई० श्त्>प्रा० ई० श्त्>अवे० श्त्; तु० प्रा०फा० श्त्, सं० ष्ट् । यथा—

भारो० इक्तो > हि० ई० इष्त>अवे० इश्त, सं० इष्ट ।

(ग) भारो० क्स् > हि० ई० श्श् >प्रा०ई०श् >अवे० श्, सं० क्ष् ।
यथा—

भारो० कोक्सो > हि० ई० कश्श > प्रा० ई० कश>अवे० कश 'कन्धा', तु० सं० कक्ष, लै० कोख् ।

(२) हि० ई० प्स्>प्रा० ई० फ्श्>अवे० फ्श् । यथा—

भारो० प्रेक्नो < हि० ई० प्रश्न>अवे० फ्रश्न, तु० सं० प्रश्न, अर्मिनियन

हर्स्न, तु० गॉथ० फ्रेह्नन् 'पूछना' ।

(३) भारो० ख्>हि० ई० श्>अवे० स्, सं० छ्, ग्री० ख् । यथा—

भारो० स्खिद्>हि० ई० शिद्>अवे० सिद्, सं० छिद्, तु० ग्री० स्खिज़ो

(skhizō) ।

(क) भारो० क्स्क्(ख्)>भारो० स्क्(ख्)>हि० ई० स्स् (श्)>अवे० स्, सं० छ् । यथा—

भारो० पृक्स्केति >भारो० पृस्केति>हि० ई० पृश्शति>अवे० पॅरॅसइति, प्रा० फा० पृसतिय्, लै० पोस्सेव् ।

(४) भारो० ग् >हि० ई० ज् >अवे० ज्; सं० ज्, प्रा० फा० द । यथा—

भारो० यग् > हि० ई० यज्>अवे० यज्, सं० यज्, तु० ग्री० ह्ज़ोमइ 'पूजा करना' ।

भारो० गेनोस्>हि० ई० ज़नस्>अवे० जनो, सं० जनस्, लै० गेनुस्, ग्री० गेनोस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० गेउसो>हि०ई०ज़उश्>अवे० ज़ओश, सं० जोष, तु० ग्री० गेउओमइ, गाँथ० किउसन्, अंग्रे० चूज (choose), लै० गुस्तुस्, ग्री० गेउओ (geúō)।

भारो० ग्नातोस्>हि० ई० जातस्>अवे० जातो (zātō), सं० जातः, लै० (ग)नातुस्।

(५) भारो० ग्न्>हि० ई० ज़्न्>प्रा० ई० श्न्>अवे० श्न्। यथा—

भारो० ग्नु (गेनु शब्द से निर्बल श्रेणी का रूप है)>हि० ई० ज़्नु>अवे० श्नु, तु० सं० ज्ञु, ग्री० ग्नुक्स् (gnúks)।

(६) भारो० ग्द् और ग्ध्>हि० ई० ज़्द् और ज़्ध्>अवे० ज़्द्, सं० ड्, ढ्। यथा—

भारो० मृग्दीको>हि० ई० मृज़्दीक>अवे० मॅरॅज्दीक, सं० मृलीक।

भारो० उग्ध्रो>हि० ई० उज़्ध्र>यंग० अवे० उज़्द्र, तु० सं० ऊढ।

(७) भारो० घ्>हि० ई० झ्>अवे० ज़्, सं० ह्, प्रा० फा० द्। यथा—

भारो० भाघुस्>हि० ई० भाझुश्>अवे० बाज़ुश्, तु० सं० बाहुः, ग्री० पेखुस्।

भारो० घेउतेर्>हि० ई० झ़उतर्>अवे० ज़ओतर्, सं० होतर, तु० ग्री० खेओ (kheō) "मैं उड़ेलता हूं"।

(क) साधारणतया भारो० घ्+त्>भारो० ग्ध्>हि० ई० ज़्ध्>प्रा० ई० ज़्द्>अवे० ज़्द्। यथा—

भारो० उघ्+त्रो>भारो० उग्ध्रो>हि० ई० उज़्ध्र>यंग० अवे० उज़्द्र, तु० सं० ऊढ।

(ख) कभी-कभी भारो० घ्+त्>भारो० क्त्>हि० ई० श्त्>प्रा० ई० श्त्>अवे० श्त्। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो॰ वेघ् + तो > वेक्तो > हि॰ ई॰ वश्त > यंग॰ अवे॰ वश्त।

(ग) साधारणतया भारो॰ घ् + स् > भारो॰ घ्ज़् > हि॰ ई॰ झ़्ज़् > प्रा॰ ई॰ ज़् > अवे॰ ज़्। यथा—

भारो॰ वेघ्सेत् > वेघ्ज़ेत् > हि॰ ई॰ वझ़्ज़त् > प्रा॰ ई॰ वज़त > यंग॰ अवे॰ वज़त्, तु॰ सं॰ (वै॰) वक्षत्, लै॰ वेखित्।

(घ) कभी-कभी भारो॰ घ् + स् > भारो॰ क्स् > हि॰ ई॰ श्श् > प्रा॰ ई॰ श् > अवे॰ श्। यथा—

भारो॰ वेघ् + से + तो > भारो॰ वेकसेतो > हि॰ ई॰ वश्शता > प्रा॰ ई॰ वश्सत > अवे॰ वशत, सं॰ (वै॰)*वक्षत।

(८) भारो॰ क् और क्व् > हि॰ ई॰ क् > प्रा॰ ई॰ क्, तु॰ सं॰ क्, प्रा॰ फा॰ क्, ग्री॰ क्। यथा —

भारो॰ कृतो > हि॰ ई॰ कृत > अवे॰ कॅरॅत, प्रा॰ फा॰ कृत, सं॰ कृत तु॰ ग्री॰ क्रैनो (kraíno̅), लै॰ क्रेआरे (creāre)।

भारो॰ कोक्सो > हि॰ ई॰ कश्श > प्रा॰ ई॰ कश > अवे॰ कश 'कंधा', सं॰ कक्ष 'बगल' अर्थात् बाँह के नीचे का गड्ढा, लै॰ कोख्।

भारो॰ क्वोस् > हि॰ ई॰ कस् > अवे॰ को (ko̅), सं॰ कः, लिथु॰ केस्, ग्री॰ पोथेन्।

भारो॰ व्लृक्वोस् > हि॰ ई॰ वृकस् > अवे॰ वॅह्र्को (vehrko̅), सं॰ वृकः, गॉथ॰ वुल्फस्, ग्री॰ लुकोस्, लै॰ लुपुस्।

(क) भारो॰ क्/क्व् के पूर्व जब इ/ई, ए/ए (e/ē) आता है तो हि॰ ई॰ में च् > प्रा॰ ई॰ च् > अवे॰ च्, सं॰ च्, प्रा॰ फा॰ च्। यथा—

भारो॰ क्वे > हि॰ इ॰ च > प्रा॰ ई॰ च > अवे॰ च, प्रा॰ फा॰ चा, सं॰ च, ग्री॰ ते, लै॰ क्वे।

भारो॰ पेङ्क्वे > हि॰ ई॰ पञ्च > प्रा॰ ई॰ पञ्च > अवे॰ पन्च, सं॰ पञ्च, ग्री॰ पेन्ते, लै॰ क्वीन्क्वे।

(९) हि॰ ई॰ क् के बाद जब कोई व्यञ्जन आता है तो क् > प्रा॰ ई॰ ख़् > अवे॰ ख़्। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो॰ क्रूरो>हि॰ ई॰ क्रूर>अवे॰ ख़्रूर, सं॰ क्रूर, जबकि सं॰ क्रविः, ग्री॰ क्रेअस् ।

(१०) भारो॰ क्य्/क्व्य् > हि॰ ई॰ च्य् > प्रा॰ ई॰ श्य्>अवे॰ श्य्, प्रा॰ फा॰ श्य् (परन्तु प्रा॰ फा॰ में शिय् लिखा जाता है), सं॰ च्य् ।

भारो॰ वेक्व्येतइ>हि॰ ई॰ वच्यते>अवे॰ वश्येते (vasˇyetē), तु॰ सं॰ उच्यते ।

भारो॰ क्व्येव्>हि॰ ई॰ च्यव्>प्रा॰ ई॰ श्यव्>गा॰ अवे॰ श्यवाइ, प्रा॰ फा॰ अशियवम्, सं॰ च्यवते, ग्री॰ (होम॰) सेउए ।

(११) भारो॰ ख् और ख्व्>हि॰ ई॰ ख्>प्रा॰ ई॰ ख़्>अवे॰ ख़्, प्रा॰ फा॰ ख़्, सं॰ ख् । यथा—

भारो॰ खुम्भो>हि॰ ई॰ खुम्भ>अवे॰ ख़ुम्ब्, तु॰ सं॰ कुम्भ ।

भारो॰ सोखो(इ) > हि॰ ई॰ सखा>अवे॰ हख़ा, प्रा॰ फा॰ हख़ा (मनिशिय), सं॰ सखा ।

(१२) उष्मवर्ण के बाद हि॰ ई॰ ख्>अवे॰ क् । यथा—

भारो॰ स्खृनो>हि॰ ई॰ स्खृन्>अवे॰ स्करॅन 'गोल', तु॰ ग्री॰ स्फइर ।

(१३) यदि भारो॰ ख्/ख्व् के बाद इ/ई, ए/ए (e/ē), य् आये तो ख्/ख्व्> हि॰ ई॰ छ्>अवे॰ श्, सं॰ छ् । यथा—

भारो॰ सोख्यइ>हि॰ ई॰ सछ्यइ>अवे॰*हश्ये>अवे॰ हशे (hasˇē), तु॰ सं॰ सख्ये ।

(१४) हि॰ ई॰ छ् से पूर्व जब कोई सकार या अनुनासिक होता है तो छ् का अवे॰ में च् हो जाता है । यथा—

भारो॰ स्खेन्द्>हि॰ ई॰ स्छ्न्द>अवे॰ स्कन्द् 'तोड़ना', तु॰ सं॰ स्कन्द् 'फाड़ना' ।

(१५) भारो॰ ग् और ग्व्>हि॰ ई॰ ग्>प्रा॰ ई॰ ग्>गा॰ अवे॰ ग्, यंग॰ अवे॰ ग् । यथा—

भारो॰ गृरोस्>हि॰ ई॰ गृरस्>प्रा॰ ई॰ गरह्>गा॰ अवे॰ और यंग॰ अवे॰ गरो, सं॰ गिरः, तु॰ ग्री॰ गेरस् (géras) ।

भारो॰ ग्वोउस् (gōʷus) > हि॰ ई॰ गाउश्>गा॰ अवे॰, यंग॰ अवे॰ गाउश्, सं॰ गौः ग्रीक बोउस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(१६) भारो० ग् और ग्व् के बाद इ/ई, ए/ए (e/ē), य् आने पर हि० ई० में ज् हो जाता है > प्रा० ई० ज् > गा० अवे० ज् यंग० अवे० ज् । ज्, तु० सं० ज्, प्रा फा० ज् ।

(क) शब्दादि में हि० ई० ज् > प्रा० ई० ज् > गा० अवे० ज्, यंग० अवे० ज् । यथा—

भारो० ग्वेमेत् > हि० ई० जमत् > प्रा० ई० जमत् > गा० अवे० जिमत, तु० यंग० अवे० जसत, तु० सं० गच्छत् ।

(ख) शब्द के मध्य में हि० ई० ज > प्रा० ई० ज् > गा० अवे० ज् , यंग० अवे० ज् । यथा—

भारो० भगेत् > हि० ई० भजत् > प्रा० ई० बजत् > यंग वे० बज़त्, तु० सं० (अ)भजत्, तु० ग्रीक फगेस् 'तुमने खा लिया है ।'

(१७) भारो० घ् और घ्व् > हि० ई० घ् > प्रा० ई० ग् > गा० अवे० ग् और यंग० अवे० ग्/ग़् ।

(क) भारो० घ् / घ्व् > हि० ई० घ् > प्रा० ई० ग् > गा० अवे० ग् > यंग० अवे० ग् (शब्दादि में) यदि घ्व्, घ् के तुरन्त बाद में अनुनासिक न हो तो। यथा—

भारो० घ्वोरमोस् > हि० ई० घर्मस् > गा० अवे० और यंग० अवे० गरॅमो, प्रा० फा० गर्म, सं० घर्म, लै० फोरमुस्, गा० वार्मस्, तु० ग्री० थेर्मोस् ।

भारो० घोस् > हि० ई० घस् > अवे० गह्, सं० घस् 'खाना' (क्रिया), तु० हिट्टा० गस्त 'भूख' ।

(ख) भारो० घ् और घ्व् > हि० ई० घ् > प्रा० ई० ग् > गा० अवे० ग् > यंग० अवे० ग़् (शब्दादि में जब इसके बाद कोई अनुनासिक वर्ण आता है)। यथा—

भारो० घ्व्नोस् > हि० ई० घ्नस् > प्रा० ई० ग्नह् > यंग० अवे० ग्नो (γnō), सं० घ्नः (तु० वृत्रघ्नः), तु० ग्री० एपेफ्नोन् ।

(ग) भारो० घ् और घ्व् > हि० ई० घ् > प्रा० ई० ग् > गा० अवे० ग् > यंग० अवे० ग़् (दो स्वरों के मध्य में आने पर) । यथा—

भारो० द्लृघोस् > हि० ई० दृघ् > प्रा० ई० दर्ग > गा० अवे० दरॅग् > यंग० अवे० दरॅग़, तु० सं० दीर्घ, हिट्टा० दलुग, ग्री० दोलिखोस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(घ) भारो० घ् और घ्व्>हि० ई० घ्>प्रा० ई० ग्>गा० अवे० ग्>यंग० अवे० ग् (दो स्वरों के मध्य में, यदि इसके तुरन्त पूर्व कोई आनुनासिक या ऊष्म-वर्ण (z) आता है तो) । यथा—

भारो० घेङ्घो>हि० ई० झ़ङ्घ>प्रा० ई० ज़ङ्ग>अवे० ज़ङ्ग, तु० सं० जंघा, गाँथ० गग्ग 'मैं जाता हूँ' ।

१८—भारो० घ् और घ्व् के बाद इ/ई, ए/ए (e/ē), य् आने पर घ्, घ्व्> हि० ई० झ्>प्रा० ई० ज्>गा० अवे० ज्, यंग० अवे० ज्/ज़्, तु० सं० ह् (∠*झ्), प्रा० फा० ज़् ।

(क) शब्दादि में हि० ई० झ्>प्रा० ई० ज़्, गा० अवे० ज्, यंग० अवे० ज् । यथा—

भारो० घ्वेन्ति>हि० ई० झन्ति>यंग० अवे० जइन्ति, तु० गा० अवे० अजाँन्, सं० हन्ति, प्रा० फा० अजनम्, तु० ग्री० थेइनो ।

(ख) दो स्वरों के मध्य में हि० ई० झ्>प्रा० ई० ज्>गा० अवे० ज्, यंग० अवे० ज् । यथा—

भारो० घेघ्वेति>हि० ई० धझति>यंग० अवे० दज़इति, सं० दहति, तु० गाँथ० दग्स् ।

भारो० ओघ्विस्>हि० ई० ओझिश्>यंग० अवे० अझ़िश्, सं० अहिः, ग्री० ओफिस् ।

(ग) परन्तु कभी-कभी दो स्वरों के मध्य में आने पर ज् यंग० अवे० में भी ज् ही रहता है यदि ज् से पूर्व अनुनासिक या ज़् आये तो । यथा—

भारो० लेङ्घ्वेति>हि० ई० रञ्झति>यंग० अवे० रँन्जइति, तु० सं० । रंहते ।

१९—भारो घ्व्-घ्व्व् (ghw, ghʷw)>हि० ई० घ्व्>प्रा० ई० ग्व्>गा० अवे० ग्व्, यंग० अवे० व् । यथा—

हि० ई० रघ्वी>प्रा० ई० रग्वी >, यंग० अवे० रँवी, तु० सं० रघ्वी—लघ्वी, तु० ग्री० एलखुश् (elakhus) ।

हि० ई० ध्रुघ्वन्त्>प्रा० ई० द्रुग्वन्त्>गा० अवे० द्रँग्वन्त्>यंग० अवे० द्रवन्त्, तु० सं०*द्रुघ्वन्त ।

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ६

अवेस्ता भाषा में भारोपीय दन्त्य एवं ओष्ठ्य वर्ग

(१) भारो० त् > हि० ई० त्>प्रा० ई० एवं अवे० त् (स्वरपूर्व एवं ऊष्मवर्ण के बाद), थ् (व्यञ्जन पूर्व)। यथा—

भारो० तोम् > हि० ई०/प्रा० ई० तम् > यंग० अवे० तॅम्, गा० अवे तॉम्, तु० सं० तम्, ग्री० तोन्, हिट्टा० तन्, गॉथ० पन।

भारो० एस्ति>हि० ई० अस्ति > अवे० अस्ति, प्रा० फा० अस्तिय्, सं० अस्ति, ग्री० एस्ति, गॉथ० इस्त्।

भारो० इस्तोस्>हि० ई० इश्तस>प्रा० ई० इश्तह् > अवे० इश्तो (iš̆tō) सं० इष्टः।

भारो० त्>हि० ई० त्>प्रा० ई० थ् >अवे० थ्। यथा—

भारो० पुत्लोस्>हि० ई० पुत्रस्>प्रा० ई० पुथ्रह्>अवे० पुथ्रो (puθrō), प्रा० फा० पुस्र (पुस्स), सं० पुत्रः।

भारो० त्रेयेस् > हि० ई० त्रयस्>अवे० थ्रायो (θrāyō) तु० सं० त्रयः, ग्री० त्रेइस्, लै० त्रेस् (trēs)।

भारो० त्वेम् (twēm)>हि० ई० त्वाम्>अवे० थ्वम् (θwam), तु० प्रा० फा० थ्वाम्, सं० त्वाम्।

(२) भारो० त्स्>हि० ई० त्स्>प्रा० ई० स्स्>अवे० स्। यथा—

भारो० मत्स्यो>हि० ई० मत्स्य>प्रा० ई० मस्य यंग० अवे० मस्य 'मछली', तु० सं० मत्स्य।

(३) भारो० त्स्त् (थ्)>हि० ई० त्स्त्>प्रा० ई० स्त् > अवे० स्त्, तु० प्रा० फा० स्त्, ग्रीक स्त्, सं० त्त्/त्थ्। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० उत्स्त्मॢमो>हि० ई० उत्स्तम>प्रा० ई० उस्तम>अवे० उस्तॅम्, तु० सं० उत्तम, तु० ग्रीक हुस्ततोस् ।

भारो० वोइत्स्थ>हि० ई० वइत्स्थ>अवे० वोइस्त (voista), तु० सं० वेत्थ, ग्रीक ओइस्थ ।

(४) हि० ई० त्र् और त्व्>अवे० थ्र्, थ्व्, लेकिन यदि थ्र्, थ्व् के पूर्व फ्, ख् आता है तो अवे० में यह द्र्, द्व् (δr, δw) हो जाता है ।

यथा—

भारो० प्त्रोस्>हि० ई० प्त्रस्>यंग० अवे० फॅद्रो (fədrō), तु० सं० पितुः ग्री० पत्रोस् ।

भारो० नेप्त्रोस्>हि० ई० नप्त्रस्>यंग० अवे० नॅफ्द्रो (nəfδrō); तु० सं० नप्त्रा (तृतीया) ।

भारो० वेक्व्त्वो>हि० ई० वक्त्व>यंग० अवे० वॅख्द्व 'शब्द', तु० सं० (वै०) वक्त्व 'कहे जाने योग्य ।'

(५) हि० ई० र्त्>प्रा० ई० र्त्>अवे० श् (यदि इसके पूर्व बलाघात हो) । यथा—

भारो० मॅर्त्यो>हि० ई० मर्त्य>अवे० मश्य, तु० सं० मर्त्य, प्रा० फा० मर्तिय ।

(६) भारो० त्/द् (अन्तिम)>अवे० त् (t) । यथा—

भारो० तोद्>हि० ई० तत्>अवे० तत् (tat), सं० तत् ।

भारो० योद्>हि० ई० यत्>अवे० यत्, तु० सं० यत् ।

भारो० भेरेत्>हि० ई० भरत्>अवे० बरत, तु० सं० अभरत् ।

हि० ई० सकृत्>अवे० हकॅरॅत्, तु० सं० सकृत् ।

(७) भारो० थ्>हि० ई० थ्>अवे० थ् । यथा—

भारो० देदोथ (dedōtha)>हि० ई० ददाथ>गा० अवे० ददाथ्, तु० सं० ददाथ ।

भारो० सेप्त्मॢथो>हि० ई० सप्तथ>अवे० हप्तथ्, तु० सं० (वै०) हप्तथ ।

(८) भारो० स्थ्>हि० ई० स्थ्>अवे० स्त् ।

भारो० स्थानो>हि० ई० स्थान>अवे० स्तान, तु० सं० स्थान, ग्री० (डोरिक) दुस्तानोस ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(९) भारो० न्थ्>हि० ई० न्थ्>अवे० न्त्। यथा—

हि० ई० पन्थास्>अवे० पन्ताओ, तु० सं० पन्थाः।

(१०) हि०ई० थ>अवे० थ्, द् (यदि ख्/फ् के बाद आता है तो)। यथा—

भारो० उक्व्थो>हि० ई० उक्थ>अवे० उख्द्, तु० सं० उक्थ।

भारो० वेवोक्व्थ>हि० ई० ववक्थ>अवे० नवख्द्, तु० सं० (वै०) ववक्थ।

(११) भारो० द>हि० ई० द्>प्रा० ई० द्>गा० अवे० द>यंग० अवे० द्/द् (जब दो स्वरों के बीच में आता है तभी द् होता है)। यथा—

भारो० देक्म्>हि० ई० दश>अवे० दश, ग्री० देक।

भारो० देइवोस्>हि० ई० दइवस्>अवे० दएवो (daevō), प्रा० फा० दइव, सं० देवः।

भारो० मधोस्>हि० ई० मदस्>अवे० मदो (moδō), सं० मदः तु० ग्री० मदओ (madaō)।

भारो० वोइद>हि० ई० वइद>अवे० वएद् (vaeδa), सं० वेद, ग्री० ओइद।

(१२) भारो० द्व्>हि० ई० द्व्>प्रा० ई० द्व्। यथा—

हि० ई० द्विष्>गा० अवे० द्विश्, यंग० अवे० द्बिश्/तबिश्, तु० सं० द्विष्।

हि० ई० द्वितीय>गा० अवे० दबित्य, यंग० अवे० बित्य, तु० प्रा० फा० दुवितीय, सं० द्वितीय।

(१३) भारो० ध्>हि० ई० ध्>प्रा० ई० द्>गा० अवे० द>यंग० अवे० द/द् (दो स्वरों के मध्य में द् मिलता है)।

भारो० धृस्>हि० ई० धृष्>अवे० दॅरॅश्, सं० धृष्, ग्री० थर्स्।

भारो० धेधेति (dhedhēti)>हि० ई० दधाति>गा० अवे० ददाइति, यंग० अवे० ददाइति, तु० सं० दधाति; ग्री० तिथेसि (tithesi), गॉथ० गदेप्स् (gadeps)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० इधि>हि० ई० इधि>गा० अवे० इदी, यंग० अवे० इदि, तु० प्रा० फा० इदिय्, सं० इहि, ग्री० इथि।

भारो० ऋध्वोस्>हि० ई० ऋध्वस्>गा० अवे० अॅरॅद्वो (ərədvō), यंग० अवे० अॅरॅद्वो (ərədvō), तु० सं० ऊर्ध्वः।

(क) हि० ई० ध्न्>प्रा० ई० द्न्>अवे० न्। यथा—

भारो० बुध्नो>हि० ई० बुध्न>प्रा० ई० बुद्न>गा० अवे० बूनोइ (būnoi), यंग० अवे० बुनॅम्, तु० सं० बुध्न।

(१३) हि० ई० ध् कभी-कभी अवेस्ता में थ् हो जाता है। यथा—

हि० ई० धधान>अवे० दथान, तु० सं० दधान।

ओष्ठय वर्ग

(१४) भारो० प्>हि० ई० प्>प्रा० ई० प्>अवे० प्। यथा—

भारो० अपो>हि० ई० अप>अवे० अप, सं० अप, ग्री० अपो।

भारो० एपि>हि० ई० अपि>अवे० अइपि, सं० अपि, ग्री० एपि।

भारो० पुत्लोस्>हि० ई० पुत्रस्>अवे० पुथ्रो (puθrō), प्रा० फा० पुस्र, सं० पुत्रः।

(१५) भारो० प्>हि० ई० प्>प्रा० ई० फ्>अवे० फ् (यदि त् के अतिरिक्त अन्य सभी व्यञ्जन के पूर्व आता है तो)। यथा—

भारो० प्रो>हि० ई० प्र>अवे० फ्र / फ्रा, तु० प्रा० फा० फ्र, सं० प्र, ग्री० प्रो, लै० प्रो, गॉथ० फ्र।

भारो० प्त्> अवे० प्त् (त् से पूर्व प् अवे० में फ् नहीं होता है)। यथा—

भारो० सेप्तम्>अवे० हप्त, सं० सप्त, ग्री० हेप्त, लै० सेप्तेम्।

भारो० प्तेत्>हि० ई० प्तत्>यंग० अवे० प्तत्, तु० सं० अपप्तत्, ग्री० एप्तोमेन्।

(१७) भारो० फ्>हि० ई० फ्>प्रा० ई० फ्>अवे० फ्। यथा—

भारो० कोफो (k̂opho)>हि० ई० शफ>अवे० सफ, तु० सं० शफ, प्रा० अंग्रे० होफ् (hōf)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(क) भारो० फ्> हि० ई० फ्>प्रा० ई० प्>अवे० प् (ऊष्म वर्ण के बाद आने पर)। यथा—

भारो० स्फृरेत्>हि० ई० स्फृरत्>अवे० स्परत्, तु० सं० (अ) स्फुरत्।

(१८) भारो० ब्>हि० ई० ब्>प्रा० ई० ब्>अवे० ब्। यथा—

भारो० प्रोब्दो>अवे० फ्रब्द, तु० सं० उपब्द, तु० ग्री० एपिब्दइ।

(भारोपीय भाषा में ब् ध्वनि बहुत कम मिलती है इसी से अधिकतर प्रा० ई० ब् भारो० भ् से आया हुआ दिखाया जाता है)। यथा—

भारो० भ्राता>हि० ई० भ्राता>अवे० ब्राता, सं० भ्राता, ग्री० फ्रातेर् (phrātēr)।

भारो० भेरेति>हि० ई० भरति>अवे० बरइति, सं० भरति, ग्री० फेरेइ।

भारो० म̥भि> हि० ई० अभि>अवे० अवि, अओइ, सं० अभि, ग्री० अम्फि, लै० अब्।

भारो० ग्वोल्भो>हि० ई० गर्भ, प्रा० ई० गर्ब, यंग० अवे० गरॅव (garəwa), तु० सं० गर्भ, तु० ग्री० अदेल्फ़ोस्।

(क) ऊष्मवर्ण या अनुनासिक के बाद आने वाले भ् का अवेस्ता में ब् हो जाता है। यथा—

हि० ई० खुम्भ>अवे० ख़ुम्ब, तु० सं० कुम्भ।

(१९) भारो० भ् का अवे० में कभी-कभी फ़् मिलता है। यथा—

अवे० नाफ़् 'नाभि' तु० सं० नाभि।

अवे० जफ़् 'गहरा'>हि० ई० जभ्र, जभि, तु० सं० गभीर 'गहरा'।

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ७

अवेस्ता भाषा में भारोपीय अनुनासिक वर्ण

भारोपीय अनुनासिक वर्ण—

भारोपीय भाषा में पाँच अनुनासिक वर्ण मिलते हैं। ञ्, ङ्, ङ्व्, न्, म्

(n̂, ŋ, n, ŋʷ, m)

भारो० न् का तालव्य वर्ग क्, ख्, ग्, घ् के सामने ञ् हो जाता है और कण्ठ्य वर्ग क्, ख्, ग्, घ् के सामने ङ् हो जाता है तथा कण्ठ्योष्ठ वर्ग क्व् ख्व्, ग्व्, घ्व् के सामने ङ्व् (ŋʷ) हो जाता है।

(१) भारो० ञ् अवे० में लुप्तप्राय है। इसके स्थान पर अवे० में ˪ मिलता है अर्थात् अवे० में अपने से पूर्व स्वर का अनुनासिक हो जाता है।

यथा—

भारो० एञ्क् > हि० ई० अञ्श् (an̂š) > अवे० अस् (as), तु० सं० अंश,

ग्री० एङ्क्।

भारो० एञ्घेस् > हि० ई० अञ्झस > अवे० अज़ो (azō), सं० अंहस्, लै०

अन्गोर।

(२) भारो० ङ् (ङ्व्) (ŋʷ) > हि० ई० ङ् > अवे० ङ्, तु० सं० ङ्।

यथा—

भारो० घेङ्घो > हि० ई० झङ्घ > अवे० जङ्ग, तु० सं० जंघा, गॉथ० गग्ग 'मैं जाता हूं'।

(क) भारो० ङ् (और ङ्व् ŋʷ) > हि० ई० ञ् (तालव्य वर्ण से पूर्व आने पर) > अवे० न्। यथा—

भारो० पेङ्क्वे (पेङ्व्क्वे) > हि० ई० पञ्च > अवे० पन्च, तु० सं० पञ्च, ग्री० पेन्ते (pénte), लै० क्विन्क्वे, गॉथ० फिम्फ्, आधु० अंग्रे० फाइव (five)।

(३) भारो० न् > हि० ई० न् > अवे० न्। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो॰ नेर् (nēr) >हि॰ ई॰ ना > अवे॰ ना, तु॰ सं॰ ना, ग्री॰ अनेर् (anēr) ।

भारो॰ नोम्न (nōmn̥) > हि॰ ई॰ नाम>अवे॰ नाम (nama); तु॰ प्रा॰ फा॰ नाम, सं॰ नाम, लै॰ नोमेन् (nōmen), ग्री॰ ओनोम् ।

भारो॰ मेनेस् > हि॰ ई॰ मनस् > अवे॰ मनो, तु॰ सं॰ मनः, ग्रीक मेनोस्

(५) भारो॰ म्>हि॰ ई॰ म्>अवे॰ म् । यथा—

भारो॰ मे (mē)>हि॰ ई॰ मा > प्रा॰ ई॰ मा>अवे॰ मा, तु॰ प्रा॰ फा॰ मा, सं॰ मा; ग्री॰ मे (me) ।

भारो॰ मातेर् (mātēr)>हि॰ ई॰ मातर्>अवे॰ मातर्, तु॰ सं॰ मातरः; तु॰ ग्री॰ मातेर्, लै॰ मातेर् ।

भारो॰ नोम्न् (nōmn̥)>हि॰ ई॰ नाम>अवे॰ नाम (nama), तु॰ प्रा॰ फा॰ नाम, सं॰ नाम, लै॰ नामेन्, ग्री॰ ओनोम् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ८

अवेस्ता भाषा में भारोपीय अर्द्धस्वर एवं स्वर

(१) भारो॰ य्>हि॰ ई॰ य्>अवे॰ य् । यथा—

भारो॰ योस्>हि॰ ई॰ यस् >गा॰ अवे॰ यो (yō)/यस्चा, यंग॰ अवे॰ यो (yō)/, यस्च, तु॰ प्रा॰ फा॰ यदि, सं॰ यः, ग्री॰ होस् ।

भारो॰ युस्>हि॰ ई॰ युश्>गा॰ अवे॰ यूश्, गा॰ अवे॰ एवं यंग॰ अवे॰ यूज़्ॅम्, तु॰ सं॰ यूयम् ।

हि॰ ई॰ युवन्>यंग अवे॰ य्वन्, यवन्, सं॰ युवन्, लै॰ जुवेन् ।

(२) हि॰ ई॰ अय् के तुरन्त बाद यदि म् आता है तो गा॰ अवे॰ में अय् का अयँ हो जाता है और यंग॰ अवे॰ में अए (ae) हो जाता है । यथा—

भारो॰ एयोम्>हि॰ ई॰ अयम् >गा॰ अवे॰ अयाँम्, गा॰ अवे॰ एवं यंग॰ अवे॰ अएम् (aēm), तु॰ सं॰ अयम् ।

भारो॰ वेयोम्>हि॰ ई॰ वयम्>गा॰ अवे॰ और यंग॰ अवे॰ वएम् (vaēm), तु॰ प्रा॰ फा॰ वयम्, सं॰ वयम्, तु॰ गॉथ॰ वेइस्, हिट्टा॰ वेस् ।

परन्तु कुछ शब्दों में हि॰ ई॰ अय-अवे॰ में अए (ae) नहीं होता है । यथा— हि॰ ई॰ अयन्>अवें॰ अयॅन् ।

हि॰ ई॰ अपतयन्त्>अवे॰ अपतयॅन्, तु॰ सं॰ अपतयन् ।

हि॰ ई॰ अयत् >अवे॰ अयत ।

(३) हि॰ ई॰ अन्तिम य>अवे॰ ए । यथा—

हि॰ ई॰ अस्य>गा॰ अवे॰ अह्या, यंग॰ अवे॰ अहे, सं॰ अस्य, हि॰ ई॰ यस्य>गा॰ अवे॰ येहे, तु॰ सं॰ यस्य ।

(४) हि॰ ई॰ इय् और ईय् >अवे॰ य् । यथा—

भारो॰ यग्नियो (yaĝniyo)>हि॰ ई॰ यज्निय >अवे॰ यस्न्य । (=यस्निय) तु॰ सं॰ यज्ञिय ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० त्रितीयो>हि० ई० त्रितीय>यंग० अवे० थ्रित्य (=थ्रितीय), तु० प्रा० फा० त्रितीय, सं० तृतीय, लै० तेर्तिउस् ।

(५) हि० ई० यम्, इयम्, ईयम्>अवे० इम्/ईम् । यथा—

हि० ई० यम्>अवे० ईम्, सं० यम्, ग्री० होन् (hón) ।

हि० ई० सत्यम्>अवे० हइथीम्, सं० सत्यम् ।

हि० ई० मध्यम्>अवे० मइदिम्, सं० मध्यम्, लै० मिडियम् ।

हि० ई० प्रियम्>अवे० फ्रीम्; सं० प्रियम् ।

(६) भारो० व् (w)>हि० ई० व् (v)>प्रा० ई० व्>अवे० व् । यथा—

भारो० वेयोम्>हि० ई० वयम्>अवे० वएम् (vaēm), तु० प्रा० फा० वयम्, सं० वयम्, तु० गॉथ० वेइस् (weis) ।

भारो० वेघेति (weĝheti)>हि० ई० वझति (važhati)>अवे० वज़इति, तु० सं० वहति, लै० वेहित् ।

भारो० वेसु>हि० ई० वसु>अवे० वोहु, सं० वसु, ग्री० एउ ।

भारो० वेघ् (weĝh)>हि० ई० वझ्>अवे० वज़्, सं० वह्, ग्री० ऐखो (ekhō), लै० वेहो ।

(क) हि० ई० उव्>अवे० व् । यथा—

हि० ई० भुवत्>प्रा० इ० बुवत्>अवे० ब्वत (bvat), तु० सं० भुवत् ।

(ख) हि० ई० श्व्>अवे० स्प् । यथा—

भारो० एक्वोस्>हि० ई० अश्वस्>अवे० अस्पो (aspō), तु० सं० अश्वः लै० एक्वस् ।

हि० ई० व् अवे० में ज़् के बाद आने पर ब् हो जाता है । यथा—

भारो० ज़्वेयेति>हि० ई० झ्वयति>प्रा० ई० ज़्वयति>अवे० ज़्बयति, तु० सं० ह्वयति ।

(७) भारो त्व्>हि० ई० त्व्>प्रा० ई० थ्व्>अवे० थ्व् (θw) । यथा—

भारो० त्वेम् (twēm)>हि० ई० त्वाम्>प्रा० ई० थ्वाम्>अवे० थ्वम्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(θwam), तु० प्रा० फा० थ्ुवाम्, सं० त्वाम्, तु० ग्री० से (sé)।

(८) भारो प्व्>हि० ई० प्व्>प्रा० ई० फ्व्>अवे० फ्। यथा—

हि० ई० आप्वन्तम्>प्रा० ई० आफ़्वन्तम्>अवे० आफ़ॅन्तॅम्।

(९) भारो० स्वो>हि० ई० स्व>अवे० ख्व, तु० प्रा० फा० (ह्) उव, सं० स्व।

हि० ई० सरस्वती>प्रा० ई० हरह्वती>अवे० हरख्वइती, तु० सं० सरस्वती, प्रा० फा० हर(ख्)उवतिश्।

(१०) प्रा० ई० व् अवे० में ओ हो जाता है। यथा—

हि० ई० वित्र>प्रा० ई० विथ्र>यंग० अवे० ओइथ्र।

प्रा० ई० हव्य>यंग० अवे० हओय, तु० सं० सव्य।

(११) भारो० र् और ल्>हि० ई० र्>प्रा० ई० र्>अवे० र्। यथा—

भारो० पेरि>हि० ई० परि>अवे० पइरि, प्रा० फा० परि, सं० परि, ग्री० पेरि।

भारो० प्रो<हि० ई० प्र>अवे० फ्र, सं० प्र, ग्री० प्रो।

भारो० लेउकेस्>हि० ई० रउचस्>अवे० रओचो, प्रा० फा० रउच 'दिन' तु० आ० फा० रोज़, सं रोचः 'चमकदार,' लोचन 'आँख', ग्री० लेउकोस् 'सफेद'।

भारो लेइक्वेयेति>हि० ई० रइचयति>अवे० रएचयइति (raēcayaiti), तु० सं० रेचयति, ग्री० लेइपो (leipō)।

(१२) अवे० में क्, त्, प् के पूर्व र्>ह्र, (यदि इससे पूर्व आने वाला स्वर सस्वर हो तो)। यथा—

मर्क>अवे० मह्रक 'मृत्यु या विनाश।'

(१३) हि० ई० ऋ>अवे० अॅर् (ər)। यथा—

हि० ई० वृक>अवे० वॅह्रक् 'शरीर' (∠*वॅरप्), तु० सं० वृक, ग्री० लुकोस्। गॉ० वुल्फ्स्।

(१४) अवे० में० हिन्द-ईरानी र्त्व>श् और कभी-कभी र्त् ही मिलता है।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

यदि बाद में आने वाला स्वर सस्वर है तो र्व् का श् हो जाता है। यदि सस्वर नहीं है तो र्व् का र्व् ही रहता है । यथा—

भारो॰ मृतोस् (mr̥tós)>अवे॰ मॅरॅतो

भारो॰ नमृतोस् (n̥mŕ̥tos) > अवे॰ *अमॅरॅतो, अमॅशो ।

(क) हि॰ ई॰ वृर्>अवे॰*र्व्>उर्व् (^{u}rv) । यथा—

व्रात > अवे॰ उर्वात (^{u}rvāta) ।

(१५) हि॰ ई॰ ॠर्>अवे॰ र् (कभी-कभी) । यथा—

हि॰ ई॰*आतृरॅम्>अवे॰ आत्रॅम् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ९

अवेस्ता के ऊष्म वर्ण

भारोपीय ऊष्म वर्ण हैं—स्, ज़्, थ़्, द़् । मुख्य रूप से स् ही ऊष्म वर्ण है और भारोपीय स् का सघोष ध्वनि के पूर्व सदैव ज़् हो जाता है। ऊष्म ध्वनि के स्थान पर दन्त्य स्पर्श आने पर भारोपीय स्, ज़् का थ़्, द़् हो जाता है।

(१) भारो० स्>हि० ई० स्>प्रा० ई० स्>अवे० स् (क्, त्, प् से पूर्व)। यथा—

भारो० स्कोम्भो>हि० ई० स्कम्भ>अवे० स्कॅम्ब, तु० सं० स्कम्भ।

भारो० एस्ति>हि० ई० अस्ति>अवे० अस्ति, तु० प्रा० फा० अस्तिय्, सं० अस्ति, ग्री० एस्ति, लै० एस्त्।

भारो० स्थान>अवे० स्तान, सं० स्थान।

भारो० स्पेक>हि० ई० स्पश्>अवे० स्पश्, तु० सं० स्पश्, लै० स्पेक्स् (spex)।

भारो० स्फृर्>अवे० स्पर्, सं० स्फुर्।

(२) भारो० स्>हि० ई० स्>अवे० ह् (साधारणतया) परन्तु दो स्वरों के मध्य में आने पर अधिकतर ङ्ह् हो जाता है। यथा—

भारो० सोस्>हि० ई० सस्>अवे० हो (hō), सं० सः, ग्री० हो।

भारो० सेप्त्म्>हि० ई० सप्त>अवे० हप्त, सं० सप्त, ग्री० हेप्त।

भारो० सु०>हि० ई० सु>अवे० हु, तु० सं० सु, ग्री० हु, हिट्टा० असु।

भारो० स्म्मो>हि० ई० सम>अवे० हम, तु० प्रा० फा० हम-, सं० सम, ग्री० हमोस्, गॉथ० सुम्स्।

भारो० मेनेसोस्>हि० ई० मनसस्>अवे० मनङ्हो (manaŋhō), सं० मनसः, ग्री० मेनेओस्।

भारो० यासाम्>हि० ई० यासाम्>प्रा० ई० याहाम्>अवे० याओङ्हम् (ẙåŋham), तु० सं० यासाम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

दो स्वरों के मध्य में हि० ई० स्र>प्रा० ई० ह्र>अवे० ङ्र्। यथा—

भारो० स्मघेस्लो>हि० ई० सभ्रस्र>प्रा० ई० हज़्ह्र, अवे० हज़्ङ्र् तु० सं० चतस्रः।

भारो० स्>हि० ई० श्>प्रा० ई० श्>अवे० स्। यथा—

भारो पुत्लोस्-क्वे > हि० ई० पुत्रश्-च>प्रा० ई० पुथ्र्स्-च, तु० सं० पुत्रश्च।

(५) भारो० स्>हि० ई० श्>अवे० श्, सं० ष्। यथा—

भारो० स्थिस्थामि>हि० ई० स्थिश्थामि>अवे० हिश्तामि, सं० तिष्ठामि, ग्री० (डोरिक) हिस्तामि, (एटिक/आयोनिक) हिस्तेमि।

भारो० वेक्व्स्यो ($weq^{w}sy\bar{o}$)>हि० ई० वक्ष्या(मि>अवे० वख्श्या, सं० वक्ष्यामि।

(६) हि० ई० में शब्दान्त में आने वाला अस्>प्रा० ई० अह्>अवे० ओ ($\bar{o}$)। यथा—

भारो० मेनेस्>हि० ई० मनस्>प्रा० ई० मनह्>अवे० मनो (manō), तु० सं० मनः, ग्री० मेनोस्।

भारो० लेउकेस्>हि० ई० रउचस्>प्रा० ई० रउचह्>अवे० रओचो (raocō), तु० प्रा० फा० रउच, सं० रोचः, ग्री० लेउकोस्।

(७) प्रा० ई० में शब्दान्त में आने वाला आह्>अवे० आओ ($\mathring{a}$) परन्तु कभी-कभी अ/आ भी मिलता है। यथा—

भारो० नमृतोस् (nmrtōs)>हि० ई० अमृतास्>प्रा० ई० अमृताह>अवे० अमॅशाओ तु० सं अमृताः।

भारो० एक्वोस् (ekwōs)>हि० ई० अश्वास्>प्रा० ई० अस्वाह्>अवे० अस्प, तु० सं० अश्वाः।

(८) भारो० ज़्>हि० ई० ज़्>प्रा० ई० ज़्>अवे० ज़्, सं० में यह लुप्त हो गया है। यथा—

भारो० (ए)ज़्धि>हि० ई० (अ)ज़्धि>अवे० ज़्दी, तु० सं० एधि, ग्री० इस्थि।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो॰ मिज़्धो>हि॰ ई॰ मिज़्ध>अवे॰ मिज़्द, सं॰मीढ, ग्री॰ मिस्थोस्, गाँथ॰ मिज़्दो (mizdō)।

भारो॰ नेज़िदस्थो>हि॰ ई॰ नज़्दथ नज़्स्थ>अवे॰ नज़्दिश्त, तु॰सं॰ नेदिष्ठ (तु॰ आ॰ भा॰ नज़दीक)।

(६) भारो॰ थ्, द्>हि॰ ई॰ स्, ज़्>अवे॰ स्, ज़्। यथा—

भारो॰ ऋक्थोस्>हि॰ ई॰ ऋश्शस्>अवे॰ अरँशो (arəšō) तु॰ सं॰ ऋक्षः, ग्री॰ अरक्तोस्, लै॰ उर्सुस्।

भारो॰ तेक्थोम् > हि॰ ई॰ तश्शन्>अवे॰ तशन्, तु॰ सं॰ तक्षन्, ग्री॰ तेक्तोन्, लै॰ तेखो।

भारो॰ घ्वदेर्>हि॰ ई॰ घ्ज़र>अवे॰ ग्ज़र् (γžar), सं॰ क्षर्, ग्री॰ फ्थेइरो (phthérō)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १०

रूप-विज्ञान

विभक्ति-प्रत्यय—

अवेस्ता में भारोपीय भाषा परिवार के तीनों लिंग-पुलिंग, स्त्रीलिंग, एवं नपुंसक लिंग मिलते हैं। तीनों वचन—एक वचन, द्विवचन एवं बहुवचन भी हैं। भारोपीय आठों विभक्तियाँ—प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी और सम्बोधन अवेस्ता में भी पाई जाती हैं।

अवेस्ता की निम्नलिखित आकृतिमूलक (morphological) विशेषतायें हैं—

(१) भारो० षष्ठी एवं सप्तमी के द्विवचन में एक समान रूप मिलते हैं, लेकिन अवेस्ता में दोनों विभक्तियों के रूप अलग-अलग हैं। यथा—अवे० ष० अस्पयाओ, सं अस्पयो, तु० सं० ष०-स० अश्वयोः। भारोपीय भाषाओं में अवेस्ता ही ऐसी भाषा हैं जहाँ षष्ठी एवं सप्तमी द्विवचन के रूपों में भिन्नता मिलती है।

(२) अप्रकृति का पंचमी विभक्ति का-त् प्रत्यय अवे० में अन्य प्रकृति के रूपों के साथ भी मिलता है। यथा—अवे० ख़्.ॠ.वत्, सूनत्, तु० सं० क्रत्वः, सूनोः इत्यादि।

(३) अवे० में अ-प्रकृति (stem) के प्रथमा बहुवचन में दो प्रत्यय मिलते हैं। यथा—अवे० अस्पाओ और अस्पाओङ्हो = वै० सं० अश्वासः।

(४) अवे० में अ- प्रकृति से तृतीया-चतुर्थी-पंचमी द्विवचन के रूपों में—इ-का आगम मिलता है जो संस्कृत में नहीं है। यथा—अवे० अस्पएइब्य, तु० सं० अश्वाभ्याम्।

अवेस्ता के विभक्ति प्रत्यय—

एकवचन

प्रथमा विभक्ति—पुलिंग एवं स्त्रीलिंग में अवेस्ता में दो प्रकार के शब्दान्त प्रत्यय मिलते हैं।

(१) स्त्रीलिंग द्वितीय (secondary)

(क) आ/ई प्रकृति एवं

(ख) पु०-स्त्री० न्, र्, स् प्रकृति (stem) के शब्दों के साथ अवेस्ता में शून्य शब्दान्त प्रत्यय (nil ending) होता है। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(क) भारो० एक्वा > हि० ई० अश्वा > गा० अवे० अस्पा, यंग० अवे० अस्प, तु० सं० अश्वा, लै० एक्वा।

भारो० वेस्वी < हि० ई० वस्वी > गा० अवे० वङ्ही, यंग० अवे० वङ्हि तु० सं० वस्वी० तु० ग्री० पोत्निया (pótnia)।

(ख) भारो० क्वोन् > हि० ई० श्वा > गा० अवे० स्पा, तु० सं० श्वा, ग्री० कुओन् (kuōn)। भारो० भ्रातेर् (bhrātēr) > हि० ई० भ्राता > अवे० ब्राता, सं० भ्राता, ग्री० फ्रातेर् (phrātēr)।

भारो० दुस्मेनेस् (dusmenēs) > हि० ई० दुज़्मनास् > गा० अवे० दुज़्मनाओ यंग० अवे० दुश्मनाओ, (तु० आ० फा० दुश्मन), तु० सं० दुर्मनाः, ग्री० दुस्मेनेस् (dusmenēs)।

(२) अवेस्ता में सभी स्वर एवं व्यञ्जन शब्दों में शब्दान्तप्रत्यय-स् होता हैं (नं० १ में आये हुए आ/ई शब्दों को छोड़कर)। यथा—

भारो० एक्वोस् > हि० ई० अश्पस् > अवे० अस्पो (aspō), सं० अश्वः, ग्री० हिप्पोस्, लै० एक्वस् (equus)।

भारो० ग्वोउस् > हि० ई० गाउश् अवे० गाउश, सं० गौः, ग्री० बोउस् (boûs)।

भारो वोक्वस् (wōqʷs) > हि० ई० वाक्श् > अवे० वाख्श्, सं० वाक्, ग्री० ओप्स् (óps), लै० वोक्स (vōxs)।

(३) द्वितीया विभक्ति—पुंलिग एवं स्त्रीलिंग का प्रत्यय-म्/-अम् है।

म् का प्रयोग स्वर के बाद एवं-अम् (< भारो० m̥म्) का प्रयोग व्यञ्जन के बाद होता है। यथा—

भारो० एक्वोम् > हि० ई० अश्वम् > अवे० अस्पॅम्, सं० अश्वम्, ग्री० हिप्पोन्, लै० एक्वम् (eguum)

भारो० ओघ्विम् > हि० ई० अझिम् > अवे० अज़ीम्, सं० अहिम्, ग्री० ओफिन्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० क्वोनुमम् (k̂wōn-mm) > हि० ई० श्वानम् > अवे० स्पानॅम्, सं० श्वानम्, तु० ग्री० कुन (kúna)।

भारो० पोद्मम् (pōdmm) > हि० ई० पादम् > अवे० पाद॑म्, सं० पादम्, तु० ग्री० पोद लै० पेदेम्।

(४) नपुंसकलिंग एकवचन प्रथमा-द्वितीया—इसमें भी दो प्रकार के प्रत्यय लगते हैं—

(क) ओ प्रकृति के साथ-म् प्रत्यय होता है।

(ख) अन्य सभी में शून्य प्रत्यय होता है। यथा—

(क) भारो० युगोम् > हि० ई० युगम्, तु० अवे० स्श.ग्र॑म्, तु० सं० युगम् ग्री० जुगोन्, लै० इउगुम्।

(ख) भारो० वेसु > हि० ई० वसु > अवे० वङ्हु, सं० वसु।

भारो० मेधु > हि० ई० मधु > अवे० मद्, सं० मधु०, ग्री० मेथु (méthu) प्रा० चर्चस्लाविक मेदुँ (medŭ)।

भारो० मेघ्नत् > हि० ई० मझ्त् > अवे० मजत्, सं० महत्।

(५) **तृतीया एकवचन**—अप्रत्यय; यथा—

भारो० एक्वा > हि० ई० अश्वा, अश्वया > अवे० अस्पा, अस्पया, सं० अश्वा, अश्वया, तु० ग्री० क्रुफ।

अवेस्ता में यही एक प्रत्यय है परन्तु संस्कृत में अन्य भी हैं। यथा—ना प्रत्यक्ष अग्निना में,-इना वृकेणा में।

(६) **चतुर्थी एकवचन**—अइ प्रत्यय। यथा—

भारो० एक्वोइ (ek̂wōi) > हि० ई० अश्वाइ > अवे० अस्पाइ, ग्री० हिप्पोइ, तु० सं० अश्वाय।

भारो० कुनइ > हि० ई० शुनइ > अवे० सूने, सं० शुने, तु० ग्री० इदमेनइ।

भारो० मोर्त्योइ (moretyōi) > हि० ई० मर्त्याइ > अवे० मश्याइ, सं० मर्त्याय, तु० ग्री० लुकोइ (lukoi)।

(७) **पंचमी एकवचन**—अत् (अद्) प्रत्यय। यथा—

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० व्ल्̥क्वोद (wl̥qʷod) > हि० ई० वृकाद > अवे० वॅह्रकात् (vəhrkāt), सं० वृकात्, लै० लुपो (द्) lupō (d)।

भारो० कुनोस् > अवे० सूनत्, सं० शुनः ग्री० कुनोस्।

भारो० क्रत्वोस् > अवे० ख्रथ्वत्, सं० क्रत्वः।

संस्कृत में-अत् एवं अस्/ओस् २ प्रकार के प्रत्यय मिलते हैं। ओ—प्रकृत्यान्त शब्दों के साथ-अत् प्रत्यय एवं अन्य सभी के साथ-एस्/ओस् लगता है पर अवेस्ता में सभी के सा-अत् (at) प्रत्यय ही लगता है।

(८) **षष्ठी एकवचन**—इसमें दो तरह के प्रत्यय हैं—

(१) -ओ प्रकृति के शब्दों के साथ स्यो/सो प्रत्यय होता है।

(२) अन्य सभी के साथ-एस्/-ओस्/-स् प्रत्यय लगते हैं। यथा—

(१) भारो० एक्वोस्यो/-सो > हि० ई० अश्वस्य > यंग० अवे० अस्पहे, गा० अवे० अस्पह्या, सं० अश्वस्य, ग्री० हिप्पोइओ।

(२) भारो० कुनोस् > अवे० सूनो (sūno), सं० शुनः, ग्री० कुनोस्।

भारो० क्रतेउस् > हि० ई० क्रतउस् > गा० अवे० ख्रतॉउश्, सं० क्रतोः, तु० ग्री० पेखेओस् (pekheos)।

(९) **सप्तमी एकवचन**—(क) इ प्रत्यय तथा कभी कभी
(ख) शून्य प्रत्यान्त (nil ending) भी होता है। यथा—

(क) भारो० एक्वो > हि० ई० अश्वइ > अवे० अस्पे, अस्पए,-(च) (aspae-ca), सं० अश्वे, ग्री० हिप्पोइ।

भारो० विकि > हि० ई० वीशि > अवे० वीशि, सं० विशि, तु० ग्री० फुलकि (phulaki)।

भारो० मेनेसि > हि० ई० मनसि > अवे० मनहि, सं० मनसि, ग्री० मेनेइ

(ख) भारो० वेसेउ (weseu > हि० ई० वसाउ > गा० अवे० एवं यंग० अवे० वङ्हाउ, सं० वसौ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० एयेन् (eyen) > हि० ई० मायान् > अवे० अयन् (ayan), तु० सं० उदन्, ग्री० दोमेन् ।

(९) संबोधन

पुंलिग-स्त्रीलिंग एकवचन—इसमें शून्य प्रत्यय (nil ending) होता है। केवल प्रकृति शब्द का ही प्रयोग सम्बोधन में किया जाता है। प्रत्यय नहीं लगता है।-आ प्रकृत्यान्त शब्द में हिन्द-ईरानी में-अइ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। यथा—

हि० ई० अश्वइ, तु० सं० अश्वे, अवे० दएने (daene)

द्विवचन

(१०) प्रथमा द्वितीया-संबोधन पुंलिग-स्त्रीलिंग—

(१) ओ प्रकृति (stem) के साथ-ओउ;

(२) आ प्रकृति (stem) के साथ-इ प्रत्यय (ending),

(३) व्यञ्जनात्मक प्रकृति के साथ अवे० में -अ प्रत्यय;

(४) इ, उ प्रकृति के साथ ई, ऊ प्रत्यय लगता है।

यथा—

भारो० घेस्तोउ > हि० ई० झ़स्ताउ > अवे० जस्त, जस्ताँ, जस्तो, तु० सं० हस्तौ, (वै०) हस्ता, ग्री० लुको lukō) ।

(२) भारो० एक्वइ > हि० ई० अश्वै > अवे० अस्पे, तु० सं० अश्वे; तु० ग्री० खोरइ (khôrai) ।

(३) भारो० नेरे > हि० ई० नर > अवे० नर, तु० सं० नरौ; (वै०) नरा, ग्री० अनेरे, अन्द्रे ।

(४) भारो० ओघ्वी > हि० ई० अभी > अवे० अजि, सं० अही, तु० लिथु० नक्ति, ग्री० ओफी ।

भारो० भाघू > हि० ई० भाझ़ू > अवे० बाजु; सं० बाहू; तु० लिथु० सूनु ग्री० पेखी (pekhee)

(११) नपुंसकलिग द्विवचन—इसमें प्रथमा; द्वितीया एवं सम्बोधन विभक्ति के साथ—ई प्रत्यय होता है। यथा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० वेसु + ई > वेस्वी > हि० ई० वस्वी > यंग० अवे० वङ्हि, सं० वस्वी (तु० ऋग० उर्वी), वसुनी।

(१२) तृ०-च० पं० द्विवचन का शब्दान्त प्रत्यय भारो० भ्योम् > हि० ई० भ्याम् (तु० सं० भ्याम्) > अवे०-ब्यम् (byam) और ब्या > यंग० अवे०-ब्य। अवेस्ता में अधिकतर रूप-ब्य प्रत्ययान्त ही हैं केवल एक ही रूप ऐसा मिलता है जो-भ्याम् प्रत्ययान्त है—ब्रवत्ब्यम् (bravatbyam)।

भारो० घेस्तोभ्याम् > अवे० जस्तोइब्य (zastoibya), सं० हस्ताभ्याम्।

गा० अवे० अशिव्या, तु० सं० अक्षिभ्याम्।

यंग० अवे० दोइ.थ्राब्य तु० सं० नेत्राभ्याम्।

(१३) **षष्ठी-सप्तमी द्विवचन**—भारो० में में ष०-स० द्विवचन का प्रत्यय एक ही है परन्तु अवेस्ता में दोनों विभक्तियों के प्रत्यय अलग अलग हैं।

भारो० ष-स० का प्रत्यय-ओउ या-ओउस् तु० लिथु० द्वेजौस्, द्वेजौ, तु० सं० हस्तयोः और अवे० जस्तयो (zastayo)

अवेस्ता में षष्ठी द्विवचन का प्रत्यय-आओ (å) है जो < हि० ई०/प्रा० ई० आउ > भारो० ओउ (ōu)।

अवे०ष०द्वि०पस्वाओ < हि० ई० पश्वाउ < भारो० पेक्वोउ (pekwōu)।

अवेस्ता षष्ठी एवं सप्तमी द्विवचन में अलग-अलग रूप मिलते हैं जब कि भारोपीय भाषा परिवार की अन्य भाषाओ में षष्ठी एवं सप्तमी द्विवचन का रूप एक समान होता है।

बहुचनान्त प्रत्यय

(१४) भारो० में प्रथमा एवं संबोधन बहुवचन पुलिंग एवं स्त्रीलिंग का प्रत्यय-एस् है जो आ प्रकृति (stem) के साथ-आस् एवं-ओ प्रकृति के साथ ओस् (ōs) हो जाता है। अतः भारो० आस् / ओस् (ōs) > हि० ई० आस् > अवे० आओ (å) पर कभी-कभी अवेस्ता में आ (गा० अवे० आ, यंग० अवे० अ) मिलता है। यथा—

भारो० एक्वो + एस् > भारो० एक्वोस् (ekwōs) > हि० ई० अश्वास् > अवे० अस्प, अस्पाओ, सं० अश्वाः, तु० गॉथ० वुल्फोस् (wulfōs)।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो॰ एक्वा + एस्>भारो॰ एक्वास्>हि॰ ई॰ अश्वास्, तु॰ अवे॰ दअेनाओ, हएन (haēna), सं॰ अश्वाः, गॉथ॰ गिबोस् (gibōs)।

भारो॰ नेरेस्>हि॰ ई॰ नरस्>अवे॰ नरो, सं॰ नरः, ग्री॰ अनेरेस्।

(क) भारो॰ ओ एवं आ प्रकृति के साथ हि॰ ई॰ में-आस् प्रत्यय के अतिरिक्त -आसस् प्रत्यय भी मिलता है, जो अवे॰ आओङ्हो (o̊ŋhō) हो जाता है, वै॰ सं॰ में -आसः मिलता है। यथा—हि॰ ई॰ अश्वा+अस्+अस्>हि॰ ई॰ अश्वासस्>अवे॰ अस्पाओङ्हो (aspaŋhō), सं॰ (वै॰) अश्वासः।

(ख) भारो॰ अन्य सभी प्रकृति (stems) के साथ एस्>हि॰ ई॰ अस्>अवे॰ ओ (ō)। यथा—

भारो॰ दुस्मेनेस्+एस्>हि॰ ई॰ दुज़्मनसस्>अवे॰ दुश्मनङ्हो (dušmanŋho), सं॰ दुर्मनसः, ग्री॰ दुस्मेनेएस् (dusmenées)।

भारो॰ नेरेस्>हि॰ ई॰ नरस्>अवे॰ नरो (narō), सं॰ नरः, ग्री॰ अनेरेस्

(१५) द्वितीया बहुवचन पुल्लिंग-स्त्रीलिंग

भारोपीय प्रत्यय-न̥स् (व्यञ्जन वर्ण के बाद आता है) और-न्स् (स्वर के बाद आता है)।

भारो॰ न̥स (n̥s)>हि॰ ई॰ अस्>अवे॰ ओ (ō)।

भारो॰ न्स्>हि॰ ई॰ न्स् (यह अ/आ, इ/ई, उ/ऊ, ऋ के बाद आता है। हि॰ ई॰ अ/आन्स्>अवे॰ अस् (ą̄s), आन्ग्; हि॰ ई॰ इन्स्/ईन्स्>अवे॰ इश्/ईश्;

हि॰ ई॰ उश्/ऊन्श्>अवे॰ उश्/ऊश्; हि॰ ई॰ ऋन्स्> अवे॰ रन्श् (ranš)।

यथा—

भारो॰ मोर्त्योन्स> हि॰ ई॰ मर्त्यन्स्>अवे॰ मश्यस्च (mašyasča),

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

गा० अवे० मश्याँन्ग्, तु० सं० मर्त्यान्, मर्त्यांश्च, तु० प्रा० फा० मर्तिया, तु० ग्री० लुकोन्स् (lukons) ।

भारो० नृन्स् > गा० अवे नॅरस् (nəras), सं० नृन् ।

भारो० पेक्व्नस् > हि० ई० पश्वस् > यंग० अवे० पश्वो (pasvo), तु० सं० (वै०) पश्वः, तु० ग्री० हुइअस् ।

भारो० विक्नस् > हि० ई० विशस् > अवे० विसो (viso), सं० विशः

(क) भारोपीय स्त्रीलिंग-आ प्रकृति (stem) बहुत सी बोलियों में-आस् प्रत्यय दिखाता है। यथा—

भारो० एक्वास् > हि० ई० अश्वास् > तु० अवे० गएथाओ (gaθea) सं० अश्वाः, गॉथ० गिबोस् (gibos) ।

(१६) प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन नपुंसक लिंग बहुवचन

(क) ओ प्रकृति (stem) के शब्दों के लिये आ प्रत्यय होता है। यथा—

भारो० युगा > हि० ई० युगा > अवे*युगा (तु० गा० अवे० अका), सं० (वै०) युगा, लै० इउग, ग्री० ज़ुग ।

(ख) भारो० इ/उ प्रकृति के लिए (ə) श्वा प्रत्यय (ending) लगता है जो इ/उ के साथ मिलकर दीर्घ हो जाता है। यथा—

भारो० प्लूलु + अँ (ə) > भारो० प्लूलू > हि० ई० पुरू > गा० अवे० पोउरू, तु० यंग० अवे० वोहु-च, सं० (वै०) पुरू, वसू ।

(ग) व्यञ्जन प्रकृति के साथ भारोपीय अँ (ə) प्रत्यय होता है जो > हि० ई० इ > गा० अवे० ई, यंग० अवे० इ । अवेस्ता नपुंसक लिंग बहुवचन में अधिकतर शून्य प्रत्यय मिलता है। यथा—

भारो० नोमेनँ (nomenə) > हि० ई० नामानि > यंग० अवे० नामन् (nasman), सं० नामानि, लै० नोमिन ।

भरो० ऋतोवेनँ > हि० ई० ऋतवनि > अवे० अशओनि, तु० सं० बामानि ।

(१७) तृतीया बहुवचन—का-भिस् प्रत्यय है। यथा—

भारो० पेद्भिस् > हि० ई० पद्भिश् > गा० अवे० पदॅबीश्, सं० पद्भिः ।

भारो० वेसुभिस् > हि० ई० वसुभिश् > यंग० अवे० वङ्हीश्, सं० वसुभिः ।

(१८) चतुर्थी-पंचमी बहुवचन

भारो० भ्योस् > हि० ई० भ्यस् > अवे० व्यस्, ब्यो (byo) ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० पेद्भ्योस् > हि० ई० पद्भ्यस् > यंग० अवे० पद्ब्यस्च, सं० पद्भ्यः, तु० लै० पेदिबुस् ।

भारो० नृभ्योस् > हि० ई० नृभ्यस् > गा० अवे० नॅरॅव्यस्चा, यंग० अवे० नॅरॅव्यो (nerəbyō) सं० नृभ्यः, तु० सं० मतेरिबुस् ।

(१९) षष्ठी बहुवचन

भारो०-ओम् (ōm) > हि० ई०-आम् > अवे० आम् (am), सं०-आम् ।

भारो० कुनोम् (k̂unōm) > हि० ई० शुनाम् > अवे० सुनम् (sunam), सं० शुनाम्, ग्री० कुनोन् ।

भारो० नेरोम् (nerōm) > हि० ई० नराम् > अवे० नरम् (naram) सं० (वै०) नराम् (नृणाम्), ग्री० अनेरोन् (anérōn) ।

(२०) सप्तमी बहुवचन-सु प्रत्यय । यथा—

भारो० वेसुसु > हि० ई० वसुषु > अवे० वड्हुशु, सं० वसुषु, लिथु० सूनुसु

भारो० एक्वोइसु > हि० ई० अश्वइषु > अवे० अस्पएशु (aspaēšu), सं० अश्वेषु, तु० ग्री० हिप्पोइसि ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय ११

अवेस्ता स्वरान्त संज्ञारूप

अकारान्त

एकवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक	लैटिन
प्रथमा वि०	एक्वोस्	अश्वस्	अस्गो	अश्वः	हिप्पोस	एकुस्
द्वितीया वि०	एक्वोम्	अश्वम्	अस्पॅम्	अश्वम्	हिप्पोन्	एकुम्
प्र० द्वि०नपुं०	युगोम्	युगम्	(तु०) क्षथ्रम्	क्षत्रम्	जुगोन्	इउगुम्
तृतीया वि०	एक्वो	अश्वा	गा०*अस्पा यंग*अस्प	तु०(वै०) पो यज्ञा		
चतुर्थी वि०	एक्वोइ	अश्वाइ	*अस्पाइ	अश्वाय	हिप्पोइ	
पंचमी वि०	एक्वोद	अश्वाद्	*अस्पात्	अश्वात्	—	लुपोद्
षष्ठी वि०	एक्वोस्यो	अश्वस्य	गा०*अस्पह्या यंग०*अस्पहे	अश्वस्य	हिप्पोइओ	
सप्तमी वि०	एक्वोइ	अश्वइ	गा०*अस्पोइ यंग०*अस्पे, अस्पएच	अश्वे	हिप्पोइ	
संबोधन	एक्वे	अश्व	गा०*अस्पा यंग०*अस्प	अश्व	हिप्पे	

द्विवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
प्र०·द्वि०-संबो०	एक्वो(उ)	अश्वा(उ)	गा०अस्पा यंग०*अस्प, यंग०*अस्पाओ	(वै०)अश्वा, अश्वौ	हिप्पो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

तृ०-च०-पं०	एक्वोभ्योम्	अश्वाभ्याम्	अस्पएइब्य *अस्पाब्य	अश्वाभ्याम्	
ष०-स०	एक्वोयोउ(स्)	अश्वयाउ(ष्)	(ष्०)अस्पयाओ (स०) अस्पयो	अश्वयोः	

बहुवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
प्रथमा-संबो०	एक्वोस्	अश्वास्	अस्प,*अस्पाओ	(वै०) अश्वासः	तु०गॉथ० वुल्फोस
द्वितीया	एक्वोन्स्	अश्वन्स्	*अस्पस्च	अश्वान्	गॉथ०वुल्फांस्
प्र०-द्वि०-नपुं०	युगा	युगा	तु०*अका	युगा	ग्रीक ज़ुग
तृतीया	एक्वोइस्	अश्वाइश्	*अस्पाइश्	अश्वैः	
	एक्वोइभिस्	अश्वइभिश्	—	(वै०)अश्वेभिः	
च०-पं०	एक्वोइभ्योस्	अश्वइभ्यस्	*अस्पएइब्यो	अश्वेभ्यः	
षष्ठी	एक्वोम्	अश्वाम् अश्वानाम्	गा०*अस्पॉम् *अस्पनाम्	तु० देवाम् तु० देवानाम्	हिप्पोन्
सप्तमी	एक्वोइसु	अश्वइषु	यंग०अस्पएशु	अश्वेषु	तु०हिप्पोइसि

आकारान्त

एकवचन

	भारो	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक	लैटिन
प्रथमा	एक्वा	अश्वा	गा०अस्पा यंग०अस्प	अश्वा	तु०खोरा	एकुआ
द्वितीया	एक्वाम्	अश्वाम्	अस्पाम्	अश्वाम्	खोरान्	
तृतीय	एक्वा	अश्वा	गा०अस्पा यंग०अस्प	(वै०) अश्वा, अश्वया		
चतुर्थी	एक्वाइ	अश्वाइ अश्वायै	अस्पाइ	अश्वायै	खोराइ	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
पं०-षष्ठी	एक्वास्	अश्वास् अश्वायास्	पं०अस्पयात् ष०अस्पयाओ	अश्वायाः	खोरास्
सप्तमी	एक्वाइ	अश्वाया	अस्पया	अश्वायाम्	खोराइ
संबोधन	एक्वइ	अश्वइ	अस्पे	अश्वे	
द्विवचन					
प्र०-द्वि०	एक्वइ	अश्वइ	अस्पे	अश्वे	खोराइ
तृ०-च०-पं०	एक्वाभ्योम्	अश्वाभ्याम्	अस्पाव्य	अश्वाभ्याम्	
ष०-स०	एक्वुयोउस्	अश्वयोष्	ष०अस्पयाओ स०अस्पयो	अश्वयोः	
बहुवचन					
प्रथमा-संबो०	एक्वास्	अश्वास्	अस्पाओ	अश्वाः	गॉथ० गिबोस्
द्वितीया	एक्वास्	अश्वास्	अस्पाओ	अश्वाः	गॉथ० गिबोस्
तृतीया	एक्वाभिस्	अश्वाभिस्	अस्पाबिश्	अश्वाभिः	
च०-पं०	एक्वाभ्योस्	अश्वाभ्यस्	अस्पाव्यो	अश्वाभ्यः	
षष्ठी	एक्वाम्	अश्वानाम्	अस्पनाम्	अश्वानाम्	
सप्तमी	एक्वासु	अस्वासु	गा०अस्पाहू यंग०अस्पाह		

इकारान्त

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	
एकवचन					
प्रथम	ओघिस्	अभ्भिश्	अज्रिश्	अहिः	ग्रीक = ओफिस्
द्वितीया	ओघिम्	अभ्भिम्	अज्रीम्	अहिम्	ग्रीक = ओफिन्
प्र०-द्वि-सं०नपुं०	भूरि	भूरि	बूइरी	भूरि	
तृतीया	ओघी	अभ्भी	अज्रि	अहिना (वै०मती)	
चतुर्थी	ओघेयइ	अभ्भयइ	अभ्भएच	अहये	
पं०-ष०	ओघेइस्	अभ्भइष्	(ष०)अज्रोइश् (पं०)अज्रोइत्	अहेः	ग्रीक ओफेओस्
सप्तमी	ओघेइ	अभ्भइ	म्रूइते	वै०अग्ना <*अग्नै	ओफेइ

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
संबो०	ओघेइ	अभ्इ	अज़े	अहे	
	ओघि	अभि	अज़ि		ओफि
द्विवचन					
प्र०-द्वि-सं०	ओघी	अभी	अज़ि	अही	लिथु० = नक्ति
तृ०-च०-पं०	ओघिभ्यो(म्)	अभिभ्याम्	अज़िव्य	अहिभ्याम्	
ष०-सं०	ओघ्योउस्	अभयाउष्	(ष०)अशिवाओ	अहयोः	
बहुवचन					
प्रथमा-संबो०	ओघेयेस्	अभयस्	अज़यो(ꣳ),	अहयः	ओफेइस्
द्वितीया	ओघिन्स्	अभिन्स्	अज़ीश्	अहीन्	
(प्र०-द्वि०-संबो०)नपुं	त्री	त्री	गा०थ्री	(वै०)त्री	त्रिआ
तृतीया	ओघिभिस्	अभिभिश्	*अज़िबिश्	अहिभिः	
च०-पं०	ओघिभ्योस्	अघिभ्यस्	अज़िव्यो	अहिभ्यः	
षष्ठी	ओघ्योम्	अभयाम्	तु०कओयाम्	*कव्याम्	ओफेओन्
		अभीनाम्	अज़िनाम्	अहीनाम्	
सप्तमी	ओघिसु	अभिषु	*अज़िशु	अहिषु	ओफिसि

ऊकारान्त

एकवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे	सं०	ग्रीक
प्रथमा	क्रतुस्	क्रतुश्	ख्र.तुश्	क्रतुः	पेखुस्
द्वितीया	क्रतुम्	क्रतुम्	ख्र.तूम्	क्रतुम्	पेखुन्
तृतीया	क्रतू	क्रतू	ख्र.तू	(वै०)क्रत्वा	
	क्रत्वा	क्रत्वा	गा०ख्र्थ्वा		
चतुर्थी	क्रत्वइ	क्रत्वइ	ख्रथ्वे	(वै०)क्रत्वे	
	क्रतेवइ	क्रतवइ			
पं०-षष्ठी	क्रतेउस्	क्रतउश्	(पं०)ख्र.तोत्	क्रतोः	
			(ष०)ख्र.ताँउश्		
			(पं०)ख्र.थ्.वत्	(वै०) क्रत्वः	
	क्रत्वोस्	क्रत्वस्	(ष०)ख्र.वो		

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमी	क्रतेउ क्रतेउ	क्रताउ क्रतउ	ख्रताओ	क्रतौ	
संबो०	क्रतेउ/क्रतु	क्रतउ/क्रतु	तु०बाज़ु	क्रतो	पेखु

द्विवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०
प्र०-संबो०-द्वि०	क्रतू	क्रतू	तु०गा०मइन्यू यंग० पसु	क्रतू
नपुं०	वेस्वी	वस्वी	वङ्०हि	(ऋग०उर्वी)
तृ०-च०-पं०	क्रतुभ्यो(म्)	क्रतुम्याम्	तु०गा०अहुब्या यंग०पसुब्य	क्रतुम्याम्
ष०-स०	क्रत्वोउस्	क्रत्वाउस्	(ष०)तु०पस्वाओ (स०)तु०अङ्ह्वो(ō)	क्रत्वोः

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
बहुवचन					
प्रथम-संबो०	क्रतेवेस्	क्रतवस्	ख्रतवो	क्रतवः (वै०)क्रत्वः	पेखेएस्
द्वितीया	क्रतुन्स्	क्रतुन्स्	ख्र.तूस्	क्रतून्	
नपुं०	वसू	वसू	वोहु-च	(वै०)वसु	
तृतीया	क्रतुभिस्	क्रतुभिश्	तु० वङ्हीश	क्रतुभिः	
च०-पं०	क्रतुभ्योस्	क्रतुभ्यस्	तु०वङ्हुब्यो	क्रतुभ्यः	
षष्ठी	क्रत्वोम्	क्रत्वाम् क्रतुनाम्	तु०पस्वाम् तु०वोहुनाम्	(वै०)पस्वान् क्रतूनाम्	पेखेओन्
सप्तमी	क्रतुसु	क्रतुषु	तु०यंग०वङ्हुश्	क्रतुसु	

रकारान्त

अवे० में र्-प्रकृति के शब्द चार प्रकार के होते हैं (नर्, पितर्-, दातर्- और आतर-) पर संस्कृत में दो तरह के होते हैं—पितृ और दातृ।

अवेस्ता पितर् शब्द

एकवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक्
प्रथमा	पॅतेर्	पिता	गा०प्ता,पता,ता यंग०पित	पिता	पतेर्

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	ग्रीक
द्वितीया	पॅतेर्म्(म्)	पितरम्	गा०पतरॉम् यंग०पितरॅम्	पितरम्	पतेर्
तृतीया	पॅत्र	पित्र	*पिथ्र	पित्रा	
चतुर्थी	पॅत्रइ	पित्रइ	पिथ्रे	पित्रे	
पं०-पष्ठी	पॅत्रास्	पित्रस्	*पिथ्रो	पितुः	पत्रोस्
सप्तमी	पॅतेरि	पितरि	*पितइरि	पितरि	पतेरि
सम्बो०	पॅतेर्	पितर्	नहीं मिलता है	पितः	पतेर्

द्विवचन—अवेस्ता में द्विवचन का रूप प्रथमा द्वितीया एवं सम्बोधन विभक्ति में ही मिलता है। अन्य विभक्तियों में नहीं मिलता है।

प्र०-द्वि-सम्बो०	पॅतेरे	पितर पितरौ	पितरॅ	पितरौ	पतेरे

बहुवचन

प्र०-संबो०	पॅतेरेस्	पितरस्	गा०पतरो(ō)	पितरः	पतेरेस्
द्वितीया	पॅत्रनस्	पितरस्	फ्ँद्रो	पितॄन्	पतेरस्
तृतीया	पॅतृभिस्	पितृभिश्	प्तॅरॅबिश्	पितृभिः	
च०-पं०	पॅतृभ्योस्	पितृभ्यास्	प्तॅरॅब्यो	पितृभ्यः	
षष्ठी	पॅत्रोम्	पित्राम्	*पिथ्राम्	पितॄणाम्	पत्रोन्

सप्तमी विभक्ति के रूप अवेस्ता में नहीं मिलते हैं

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १२

सर्वनाम

पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronouns) में लिंग भेद नहीं पाया जाता है। संबोधन विभक्ति भी नहीं होती है।

प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम का रूप

एकवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	प्रा० फा०	ग्री०
प्रथमा	एघोम्	अभ्रुम्	यंग० अज़॑म् गा० अजॉम्	अहम्	अदम्	एगोन्
द्वितीया	मे(म्)	मा(म्)	माम् (mam)	माम्	माम्	एमे
पश्चाश्रयी	मे	मा	मा (पश्चाश्रयी)	मा	मा	मे
चतुर्थी	मेध्योम्	मभ्य़म्	मइब्या, मइब्यो	मह्यम्	—	लै० मिहि
पश्चाश्रयी	मोइ	मइ	मोइ (mōi)	मे	मइय्	ग्री० = मोइ
पंचमी	मेद्	मद्	मत्	मत्	—	लै० = मे(द्)
षष्ठी	मेने	मन	मन	मम	मना	लिथु० = मेने

द्विवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	प्रा० फा०	ग्री०
द्वितीया		आवा	गा० आँअँआवा	आवाम्		
षष्ठी (पश्चाश्रयी)	नोउ	नाउ	ना	नौ (वै०) ना		ग्री० नोइइन् (सादृश्यमूलक है)

बहुवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	प्रा० फा०	ग्री०
प्रथमा	वएम्	वयम्	वएम्	वयम्	वयम्	गॉथ० = वेइस् हिट्टा० वेस्
द्वितीया	नस्मे	अस्म	गा० आँहमा यंग० अहमा	अस्मान्	—	ग्री० अम्मे —
पश्चाश्रयी	नोस्	नास्	गा० नाओ यंग० नो	नः	—	लै० नोस् —

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	भारो०	हि०ई०	अवे०	सं०			
चतुर्थी	न̥समेइ	अस्माइ	गा०अह्माइ (वै०)अस्मे	—	—	—	
	न̥स्मेभ्यो(म्)	अस्मभ्य(म्)	गा०अह्मइब्या	अस्मभ्यम्			
पश्चाश्रयी	नोस्	नास्	गा० नाॅ यंग० न	नः	—	लै० नोस्	—

द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम का रूप (Second Personal Pronoun)

एकवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०	प्रा० फा०	ग्री०	गाॅथ०
प्रथमा	तु/तू	तु/तू	गा०त्वाॅम्(वै०) तुवम् यंग० तूम्	तुवम्		सु	थ़्
द्वितीया	त्वे	त्वाम्	थ्̣वाम्	त्वाम्	थ्̣वाम्	से	—
पश्चाश्रयी	त्वे	त्वा	थ्̣वा	(वै०)त्वा	—	से	—
तृतीया	त्वे (twē)	त्वा	थ्̣वा	(वै०)त्वा	—	—	—
चतुर्थी	तेभ्यो	तभ्य तभ्यस्	तइब्या तइब्यो	तुभ्यम्	—	लै०तिबि	
पश्चाश्रयी	तोइ	तै ते	तोइ (tōi),	ते			
पंचमी	त्वेद्	त्वद्	थ्̣वध् गा० थ्̣वात्	थ्̣त्वत् (त्वद्)	—	हि० त्वेदत्स	
षष्ठी	तेवे	तव	गा०तवा यंग०तव	तव			
पश्चाश्रयी	तोइ	तै ते	तोइ (tōi), (te)	ते (युवयोः)	—	ग्री०तोइ(tōi)	
षष्ठी		युवाकम्	युवाकॅम्।	युवाकु			

बहुवचन

	भारो०	हि० ई०	अवे०	सं०		
प्रथमा	यूस्	यूश् यूज़म्	यूश् यूज़ॅम्	यूयम्	गाॅथ० जुस्/जूस्	
द्वितीया	वोस्	वास्	वाओ, वा	वः	लै० वोस् (vos)	
तृतीया	स्मे (sme)	स्मा	ख़्श्मा तु०	युष्माभिः		

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

चतुर्थी युस्मेभ्योम् युष्मभ्वम् युष्मइब्या युष्मभ्यम्
युष्मइब्यो
स्मेभ्यो स्मभ्य ख्.श्मइब्या —

पश्चाश्रयी वोस् वास्/वस् वॉ, वो (vō) वः — लै० वोस् (vōs)

पंचमी युस्मेद् युष्मद् युश्मत् युष्मत्
स्मेद् स्मद् ख्.श्मत् — हिट्टा० सुमेदत्स्

षष्ठी युस्मेको(म्) युस्माकम् यंग०युश्माकॅम् युष्माकम्
स्मेको(म्) स्माक(म्) गा० ख्.श्माकॅम्

पश्चाश्रयी वोस् वस्/वास् वॉ, वो (vō) वः लै० वोस् (vōs)

सप्तमी विभक्ति का रूप अवेस्ता में बहुत कम मिलता है।

अवेस्ता के सर्वनामात्मक प्रत्यय

सर्वनाम शब्दों के विभक्ति प्रत्यय संज्ञा शब्द के प्रत्ययों से भिन्न होते हैं।

एकवचन

प्रथमा विभक्ति पुंलिंग में तीन तरह के प्रत्यय मिलते हैं।

(१) शून्य प्रत्यय, (२) —स् प्रत्यय, (३) —म् प्रत्यय। यथा—

(१) अवे० अएश् (aēšа) < हि० ई० ऐष, तु० सं० एष

अवे० हाउ < हि० ई० साउ, तु० सं० असौ

(२) अवे० यो (yō) < हि० ई० यस्, सं० यः, ग्री० होस्

(३) अवे० अएम् अयॉम् < हि० ई० अयम्, सं० अयम्

स्त्रीलिंग में दो प्रत्यय मिलते हैं—(१) शून्य, (२) —म् प्रत्यय यथा—

(१) अवे० का < हि० ई० का, सं० का

(२) अवे० ईम् < हि० ई० इयम्, सं० इयम्।

द्वितीया विभक्ति

पुंलिंग —म् प्रत्यय ; यथा—

अवे० तॅम् < हि० ई० तम्, सं० तम्, तु० ग्री० तोन्

स्त्रीलिंग —म् प्रत्यय ; यथा—

अवे० ताम् < हि० ई० ताम्, सं० ताम्, तु० ग्री० तेन् (tēn) नपुंसक लिंग प्रथमा—द्वितीया विभक्ति में —त प्रत्यय ; अवे० तत् < हि० ई० तद्, सं० तत् (तद्), तु० लै० इस्तुद्।

तृतीया विभक्ति का प्रत्यय संज्ञा शब्दों के तरह ही होता है।

अवे० कना तु० प्रा० फा० अवना।

चतुर्थी विभक्ति

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

पुंलिग—अवे० अह्माइ < हि० ई० अस्माइ, सं० अस्मै

स्त्रीलिंग—गा० अवे० अह्याइ < हि० ई० अस्याइ, सं० अस्यै

पंचमी विभक्ति

पुंलिग—अवे० अह्मात् < हि० ई० अस्माद्, सं० अस्मात् (अस्माद्)

षष्ठी विभक्ति

पुंलिग—गा० अवे० अह्या, यंग० अवे० अहे < हि० ई० अस्य, सं० अस्य ।

स्त्रीलिंग— अवे० अङ्हाओ < हि० ई० अस्यास्, सं० अस्याः ।

सप्तमी विभक्ति

पुंलिग—अवे० अहिम < हि० ई० अस्मि (न्), सं० अस्मिन्

स्त्रीलिंग—अवे० अङ्हे < हि० ई० अस्या (म्), सं० अस्याम् । द्विवचन के प्रत्यय संज्ञा के द्विवचन के समान ही होते हैं। वहुवचन में केवल प्रथमा विभक्ति का पुंलिग एवं षष्ठी के पुंलिग—

स्त्रीलिंग में शब्दान्त प्रत्यय भिन्न होता है। यथा—

प्रथमा विभक्ति

पुंलिग—गा० अवे० तोइ (tōi) तएच (taē-ca), यंग० अवे० ते (tē) <

हि० ई० तै, सं० ते, तु० ग्री० तोइ, गॉथ० थ़इ ।

षष्ठी विभक्ति—

पुंलिग—अवे० अएशाम् (aēšam) < हि० ई० ऐषाम्, सं० एषाम् ।

स्त्रीलिंग—अवे० आओङ्हाम् < हि० ई० आसाम्, तु० सं० आसाम् ।

तृतीय पुरुष वाचक सर्वनाम (Third Personal Pronoun)

अयम् सर्वनाम का रूप

अयम् सर्वनाम का रूप

पुंलिग एकवचन

	अवे०	हि० ई०	सं०	प्रा० फा०
प्रथमा	गा० अयाँम् गा०/यंग० अएम्	अयम्	अयम्	(तु० इयम्)
द्वितीया	इमँम्	इमम्	इमम्	इमम्
तृतीया	अना	अना	तु० अनेन/अनेना	अना
चतुर्थी	अह्माइ	अस्माइ	अस्मै	
पंचमी	गा०/यंग० अह्मात्	अस्माद्	अस्मात् (अस्माद्)	
षष्ठी	गा० अह्या यंग० अहे, एङ्हे	अस्य	अस्य	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

सप्तमी	गा० अह्मी	अस्मि (न्)	अस्मिन्	
	यंग० अहिम			
	अह्म्य	अस्मि + आ		
द्विवचन				
प्रा० द्वि०	इम	इमा(उ)	(वै०) इमा, इमौ	
तृ०-च०-पं०	आ० या	आभ्या(म्)	आभ्याम्	
षष्ठी	गा० आओस्चा	आउ (श्)		
	गा०/यंग० अयाओ	अयाउ(श्)		
	यंग० अनयाओ	अनयाउ(श्)	अनयोः	
बहुवचन				
	अवे०	हि० ई०	सं०	प्रा० फा०
प्रथमा	इमे	इमइ	इमे	इमइय
द्वितीया	इमा, इमे	इमान्स्	इमान्	
तृतीया	आइश्	आइष्	* ऐः	
	अएइबिश्	ऐभिष्	एभिः	
चतुर्थी	अएइब्यो	ऐभ्यस्	एभ्यः	
पंचमी				
षष्ठी	अएशाम्	ऐषाम्	एषाम्	
सप्तमी	अएशु	ऐषु	एषु	
नपुंसकलिंग एकवचन				
प्रथमा-द्वितीया	इमत्	इमद्	(तु० इदम्)	इम
बहुवचन				
	गा० इमा	इमा	(वै०) इमा	
	यंग० इम्न्			
स्त्रीलिंग एकवचन				
प्रथमा	ईम्	इयम्	इयम्	इयम
द्वितीया	इमाम्	इमाम्	इमाम्	
तृतीया	अय	अया	(वै०) अया	
चतुर्थी	गा० अह्याइ			
	यंग० अइङ्हाइ			
पंचमी/षष्ठी	ष० अइङ्हाओ	अस्यास्	अस्याः	
	पं० अइङ्हात्			
सप्तमी	अइङ्हे	अस्या (म)	अस्याम्	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्विवचन

तृ०-च०-पं० आव्या आभ्या (म्) आभ्याम

अन्य रूप अवेस्ता में नहीं मिलते हैं।

बहुवचन

प्र०-द्वि०	इमाओ	इमास्	इमाः
तृतीया	आबिश्	आभिश्	आभिः
च०/पं०	आव्यो	आभ्यस्	आभ्यः
षष्ठी	आओङ्हाम्	आसाम्	आसाम्

	अवे०	हि० ई०	सं०	भारो०	ग्रीक
सप्तमी	गा० आहू	आसु	आसु		
	यंग० आह्व	आसु + आ			

निश्चय वाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)

पुंलिंग

एकवचन

प्रथमा	हा, हाँ, हो (ho̅)	सस्, स	सः, स	सो, सोस्	हो
द्वितीया	गा० ताॅम्	तम्	तम्	तोम्	तोन्
	यंग० तम्				
तृतीया	ता	ता	(तु० तेन)	तो (to̅)	

द्विवचन

प्रथमा	ता, ताओ	ता(उ)	(वै०) ता, तो	तो(उ) (to̅u)	तो

बहुवचन

प्रथमा	गा० तोइ, तएचा	तै	ते	तोई	तो
	यंग० ते, तएच, ता				
द्वितीया	ता, ते, ताओ	तान्स्	तान्	तोन्स्	तोन्स्
तृतीया	ताइश्	ताइष्	तैः	तोइस्	तोइस्

अन्य रूप अवेस्ता में नहीं मिलते हैं।

नपुंसकलिंग

एकवचन

प्र०-द्वि०	तत्	तद्	तत् (तद्)	तोद्	तो

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

द्विवचन					
	ते	तै	तै	तोइ	लु० तो
वहुवचन					
	ता	ता	(वैं०) ता	ता	त
स्त्रीलिंगएकवचन					
प्रथमा	गा०/यंग० हा	सा	सा	सा	(डोरिक) हा
द्वितीया	गा०/यंग०ताम्	ताम्	ताम्	ताम्	तेन
बहुवचन					
प्र०/द्वि०	ताओ,ताओस्चा, ता (< नपुं)	तास्	ताः	सास्	तास्

प्रश्नवाचकसर्वनाम—क (Interogative Prdlonoun)

	अवे०	हि० ई०	सं०	भारो०	लिथु०
प्रथमा	गा० काँ यंग० काँ	कस्	कः	क्वोस्	कस्
द्वितीया	गा० काँम् यंग०कम्]	कम्	कम्	क्वोम्	गाँथ०ह्वन
तृतीया	का, कन	का, कना	केन	क्वो/क्वे	गाँथ०ह्वे
चतुर्थी	कहमाइ	कस्माइ	कस्मै	क्वोस्मेइ	गाँथ०ह्वम्म
पंचमी	कह्मात्	कस्माद्	कस्मात् (कस्माद्)	क्वोस्मेद्	
षष्ठी	गा०कह्या यंग कहे	कस्य	कस्य	क्वोस्व	
सप्तमी	कहिम	कस्मि(न्)	कस्मिन्	क्वोस्मिन्	
बहुवचन					
प्रथमा	कोइ(k̄oi)	कइ	के	क्वोइ	
द्वितीया	गा० कॉन्ग्	कान्स	कान्	क्वोन्स्	
तृतीया	काइश्	काइश्	कैः	क्वोइस्	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

	अवे०	हि० ई०	सं०	भारो०	
च०/पंचमी	केइब्यो	कइभ्यस्	केभ्यः	क्वोइभ्योस्	
नपुंसकलिंग एकवचन					
प्र०/द्वि०	कत्	कद्	कत् (कद्)	क्वोद्	गॉय०ह्व
स्त्रीलिंग					
एकवचन					
प्रथमा	का	का	का	क्वा	गॉय० ह्वा
द्वितीया	काम्(kam)	काम्	काम्	क्वाम्	
बहुवचन					
षष्ठी	कङ्हाम्	कासाम्	कासाम्	क्वासाम्	

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १३

संख्यावाची शब्द

(NUMERALS)

पूर्णसंख्यावाचक शब्द (Cardrinal Numerals)

भारोपीय भाषा में एक से चार संख्या तक का विभक्तिगत विभाजन मिलता है। एक संख्या एकवचन में; दो द्विवचन में एवं अन्य सभी बहुवचन में मिलते हैं।

एक—गा०/यंग० अवे० अएव, यंग० ओइव<हि० ई० अइव<भारो० ओइवो, तु० प्रा० फा० अइव, तु० ग्री० ओइओस् तु० सं० एव, सं० एक>हि० ई० ऐक<भारो० ओइक्वो

प्रथमा—पुंलि० अएव (<हि० ऐवस्); स्त्री० अएव (<हि० ई० ऐवा)

द्वितीया—पुंलि और नपुं० (प्र० द्वि०) ओयुम्, ओइउम्, यॅम्, ओइम्, ओईम् (<हि० ई० ओइवम्), स्त्री अएवाम् (<हि० ई० ऐवाम्)

तृतीया—पुंलि० अएव (<हि० ई० ऐवा), स्त्री अएवय

पंचमी—पुंलि० अएवह्यात (<हि० ई० ऐवस्माद्, तु० सं० एकस्मात्)।

षष्ठी—पुंलि० अएवहे (हि० ई० ऐवस्य, स्त्री अएवङ्हाओ)

सप्तमी—पुंलि० अएवहिम>हि० ई० ऐवस्मि (न्)।

दो—अवे० द्व<हि० ई० द्व (दुव)<भारो० द्वो (दुवो, तु० सं० द्व (द्वौ, वै० दुवौ), ग्री० दुओ।

अवेस्ता में इसका रूप निम्न प्रकार से चलता है—

प्रथमा—(पुंलि०) द्व<हि० ई० द्वा, तु० सं० द्वा, द्वौ, ग्री० दुओ

(नपुं) द्वए-च, दुये<हि० ई० द्वै, तु० सं० द्वे

(स्त्री०) दुये<हि० ई० द्वै, सं० द्वे, लै० दुअए

चतुर्थी—(पुंलि०) द्वएइब्य<हि० ई० द्वाभ्याम्, तु० सं० द्वाभ्याम्

षष्ठी—(पुंलि०) द्वयाओ< हि० ई० द्वयौस्। द्वयाउस्, तु० सं० द्वयोः।

तीन—(पुंलि० नपुं०) थ्र.य्/थ्रि.<हि० ई० त्रय/त्री<भारो० त्रेय/त्रि तु० सं० त्रय्/त्रि

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

(स्त्री०) अवे० तीस<हि० ई० तिस्र, तु० सं० तिस्र् ।

अवेस्ता में इसका रूप निम्न प्रकार चलता है—

प्रथमा—पुंलि० थ्र.यो<हि० ई० त्रायस्, तु० सं० त्रयः, ग्री० त्रेइस्, लै० त्रेस् ।

द्वितीया—(पुंलि०) थ्रि.श्<हि० ई० त्रिन्स्, तु० सं० त्रीन्, गॉथ० थ्रि.न्स्

(स्त्री०) अवे० तिश्रो, तिश्र<हि० ई० तिस्रस्, तु० सं० तिस्रः

प्र० द्वि० (नपुं०) थ्र.ि<हि० ई० त्री<भारो० त्री, तु० सं० (वै०) त्री, ग्री० त्रिअ ।

चतुर्थी—पुंलि०) थ्रिब्यो < हि० ई० त्रिभ्यस्, तु० सं० त्रिभ्यः, लै० त्रिबुस् ।

षष्ठी—(पुंलि०) थ्र.याम् < हि० ई० त्रयाम्, तु० सं० त्रीणाम् ।

(स्त्री०) तिस्राम्, तिस्रनाम्<हि० ई० तिस्रा, तु० सं० तिसृणाम् ।

चार—प्रथमा (पुंलि०) चथ्.वारो, चथ्.वारस्-च<हि० ई० चत्वारस्, तु० सं० चत्वारः

द्वितीया—(पुंलि०) चतुरॉ<हि० ई० चतुरस्, तु० सं० चतुरः ।

(स्त्री०) अवे० चतङरो<हि० ई० चतस्रस्, तु० सं० चतस्रः

प्र०/द्वि० (नपुं) अवे० चतुर<हि० ई० चतुरि, तु० सं० चतुरि

षष्ठी—(पुंलि०) चतुरम्<हि० ई० चतुराम्, तु० सं० चतुर्णाम्, ग्री० तेत्तरोन् ।

पाँच—अवे० पन्च < हि० ई० पञ्च<भारो०पेङ्क्वे, तु० सं० पञ्च, ग्री० पेन्ते, लै० क्विन्क्वे ।

षष्ठी—अवे० पन्चनाम्, तु० सं० पञ्चनाम्, ग्री० पेम्पोन् ।

छः—अवे० ख्श्वश्<हि० ई० स्वश्श्, तु० सं० षष्/षट्, ग्री० हेक्स्; लै० सेक्स् ।

सात—अवे० हप्त<हि० ई० सप्त<भारो० सेप्त्म̥, तु० सं० सप्त, ग्री० हेप्त लै० सेप्तेम्, गॉथ० सिबुन् ।

आठ—अवे० अश्त<हि० ई० अष्टा (अष्टौ)<भारो० अक्तोउ तु० सं० अष्ट/अष्टौ, ग्री० ओक्तो, लै० ओक्तो, गॉथ० अह्.तौ ।

नव—अवे० नव<हि० ई० नव<भारो० नेव्न̥, तु० सं० नव, लै० नोवेम् गॉथ० निउन् ।

षष्ठी—अवे० नवनाम्, तु० सं० नवानाम्

दस—अवे० दस, गा० अवे० दसा < हि० ई० दश<भारो० देक्म̥ तु० सं० दश, ग्रीक देक, लै० देकेम्, गॉथ० तैहुन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

एकादश—भारो॰ ओइवो-देक्म<हि॰ ई॰ देवदश<अवे॰*अएवन्दस, तु॰ सं॰ एकादश

द्वादश-अवे॰*द्वदस<हि॰ ई॰ द्वादश, तु॰ सं॰ द्वादश, ग्री॰ दोदेक

त्रयोदश—अवे॰ थ्रिदस<हि॰ ई॰ त्रिदश, त्रयज़्दश, तु॰ सं॰ त्रयोदश, लै॰ त्रेदेसिम् (tredecim) ।

अवे॰ चथ्रु दस<हि॰ ई॰ चत्रुदश, चतुर्दश्, तु॰ सं॰ त्रयोदश

अवे॰ पन्चदस<हि॰ ई॰ पञ्चदश, तु॰ सं॰ पञ्चदश, ग्रीक पेन्तेकइदेक ।

अवे॰ क्ष्वश्दस<हि॰ ई॰ सज़्दश, तु॰ सं॰ षोडश, लै॰ सेक्स् देसिम् ।

अवे॰*हप्तदश,<हि॰ ई॰ सप्तदश, तु॰ सं॰ सप्तदश, ग्रीक हेप्तकइदेक

अवे॰* अश्तदस<हि॰ ई॰ अष्तादश, तु॰ सं॰ अष्टादश, ग्री॰ ओक्तो-कइदेक ।

अवे॰ वीसइति<हि॰ ई॰ वीशति<भारो॰ वीक्मति, तु॰ सं॰ विंशति, ग्री॰ वीकति ।

अवे॰ चथ्वारॅशतॅम्<हि॰ ई॰ चत्वारिंशत्, तु॰ सं॰ चत्वारिंशत् ।

अवे॰ (द्वितीया) पन्चाशतॅम्. (तृतीया) पन्चाशतबीश्, तु॰ पञ्चाशत्, ग्री॰ पन्तेकोन्त ।

———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १४

क्रिया

भारोपीय भाषा परिवार में लट्, लुङ्, एवं लिट् (Present, Aorist and Perfect) तीन लकार मिलते हैं। पाँच क्रियार्थ भेद (Moods) हैं निर्देशात्मक (Indicative), आज्ञार्थक (Imperative), विध्यर्थ (Injunctive), लेट् (Subjunctive) और इच्छा सूचक (Optative)। दो वाच्य हैं—कर्तृ एवं कर्म वाच्य; तीन वचन हैं—एकवचन, द्विवचन एवं बहुवचन; तीन पुरुष हैं—प्रथम, मध्यम एवं अन्य पुरुष। अवेस्ता में लट् क्रिया रूप बनाने के लिए प्रथम पुरुष एकवचन मूल कर्तृवाच्य (Primary Active) में दो प्रकार के प्रत्यय (endings) मिलते हैं जो क्रमशः ओ प्रत्यय (thematic) तथा-मि (athematic) हैं। इन प्रत्ययों (endings) में निम्न अन्तर है—

(१) थिमेटिक क्रिया का मूल (base)-ओ प्रत्ययान्त होता है। एथिमेटिक क्रिया के मूल (base) का अन्त-ओ के अतिरिक्त अन्य स्वरों एवं व्यञ्जनों में होता है।

(२) थिमेटिक क्रिया रूप में स्वराघात धातु (root) या प्रत्यय (suffix) पर निश्चित होता है जबकि एथिमेटिक क्रिया रूप में, निर्बल श्रेणी के रूपों में स्वराघात (accent) धातु (root) से प्रत्यय (suffix) पर बदलता रहता है।

अवेस्ता के क्रिया रूप भी भारोपीय भाषा परिवार के समान ही हैं। अवेस्ता में आगम (augment) बहुत कम मिलता है। यथा—

भारो० एभेवोम् > हि० ई० अभवम् > अवे० अबओम्, सं० अभवम्।

भारो० एभेवेद् > हि० ई० अभवत् > अवे० अबवत्, सं० अभवत्।

अवेस्ता में आगम रहित रूप अधिक मिलते हैं। यथा—

अवे० बरॅम् < हि० ई० (अ) भरम् < भारो० (ए)भेरोम्, तु० सं० (अ) भरम् ग्री० (ए)फेरोन्।

अवे० यज़त < हि० ई० (अ)यज़त < भारो० (ए)यगेतो, तु० सं० (अ) यजत।

मध्यम एवं अन्य पुरुष द्विवचन के प्रत्यय भी अवेस्ता में एक दूसरे में मिल जाते हैं।

अवेस्ता में क्रियात्मक प्रकृति (verbal stem) का द्वित्व हो जाता है। कभी-

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

कभी धातु के आदि अक्षर का और कभी सम्पूर्ण धातु का ही द्वित्व हो जाता है। तथा—

अवे० चकन<हि० ई०/सं० चकन<भारो के कोने।
अवे० सुस्रु शॅम्नो < हि० ई० शुश्रु शम्नस्, तु० सं० शुश्रूषमाण:

भारोपीय भाषा परिवार में चार प्रकार के क्रिया प्रत्यय (verbal endings) मिलते हैं—

(१) मूल प्रत्यय (Primary Ending) जो लट् निर्देशक क्रियार्थ (Present Indicative Mood) में प्रयुक्त होते हैं।

(२) द्वितीय (Secondary) प्रत्यय जिनका प्रयोग लुङ् लङ् इच्छार्थक, विध्यर्थ एवं लेट् लकार में होता है।

(३) लिट् प्रत्यय (Perfect Ending) का प्रयोग लिट् लकार के साथ होता है।

(४) आज्ञार्थक प्रत्यय (Imperative Ending) का प्रयोग अज्ञार्थवाची क्रियार्थ में होता है।

अवेस्ता में भी यह विशेषताय पाई जाती हैं।

मूल कर्तृवाच्य के प्रत्यय (Primary Active Endings)

प्रथम पुरुष एकवचन (क)-मि प्रत्यय यथा—

भारो० एस्मि> हि० ई० अस्मि>गा० अवे० अह्मि, तु० प्रा० फा० अ(ह) मिय्, सं० अस्मि, ग्री० एम्मि।

(ख)-आ(मि०) प्रत्यय

अवेस्ता में इसके लिए-आ एवं-मि दोनों प्रकार के प्रत्ययों का प्रयोग होता है। यथा—

भारो० भेरो (bhero) > हि० ई० भरामि>अवे० बरामि, तु० सं० भरामि ग्री० फेरो (phéro), लै० फेरो (fero)

भारो० स्पेक्यो (spekyo)> हि० ई० स्पश्या, तु० लै० स्पेसिओ, सं० पश्यामि।

मध्यम पुरुष एकवचन अवे०* शि/हि प्रत्यय (ending), यथा—

भारो० भेरेसि>हि० ई० भरसि>अवे० बरहि, सं० भरसि, ग्रो० फेरेइस।

भारो० एस्सि>हि० ई० असि>गा० अवे० अही, यंग० अवे० अहि०, तु० प्रा० फा० अह(इ)य्, सं० असि, ग्री० (होमरिक) एस्सि।

अन्य पुरुष एकवचन-ति प्रत्यय, यथा---

भारो० एस्ति>हि० ई० अस्ति>गा० अवे० अस्ति, यंग० अवे० अस्ति, तु० प्रा० फा० अस्तिय, सं० अस्ति, ग्री० एस्ति, हिट्टा० एस्त्सि।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० भेरेति> हि० ई० भरति>गा० अवे० बरइति, यंग० अवे बरइति प्रा० फा० बरतिय्, सं० भरति ।

द्विवचन

प्रथम पुरुष अवे०-वहि प्रत्यय

भारो० उक्वेसि>हि० ई० उश्वसि>गा० अवे० उस्वही, तु० सं० स्वः

मध्यम एवं अन्य पुरुष--यह दोनों अवेस्ता में अलग-अलग नहीं हैं ।

मध्यम पुरुष भारो०-थेस्>हि० ई० थस्
अन्य पुरुष भारो० तेस्>हि० ई० तस् >अवे० तो (tō) ।

यथा—

भारो० भेरेथेस्/भेरेतेस्>हि० ई० भरथस्/भरतस्>अवे० बरतो (baratō), सं० (म० पु०) भरथः, (अ० पु०) भरतः

बहुवचन—

प्रथम पुरुष अवे०-महि प्रत्यय, यथा—

भारो० भेरोमसि>हि० ई० भरामसि>अवे० बरामहि, सं० (वै०) भरामसि ।

मध्यम पुरुष अवे०-थ् प्रत्यय, यथा—

भारो० भरेथे>हि० ई० भरथ>अवे०*बरथ्, सं० भरथ ।

अन्य पुरुष अवे०-अइन्ति/ॲन्ति/न्ति/अइति यथा—

भारो० सेन्ति>हि० ई० सन्ति>गा० अवे० हॅन्ती, यंग० अवे० हन्ति, तु० प्रा० फा० ह (न्) तिय्, सं० सन्ति, ग्री० एन्ति ।

हि० ई० धधति>गा० अवे० ददइती, तु० सं० दधति, ग्री० (डोरिक) तिथेन्ति ।

मूल कर्मवाच्य के प्रत्यय (Primary Middle Endings)

एकवचन

प्रथम पुरुष अवे०-ए प्रत्यय! यथा—

भारो० यगै>हि० ई० यजै>अवे० यज़े, तु० सं० यजे ।

मध्यम पुरुष अवे०-हे प्रत्यय! यथा—

हि० ई० पृश्शसै>अवे० पॅरॅसहे, सं० पृच्छसे ।

अन्य पुरुष अवे०-ते प्रत्यय; यथा—

भारो० यगेते>हि० ई० यजतै>अवे० यजइते, तु० सं० यजते

द्विवचन-अवेस्ता में प्रथम पुरुष का प्रत्यय 'वइथे' (<हि० ई० वधै, सं०-वहे)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

है पर अवेस्ता में यह मिलता नहीं है। मध्यम एवं अन्य पुरुष अवेस्ता में मिलकर एक हो गये हैं। यथा—

हि० ई० पृश्शइतै > गा० अवे० पॅरॅसएते, सं० पृच्छेते।

हि० ई० वैनैथै > यंग० अवे० वएनोइथे, सं० वेनेथे।

बहुवचन

प्रथम पुरुष अवे०—मइदे प्रत्यय यथा—

भारो० यगोमेधै > हि० ई० यजामधै > गा० अवे० यज़मइदे, यंग० अवे० यज़मइदे, तु० सं० यजामहे।

मध्यम पुरुष अवे०-दुये (duye) < हि० ई० ध्वै; यथा—

भारो० यगोध्वै > हि० ई० यजध्वै > अवे० *यज़दुये, तु० सं० यजध्वे।

अन्य पुरुष अवे०-ऐन्ते/अन्ते/अते प्रत्यय यथा—

भारो० यगोन्तै > हि० ई० यजन्तै > अवे० *यज़इन्ते, तु० यंग० अवे० बरन्ते, ग्री० फेरोन्तै।

द्वितीय कर्तृवाच्य के प्रत्यय (Secondary Active Endings)

एकवचन

प्रथम पुरुष—अवे०-म्/-ॲम् प्रत्यय, यथा—

भारो० एभेरोम् > हि० ई० अभरम् > अवे० बरॅम्, प्रा० फा० अबरम्, सं० अभरम्, ग्री० एफेरोन्।

भारो० एदेर्क्मुम् > हि० ई० अदर्शम् > अवे० दरॅसॅम्, सं० अदर्शम् तु० ग्री० एद्रकोन्।

मध्यम पुरुष—अवे०-ओ, आओ (ā) प्रत्यय; यथा—

हि० ई० अपृश्शस् > प्रा० ई० अपृसह् > अवे० पॅरॅसो, सं० अपृच्छः, तु० ग्री० एफेरेस्।

भारो० एधेस् > हि० ई० अधास् > प्रा० ई० आधः > अवे० दाओ, सं० अधाः, प्रा० फा० अदा।

अन्य पुरुष—अवे-त/-त् ; यथा—

भारो० एभेरेत् > हि० ई० अभरत् > अवे० बरत, सं० अभरत्, प्रा० फा० अबर, ग्री० एफेरे।

द्विवचन

प्रथम पुरुष—अवे०-व प्रत्यय ; यथा—

हि० ई० अजीवाव > अवे० ज्वाव, तु० सं० अजीवाव।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

मध्यम एवं अन्य पुरुष— अवेस्ता में पृथक नहीं है।

अवे०-तॅम् प्रत्यय; यथा—

हि० ई० अगश्शतम्>अवे० जसतॅम् तु० सं० अगच्छतम्।

द्वितीय कर्म वाच्य के प्रत्यय (Secondary Middle Edings)

एकवचन

प्रथम पुरुष—अवे०-इ प्रत्यय ; यथा—

भारो० एभेरोइ > हि० ई० अभरइ>अवे० बइरे, सं० अभरे।

मध्यम पुरुष—अवे०-ह/-ङ्ह/-श प्रत्यय ; यथा—

हि० ई० एज़ायस>अवे० यज़त, सं० अयजत, ग्री० एफेरेतो।

द्विवचन

प्रथम पुरुष—गा० अवे०-वइदी प्रत्यय ; यथा—

हि० ई० आस्वधि>तु० गा० अवे० द्वइदी, सं० आस्वहि।

मध्यम एवं अन्य पुरुष अवेस्ता में एक हो गया है। यथा—

अवे० जसएतॅम्, अस्रवातॅम् इत्यादि।

बहुवचन

प्रथम पुरुष—गा० अवे०-मइदी, यंग० अवे०-मइदि; यथा—

हि० ई० अव्रमधि>गा० अवे० वरॅमइदी, तु० सं० आस्महि, ग्री० हेमेथ।

मध्यम पुरुष—गा० अवे०-दूम्, यंग० अवे० द्वॅम् प्रत्यय यथा—हि० ई० धारयध्वम्>यंग० अवे० दारयद्वॅम्, सं० धारयध्वम्।

अन्य पुरुष—अवे०-अन्त/-न्त/-अत प्रत्यय ; यथा—

हि० ई० अयज़न्त >अवे० यज़न्त, सं० अयजन्त, तु० प्रा० फा० अबर-(न्)त, ग्री० एफेरोन्तो।

हि० ई० अवरत>गा० अवे० वरता, तु० सं० आसत, प्रा० फा० आह (न्) त।

लिट्लकार के प्रत्यय (Perfect Endings)

कर्तृवाच्य (Active Endings)

एकवचन

प्रथम पुरुष—अवे०-अ प्रत्यय

हि० ई० वैद>गा० अवे० वएदा, यंग० अवे० वएद, तु० सं० वेद, ग्रीक ओइद।

भारो० देदोर्क>हि० ई० ददर्श>अवे० दादरॅश, तु० सं० ददर्श, ग्री० देदोर्क।

मध्यम पुरुष—अवे–थ् (स् के बाद आने पर –त हो जाता है)

भारो० वोइस्थ>हि० ई० वैस्थ>गा० अवे वोइस्ता, तु० सं० वेथ, ग्री० ओइस्थ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हि० ई० ददाथ>गा० अवे० ददाथ़ा, यंग० अवे० ददाथ़, सं० ददाथ

अन्य पुरुष—अवे०-अ प्रत्यय, यथा—

हि० ई० वैद>गा० अवे० वएदा, यंग० अवे० वएद़, ग्री० ओइदे

द्विवचन

प्रथम एवं मध्यम पुरुष अवेस्ता में नहीं मिलते हैं।

अन्य पुरुष—अवे०-अतराँ/आतराँ प्रत्यय; यथा—

हि० ई० विदातृऱ्>तु० अवे० वावेरँजातराँ, सं० विदातुः।

कर्मवाच्य के प्रत्यय (Middle Endings)

अवेस्ता में केवल प्रथम एवं अन्य पुरुष एक वचन, अन्य पुरुष द्विवचन एवं अन्य पुरुष बहुवचन मिलता है। यथा—

एकवचन

प्रथम पुरुष—अवे-ए प्रत्यय

हि० ई० शुश्रुवइ>अवे० सुस्रुये, तु० सं० शुश्रुवे।

अन्य पुरुष—अवे०-ए प्रत्यय

भारो० देदेइ>हि० ई० देदे>अवे० दइदे़, सं० ददे

बहुवचन

अन्य पुरुष—अवे०-अरे प्रत्यय

हि० ई० चक्र्ऋरइ>अवे० चाख़्रे, सं० चक्रिरे।

द्विवचन—अवे०-आते प्रत्यय

हि० ई० मम्नातइ>अवे० ममनाइते, तु० सं० चक्राते।

लोट् लकार के प्रत्यय (Imperative Endings)

कर्तृवाच्य (Active Endings)

एकवचन

मध्यम पुरुष—अवे० (क) शून्य प्रत्यय

(ख) –दी/दि़ प्रत्यय

(क) भारो० भेरे>हि० ई० भर>अवे० बर, प्रा० फा० बरा, सं० भर, ग्री० फेरे।

(ख) भारो० एज्धि>हि० ई० अज्धि>अवे० ज़्दी, तु० सं० एधि, ग्री० इस्थि भारो० इधि>हि० ई० इधि>गा० अवे० इदी, यंग० अवे० इदि़, सं० इहि, प्रा० फा० इदिय्, ग्री० इथि।

अन्य पुरुष—अवे० तु/तू प्रत्यय; यथा—

हि० ई० अस्तु>अवे० अस्तू, सं० अस्तु, हिट्टा० एस्तु

भारो० एस्तु>हि० ई०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

बहुवचन

अन्य पुरुष—अवे० न्तु/अॅन्तो प्रत्यय ; यथा—

भारो० सेन्तु>हि० ई० सन्तु>गा० अवे० हॉन्तू/हॉन्तो सं० सन्तु, हिट्टा० एसन्तु।

कर्मवाच्य (Middle Endings)

एकवचन

मध्यम पुरुष—अवे-ङ्‌हु प्रत्यय, यथा—

हि० ई० भरस्व>अवे० बरङ्‌हु, सं० भरस्व

अन्य पुरुष (क) अवे०-आम् (am) प्रत्यय

(ख) अवे०-ताम्

(क) हि० ई० ऊचाम्>अवे० ऊचाम् , तु० सं० (वै०) दुहाम्, विदाम्।

(ख) हि० ई० वृज़्यताम्>अवे० वरज़्यताम्, सं० वृज्यताम्, प्रा० फा० वृन्वताम्।

बहुवचन

अन्य पुरुष—अवे० (अॅ) न्ताम्

अवे० ख्र, ओसॅन्ताम्, सं० क्रोशन्ताम्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १५

लुङ्, लिट् और भविष्यत् काल

(AORIST, PERFECT AND FUTURE TENSE)

लुङ् (Aorist) यह दो प्रकार का होता है—

(१) सकारात्मक (Sigmatic)

(२) असकारात्मक (asigmatic)

(१) सकारात्मक लुङ् अवेस्ता में तीन प्रकार का होता है—स्-लुङ्, सो-लुङ् और इस्-लुङ्।

स्-लुङ्

भारो॰ एमेन्स्तो > हि॰ ई॰ अमन्स्त > गा॰ अवे॰ मांस्ता masta), यंग॰ अवे॰ मांस्त (masta), सं॰ अमंस्त।

सो-लुङ्

हि॰ ई॰ मज्धासध्वम > गा॰ अवे॰ मज्दाओङ्होदूम् (mazdåŋhodūm), तु॰ सं॰ अस्पृक्षत्।

इस्-लुङ्

हि॰ ई॰ झ्ःाविशि > अवे॰ ज्ञाविशि(√ज्वा, हि॰ ई॰ झ्वा, (बुलाना)

(२) असकारात्मक लुङ् अवेस्ता में दो प्रकार का मिलता है।

(१) ओ-लुङ् और, (२) मूल (root) लुङ्।

(१) ओ-लुङ्

भारो॰ एभुवेत > हि॰ ई॰ अभुवत् > अवे॰ ब्वत (bvat) तु॰ सं॰ (वै॰) भुवत्।

(२) मूल लुङ् (Root Aorist)

हि॰ ई॰ अश्रउत > गा॰ अवे॰ स्रओता।

लिट् (Perfect)

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारोपीय में लिट् लकार किसी कार्य की पूर्णता को बताता है। साधारणतया इसमें क्रिया का द्वित्व हो जाता है पर कभी-कभी नहीं भी होता है। यथा—भारो० वोइद >अवे० वएद्, तु० सं० वेद, ग्री० ओइद। पर निम्न शब्दों में द्वित्व मिलता है—

अवे० ववच, दादरँस इत्यादि।

भविष्यत् (Future)

हिन्द ईरानी में भविष्य काल में-स्यो प्रत्यय लगता है। अवेस्ता में निम्न उदाहरण हैं

हि० ई० स्रश्ष्यति>अवे० हरँश्येइति, तु० सं स्रक्ष्यति।

हि० ई० वक्ष्यामि>गा० अवे० वक्ष्या, सं० वक्ष्यामि।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १६

कृदन्त

(PARTICIPLE)

अवेस्ता में निम्न कृदन्त मिलते हैं

(१) लट्-लुङ्(लृट्) क-तृं वाच्य के कृदन्त

(२) लिट् कर्तृ वाच्य कृदन्त

(३) लट्-लुङ्-लिट् कर्मवाच्य कृदन्त

(४) लङ् कृदन्त (Past (passive) participle)

(५) लृट् कृदन्त (Future (Passive) Participle)

(१) लट्-लुङ् कर्तृवाच्य कृदन्त

(क) भारो० भेरोन्त् > हि० ई० भरन्त् > अवे० बरन्त, सं० भरन्त ग्रीक० फेरोन्त ।

हि० ई० पान्त् > अबे० पाओन्त् सं० पान्त ।

(ख) लृट् कृदन्त

हि० ई० भूष्यन्त् > अबे० बूश्यन्त, सं० भविष्यन्त्

(२) लिट् कर्तृ वाच्य

भारो० विद्वेस्/विदुस् > हि० ई० विद्वस्/विदुश् > अवे० विद्वह्/विदुश्, सं० विद्वस्/विदुष् ।

(३) लट्-लुङ्-लिट् कर्मवाच्य कृदन्त

लट्—अवे० बरम्न, सं० भरमाण, ग्री० फेरोमेनो ।

अवे० सयन, सं० शयान

अवे० दथान, सं० दधान

लुङ् —अवे० स्रवन, तु० सं० (वै०) दृशान

लिट्—अवे० मम्नान, तु० सं० जज्मान ।

(४) लङ् कृदन्त (Passive)

भारो० क्लुतोस् > हि० ई० श्रुतस् > अवे० स्रुतो (sruto) सं० श्रुतः, ग्री० क्लुतोस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

भारो० म्̥नतोस् > हि० ई० मतस् > अवे० मतो (matō) सं० मत, ग्री० मतोस् ।

हि० ई० पृनस् > अवे पॅरॅन, सं० पूर्णः, ग्री० पोल्लोइ, गाँथ० फुलस् (fulls)

भारो० उक्थो > हि० ई० उक्थ > अवे० उख़द् 'कहा हुआ' तु० सं० उक्थ

भारो सुस्को > हि० ई० सुश्क > अवे० हुश्क, सं० शुष्क

लृट् कृदन्त (Passive)

अवेस्ता में ये रूप कई परप्रत्ययों (Suffixes) से मिलकर बनाते हैं । यथा—

भारो० देर्क्यो > हि० ई० दर्श्य > अवे० दरॅस्य, सं० दर्श्य

हि० ई० कर्य > अवे० कर्य, सं० कार्य ।

हि० ई० वक्त्व > अवे० वख़्ॅद्व, सं० वक्त्व ।

भारो० यगेतो > हि० ई० यजत > अवे० यजत, सं० यजत

भारो० यगोन्तो > हि० ई० यज़न्त > अवे० यज़न्त ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १७

उपसर्ग

(PREPOSTION)

अवेस्ता में निम्न पूर्वसर्गों का प्रयोग होता हैं। अति, अप, अपि, अभि, अभितः, अनु, अन्तर, अव, आ, उप, उपरि, कम्, तरस्च, नि, निर्, पुरा, परः परि, पश्चा, प्र, स्मन्, वि, सचा, सह, सध, सत्रा इत्यादि।

भारो० एति < हि० ई० अति > अवे० अइति, तु० सं० अति, प्रा० फा० अतिय्, ग्री० एति, लै० एत्

भारो० अपो < हि० ई० अप > अवे० अपा/अप, तु० सं० अप प्रा० फा० अप, ग्री अपो०।

भारो० एपि > हि० ई० अपि > अवे० अइपि, तु० सं० अपि प्रा० फा० एपिय् ग्रो० एपि

भारो० मभि > हि० ई० अभि > गा० अवे० अइवी, यंग०

अवे० अवि, अओइ, सं० अभि, ग्री० अम्फि।

हि० ई० अभितस् > अवे० अइवितो, तु० सं० अभितः

भारो० अनु > हि० ई० अनु > यंग अवे० अनु, गा० अवे० ऑअॅआनू, तु० सं० अनु प्रा० फा० अनुव्।

भारो० एन्तेर् < हि० ई० अन्तर् > अवे० अन्तरॅ, तु० सं० अन्तः, प्रा० फा० अ (म्) तर्, लै० इन्तर।

भारो० अवो < हि० ई० अव > अवे० अवा/अव, तु० सं० अव, प्रा० फा० अव।

भारो० ए (e)/ओ (o) > हि० ई० आ > अवे० आ, तु० सं० आ, प्रा० फा० आ।

भारो० उपो > हि० ई० उप > अवे उप/उपा, तु० सं० उप, ग्री० हुपो, गॉथ० उफ्

भारो० उपेरि > हि० ई० उपरि > अवे० उपइरि, सं० उपरि, प्रा० फा० उपरिय्, ग्री० हुपेर्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

हि० ई० काम् >अवे० काम् (kam), तु० सं० कम् (क्रया विशेषण)

हि० ई० तृरश्च > अवे० तरस्च, सं० तिरश्चा ।

भारो० नि > हि० ई० नि >अवे० नि/नी, तु० प्रा० फा० नी०, सं० नि

भारो० निस् > हि० ई० निश् > अवे० निश्/निज्, तु० सं० निष्/निर्/निः

हि० ई० पृरा>अवे० परा, सं० पुरा

भारो० पेरोस् > हि० ई० परस् > अवे० (गा०) परॉ/यंग० परो (parō)

भारो० पेरि > हि० ई० परि>अवे० पइरि, सं० परि, ग्री० पेरि ।

भारो० पोस्क्वे > हि० ई० पश्चा > अवे० पस्च, तु० सं० पश्चा ।

भारो० प्रो>हि० ई० प्र>अवे० फ्रा/फ्र, तु० प्रा० फा० फ्र, सं० प्र, ग्री० प्रो

भारो स्मेद्>हि० ई० स्मद्>अवे० मत, तु० सं० स्मत् ।

भारो वि >हि० ई० वि > अवे० वी/वि, तु० सं० वि, प्रा० फा० वि ।

हि० ई० सचा>अवे० हच/हचा, तु० प्रा० फा० हचा, सं० हचा

हि० ई० सध > गा० अवे० हदा, यंग० अवे० हद्, तु० प्रा० फा० हदा, सं० सह, सध

हि० ई० सत्रा > अवे० हथ्र/हथ्रा, तु० सं० सत्रा

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

अध्याय १८

क्रियाविशेषण

(ADVERB)

अवे० अइन्यो/अन्यो तु० सं० अन्यः
अवे० यिम् = सं० यम्, अवे० चिम् = सं० कम्
अवे० आसु = सं० आशु; अवे० अइन्यत = सं० अन्यत्
अवे० पओइर्याइ = सं० पूर्व्याय; अवे० यह्माइ = सं० यस्मै
अवे० दूरात = सं० दूरात्; अवे० अह्मात् = सं० अस्मात्
अवे० अँरँज्वो = तु० सं० अक्तोः
अवे० अह्मि/अह्माय = सं० अस्मिन्
कुछ क्रियाविशेषण परसर्ग लगकर भी बनते हैं। यथा—

अवे० परो (parō) < हि० ई० पृरस्, सं० पुरः

अवे० अइविती = सं० अभितः
अवे० अथ/अथा = सं० अथ
अवे० कथ/अथा = तु० सं० कथम्
अवे० कुथ्र = सं० कुत्र
अवे० अथ्र < हि० ई० अत्र, सं० अत्र
अवे० इद् < हि० ई० इध, सं० इह
अवे० येइदि < हि० ई० यदि, सं० यदि
अवे० यवत = सं० यावत्
अवे० थ्रिश् < हि० ई० त्रिश्, स० त्रिः
अवे० हकँरॅत < हि० ई० सकृत्, तु० स० सकृत्

निपात (Particles)

अवेस्ता में बहुत से निपात मिलते हैं।
अवे० अ/आ, स० अ/आ
अवे० इ < हि० ई० इ, सं० इ
अवे० इत < हि० ई० इद, तु० सं० इत, तु० लै० इत
अवे० उ० < हि० ई० उ, सं० उ
अवे० उत < हि० ई० उत < भारो० उते, तु० प्रा० फा० उत, सं० उत, ग्री० उते
अवे० च < हि० ई० च, सं० च, प्रा० फा० चा, लै० क्वे
अवे० न < हि० ई० न, सं० न, लै० ने
अवे० नोइत < हि० ई० न-इद् < भारो० ने-इद्, तु० सं० नेत्
अवे० नु < हि० ई० नु < भारो० नु, सं० नु, ग्री० नु, हिट्टा० नु
अवे० मा < हि० ई० मा < भारो० मे (mē); तु० सं० मा, ग्री० मे (mē)
यंग० अवे० वा; गा० अवे० वाॅ < हि० ई० वा; तु० सं० वा लै० वे
अवे० ज़ी < हि० ई० झि; तु० सं० हि।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection

COVER PRINTED BY:
ABW (P) LTD
ALLAHABAD

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu Collection